कर्मविपाक सूत्र

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर
भट्टारकश्री सकलकीर्ति
श्रुतभण्डार ईडर (गुजरात)

१२१

कर्म्मविपाकसूत्र

॥ अपूर्ण ॥

श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर, भट्टारक आचार्य श्री सकलकीर्ती
प्राचीन श्रुत भंडार, ईडर-३८३४३० (सा.कां.) गुजरात
ग्रन्थ परिचय-पत्र

मन्दिर/ग्रन्थ भन्डार का नाम

क्रम संख्या 1349 वेस्टन संख्या 23

ग्रन्थ का नाम कर्म विपाक सूत्र आकार से.मी. 26x12

ग्रन्थकार का नाम पत्र (पृष्ठ) संख्या 965

टीकाकार पंक्ति अक्षर 10x26

प्रतिलिपिकार रचनाकाल

कागज/ताडपत्र कागज प्रतिलिपिकाल

लिपि व भाषा देवं हिन्दी पूर्ण/अपूर्ण अपूर्ण

गध/पध पध स्थिती-जीर्ण/अतिजीर्ण/सामान्य

विषय अध्यात्म

विशेष वितरण बीच-२ के पत्र नहीं है

कर्म विपाक सूत्र. (हुं.

कर्मविपा

॥ ॐ ॥ ॐ नमो सिद्धेभ्यः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ दोहरा ॥ देव निरंजण ने नमुं अल
ख अजर अनिरांम ॥ घट घट अंतर आतमा परम जोति परिणांम ॥ १ ॥ साचदेव
ने नमवे तजी ॥ राज रिध भंडार वनवासि मुनीवर नमुं ॥ जे सुध अणगार ॥ २ ॥
जिणवर वांणीने नमुं ॥ भविक जीव हितकार ॥ जनम मरण ना दुख थकी ॥ छूटे
ति नरधार ॥ ३ ॥ सियलवंत नर नारीने ॥ समकित वरत सहीत ॥ हरष धरि तेहने
नमुं ॥ क्रम शत्रु जे ने जीत ॥ ४ ॥ और हि जग नर नारी जे ॥ पंच इंद्री मुख मोड ॥
१ और न सेते हने भाव सुं ॥ नमु ते दोय कर जोड ॥ ५ ॥ एहना गुण स्तवतां थकां ॥ बाधि
पुन्य भंडार ॥ अलष नीरंजन दरसतां ॥ नां लहि फेर अवतार ॥ ६ ॥ तेहनी गुण
महिमा थकी ॥ मूढ मन न्नयो आणंद ॥ हरषे करम विपाक मे ॥ कीधो नमीजी णंद १
॥ ७ ॥ मुरष कुमत को नही ॥ बुध उपजे लेश ॥ क्रम विपाक करतां थकां ॥ प्रगटी
म

करे। अणबोल्यो रहे॥ तप जप संजम सबरांव हे॥ सूत्र अरथ वांचि परवाण॥
माहो पण विवहारे लीण॥२७॥ आत मरस न चूजो णे रती॥ को पूछे तो कहि हम
यती॥ मेगर मछने चोपग जे हे॥२८॥ पुन्न करम देवा मे वसे॥ अंगमान उतरतो
हसे॥ हवे मनष नो कहूं विचार॥ सहूको जांणो रदे मझार॥३०॥ जीव तणी नीत
जयणा करो॥ साधुजन देषी मन धरो॥ काज अकाज विचारी करे॥ वहु आरंभ
तके परहरे॥३१॥ परकृती नो ली जेहने॥ उतम नर न वि[illegible]के वने॥ अन्न हूंतणो
न विकरि आहार॥ मोन मछर न हिल गार॥३२॥ न्याय नीते बोहरस्य ही॥ सूधे मो
कोनरक रग जाय वही॥ ते नर मनष लहि अवतार॥ पूरण घन तन लहण सुनार॥३३॥
दुःखपोस हवि पसु तणी गत कहूं॥ रातदीवश जूग भोहि लहूं॥ माया मगन रहि दिनरात
है तेहन देया तणीन जांणे वात॥३४॥ लेय लांछ ने मेल छाट॥ अथकु लडीने आपे घाट॥ मु
३ ढो मन माया करे॥ छल चीड़ मंता कतो फरे॥३५॥ ते नर आवे तेरीय मझार॥ जेहने
हरी ऊपरी प्रतीप्यार॥ रूघर कुमार ग अगट करे॥ मारग लोपी मूढ मन धरे॥३६॥

साधु लाचारि शील रहित ॥ विगले डी मेवा खोलेत ॥ नरक तणो ह विश्र धीकार ॥ आप
णही मंन न करो विचार ॥ ३७ ॥ मिथ्याती त माने फेरे ॥ आरंभ करे अपार ॥ सयम
शील वरत को नहि ॥ क्रोध लोभ अपार ॥ ३८ ॥ कांम राग मंन अतीघणो ॥ बलते दीन ने
रात ईतेतणा अवासजीम ॥ अंत स्यथकी निस्तार एहवो मंन मांहि नितवसे
रतपे अघात ॥ ३९ ॥ खोटा देव धरम गुरु ते पर रंग अपार ॥ ते ह कारण हेसा करे ॥ एह
थकी निस्तार ॥ ४० ॥ एहवूं मन मे नितवसे ॥ वलीपुदगल उपर प्रीत ॥ पुत्र कलत्र धन
कारणे ॥ अरु निंद्रा करे अहे नित ॥ ४१ ॥ मूरख मान घणो करे ॥ ऊउपर नहि कोई
कर ने ओ लोक मजस्यो ॥ घणु वण खितोय ॥ ४२ ॥ रात पण भोजन करे ॥ परना
२१ री सुं रंग ॥ अन्नय अथाणो आदरो ॥ करे वरतनो भंग ॥ ४३ ॥ ते नर के बहु दुःख स २१
हि ॥ रहि अनंतो काल ॥ एह बूजो णीपर हरो ॥ पाप तणो जे जाल ॥ ४४ ॥ हिवि
निगोद एक डी तेह तणी कहुं बात ॥ करण त्रण मे लि करी ॥ मदवसणा भसात
प

॥४५॥ क्रोध लोभ माया मनि राग द्वेष अहंकार ॥ छत्रीस तर सेवतां ॥ जाये निगोद मझार ॥४६॥ ए छत्रीस थोमी करी एकेंद्री अवतार ॥ ए भारे जे नर करे ॥ निश्चे तइत र निरधार ॥४७॥ फेरी वसतु श्री षट्म कहि ॥ श्री गुरु करो पसाय ॥ कोय कपूर पत्रे हवे कहि ॥ बीजे बीज हइ थाये ॥४८॥ अस्त्री मे स्त्री अवतरे ॥ पुरषे पुरष जथाये ॥ मूरु मनसो सुन पनो ॥ तम्नो जो गुरु राय ॥४९॥ जो ला सीष्य को भरमीयो ॥ हइये विचा री जोय ॥ जल एक न हि दूसरो ॥ काया न वू नव होये ॥५०॥ नाम गोत न हि जीव को ॥ नहि पुद्गल को पीउ ॥ जात नात पणा को न हि ॥ प्रगर भरम को भेरु ॥५१॥ गो त कुल एणे के कीया ॥ हजी यनो आधोपार ॥ उंछ तके नी चथीया ॥ निच उंच नि रधार ॥५२॥ चोराशी लाष जोनमे ॥ जीव को थी वाशा ॥ सिव कते रा जाण्यीया ॥ राजा ते प ण दाश ॥५३॥ स्त्री कोटी नर के हूया ॥ नर थी नारी होय ॥ एणे दृष्टांते जो एजो ॥ विक लम करजो कोय ॥५४॥ योन योन मे भरकीयो के हतां न आवे पार ॥ त्यां पण दुष के

तोसह्यां॥ कहू सुणजोनरनारी॥५५॥ जीवरआहर्णी धरिते होलीयो अवतार॥जाल
पास्या बहु विधकरी॥करऊ त्योहथीआर॥५६॥ वेलीतो बहूजणालीया॥ग्री
ष्म रतअवाढ॥ निम्नत्तरनाकापूरीयो॥ रोका जलनाधार॥५७॥ तृषात्रणी पसुआ
वीया॥चमकतचूघेवार॥ क्रियाबूतपाड़ेपम्यो॥ केअणीकेधार॥५८॥ तड़फतत
रतजईमिल्या॥ लेइतेआमिषपूर॥ हरषघणो मनमैथस्यो॥ अवलाउपरसूर॥५९॥
गोग करीमनगह्यो॥ हरकेक छनबूऊ॥ पाम्यो पऊ कोढ बहो॥ माथेपड़्योतु
ऊ॥६०॥ नछक छबारा हमे: हरिलायो अवतार॥ एहनो जतन करे: तेहने वहु
संसार॥६१॥ रामकृष्ण अहनिस कहि॥ स्नानदानदेयेपूर॥ करस्यु करावं तवृथा
तेहथी त्रीकमदूर॥६२॥ चौ॰ एमकरतां तबोलीघेर घणाजीवबेर॥ वेलतणीते
२२ रोपीमाल कीधी बाड़िझाकऊमाल॥६३॥ चलको हव्यां नेरेज्यां तेल॥ आणगल २२

वसाया ३२

नी ठेलाठेल॥ पोड्ही कंदुरीने तकमरी॥ तेपण कीधो पाषला करी॥ ६३॥ लोन्नव
खेकू थी थो रेनणी॥ रातदीवस षप कीधी घणी॥ नन्नरुष पेट नवस्तर मेलो॥
रांम नांम ते नवी सांन्नल्यु॥ ६४॥ रुब करचमारां घर गयो॥ आलांचरम मोहि॥
नित रह्यो॥ मारी मांहि अहनिज्ञ परवस्यो॥ कसणी कूंदो नानो कस्यो॥ ६५
॥ सनेपाते जीमवकयो आपार॥ नगणे वेरी बहन लगार॥ धरमतणी नवि जांणे
देहीगरथ नेबांधीधूल मूल॥ ६६॥ छुंदया कुपल ने धावड़ी॥ कुंड मांहि ते बक्कू परचड़ी॥ चकलीगर लोहा
रां जांण॥ घणां जीवनी कीधी हांण॥ ६७॥ अणीधार मे सुधी करी॥ परपीडा चेतन
वधरी॥ अंगारा लोह सुं विपार॥ घणां जीवनो कस्यो संघार॥ ६८॥ दीया तणी मेलो
पीकार॥ तेली घर लीधो अवतार॥ दोणा जीवतणो नहि पार॥ पाल्यां न्नषां मे केई
वार॥ ७०॥ चणा अेकन्नार मापीयो॥ सहस एकड़ा ऊ घाणी पीयो॥ एहनपीले

कूस्येषाय॥ परन्नव दुषीयाते नरथाय॥७१॥ तेहथी त्रीकम दूरे जाय॥ कीरक
कीनाफोलीषाये॥ नील फूलधनेरां सुण॥ नोनीईयिल जोणे कुण॥७२॥ ह
धोबी रंगारो करे॥ तेहांगया मनषत॥ सोंउ पण सुधा थणां रंग पाड्या वकन्तं
त॥७३॥ आणगलजल तुकालीयां॥ मारनस्या मनषेत॥ तोये तृण नवि सांय
मी करम कस्या वक्रन्नांत॥७४॥ छाल कीया गामरी घरे॥ करम कमाया कू
र॥ घर उद्धेरी बेडी या॥ गाणु पून्यनु नीर॥ दवरिके रिकारण करम कमाया
कूर॥ पोष्यो पापी कुटंबको॥ आपस हि दुख जोर॥७५॥ फरत रविणीका घरे
तिहां करो अवतार॥ तहना कर्म तणो हवे केहतन आवि पार॥७६॥ पप वाण
२३ कस्यो बजाजी तणो॥ जूना मोहि मगन क्रू घणो॥ आगर जई अति वोहस्यां नेग॥ २३
ते पणरंगावा मन रंग॥७७॥ पापतणो क्रू वेलीन्नयो॥ मोह मगन मे अहनिश

रहो ॥ कूमकरी द्दरजी सुप्रीत ॥ रात दीवसमे करी अनित ॥ ७५ ॥ उजलवस्त्रपे
हस्यो सोहे ॥ मूड उपर बीजो न हि कोय: बीजलीयां करि तेपरो ॥ हरषीवि
मूषहोयते नरो ॥ ७६ ॥ निरिपेर पापि नीरधार ॥ गांधीघर लीधो अवतार ॥ क
स्यो वणज कगलीतणो ॥ तेलसतेल कस्यो मेघणो ॥ ७७ ॥ वोहस्यां विषवे
चीहरीयाल ॥ हारे वेगे मांकजाल ॥ सोमलसोहगी वांनी बरोरूतेलने
धावडी ॥ ७८ ॥ गंधक सिसरू सूरोषार ॥ घणाजीवनो होय संधार ॥ चोमासि बिषा
रे षपोपरां ॥ नोगतमा षोनिचोतरो ॥ ७९ ॥ नीलफूल कंथुआ अपार ॥ तेहतणे
कुंणकरस्पे सार ॥ चोमासे हरवाणकरि ॥ रातदिवस हस्मामाहिफरे ॥ ८० ॥ ६९
इमहस्ताकेतीकरो ॥ विषयारस्तानेकाज ॥ रातदीवसधषतोर हो ॥ केहतात्राबि
जाज ॥ ८१ ॥ एमघणीपिरे आवहो ॥ बहूपरआव्योबाज ॥ जोन्नवनीको यनविगणे

॥ एणी देवरि केरे काज ॥८६॥ चौपई ॥ धांन तणो मिकस्यो विपार ॥ परमेसर नी
लोपी कार ॥ बोलण वणावी अति वीस्तार ॥ धांन तणा बहु मे व्यापार ॥ ते पण लेई धा व्या
लागत्री ॥ उंपत देषी थयो कंर्षु रसी ॥ पण नेहनो दुषन लहे रती ॥ एकर तब संघलो
कुगती ॥८८॥ कस्या वणज तणदाण तणा ॥ पाखेर हीपीला व्या घणा ॥ सर्वाधां
न जेइ तज के दायो ॥ ते पण नर भ्या लोन्ने वेचीयां ॥८९॥ तेहना पाप तणो नही पार
॥ घणा जीवनो कस्यो संघार ॥ चणा अरद जव अने जो आर ॥ ताते पण वेच्यां सां
केई वार ॥९०॥ उना पाणी मांहि ओरियां ॥ ताते पण घोडा ने दीया ॥ टलवल
तां ते कीया निराधा ॥ सकु कौ निसारि वीआरा ॥९१॥ जात के स्याई ॥ कहि सकु
२४ कोय ॥ कण कस्याई मिह जो होये ॥ वारवार शीष के तु कहु ॥ पाप तणो पार न
वलहु ॥९२॥ एक सेस्था लैने दाल ॥ ते कारण गुंथे बहु जाल ॥ ओर जात नविलो २४
पिकार ॥ एहने टष्ठा नो नहि पार ॥९३॥ सर्व धका सुया लो जाण ॥ एहनो हडी सुप

घरसमांन॥ जालपास्र मनगुथे जोर॥ मुंषमीठेदिलहोयेकठोर॥९४॥ दूहा॥
नांणावरीघर रूगीयो कीधीकरम अपार॥ सोनीसेतीमनर स्यो॥ नवजोणीपर
ग्गार॥९५॥ लोकांनेविस्रवासदई॥ घातकरेमेजोर॥ उतपतदेषीदरषीयो॥ मू
उदलन्तइकठोर॥९६॥ चोमासिचाणोलेई॥ सोधीघातअपार॥ तामेजीवतणा
हवे॥ कीधाघणासंघार॥९७॥ उडीनेचांमेकरी करस्यांआकाज॥ तेहनाकर
मतणोहवे॥ केहताआविलाज॥९८॥ इमअनरथकेताकस्या॥ लोभलेहरमंन काज
जोर॥ न्यूनरनूामंननविगस्यो॥ करेतेओराओर॥९९॥ केपगरण केचाजकां
के कौए मोटोठांम॥ धननषंतांनविगणो॥ जिमतिमराषुंनांम॥१००॥ नोलामे
नसमजेनही॥ करेतेदेषादेष॥ चीठीसाहबउतरी॥ लषोनेपाविलेष॥१०
१॥ जोरहंस्मानांकीजीये॥ तोपूंन्यकीयोदराबार॥ आधिकोकछून लीजीये

तोषरथा बोरे हजार ॥२॥ चौप इमकरतां केहवां णो जैन ॥ षोरा उपर अति ले ली
ए ॥ पोस्या समायक पचषाए ॥ आदर कीधो वारु जाण ॥३॥ आंबलनी बीने
उपवास ॥ बार वरत शीयल उलासा ॥ पूजा करी पपा सां अग ॥ जिनवचन नंनो
कीधो नंग ॥४॥ सूत्र अरथ जे बोला जती ॥ ते माहि नव पाल्यू रती करम वसे डूं
षीयो मे सरी ॥ उनालि गलती मे न्तरी ॥५॥ कीया वरत नाना परकार ॥ कुंनी
तलसी गाय लवार ॥ नवरानें कुं नथापना ॥ लागी हो एक री आतमा ॥
६॥ होम जाग मैं कीधा मे घणा ॥ दोषलीया पर जीवां तणा ॥ तो पण पर मे
स्वर न वंमल्या ॥ जाण तलकोदर मे न्तल्या ॥७॥ तेहने घेसने घोणी नव होय
 मारग ते यां मान हि कोय ॥ जीव सक्त ने जी व्युग मे ॥ हसाये चक्र गत मे न्तमे ॥
॥८॥ दूहा ॥ पोसी दार बागरी ॥ घर लीयो अवतार ॥ परधन लेतो हर २५

ए तिसो त्रिखनी हाण ः करेय संपाको पालीयरीव ॥ निंदर न्हयी जाग्या जीव ॥
१९ ॥ षांऊ रले वलोये सोय ॥ अमरी तेठोले सह्रू कोय ॥ ग्यांने खेत कमारथ घा
ये ॥ लेइ कोया फावनमे जाय ॥ १९ ॥ बोल्ये हंस्मानो छे नलो ॥ अणबोलो नरसा
हमोन्न लो ॥ बेरा आगले आगल बक्रू पिरबको ॥ तेपण कछू नकोने सुणे ॥ २
० ॥ दूहा ॥ दोम बोदा अरिहन्त त्रिक ॥ इ तीने छे एक ॥ मूरुमति जोणेजू जुआ ॥ ग्या
नी रे मन एक ॥ २१ ॥ ए तीने कुगुरु न्हो लख्या ॥ असुर म लेके हाथ ॥ शिव शासन न व
जई सके ॥ बांमणघाले बाघ ॥ २२ ॥ ठोरीया मोरीया ने गारुरीया ॥ अणसो लागो
वोध ॥ वाके घर घेर मागवो ॥ वाके कर वी सुध ॥ २३ ॥ जोय स्रेयां णे चेतसुं
२६ आयणो हयीयुषो ल ॥ मूठ मति बक्रू पर बको ग्यांनी रहि अबोल ॥ २४ ॥ चोपइ
कीयो क्रम सूतारां तणो ॥ उपल घरटी को लोमणो ॥ रिट ढिकुयो पावटस्ट २६
॥ गोंफांकेलू घांणी घोट ॥ १ ॥ हल दंता हल हाथा घणा ॥ कस्या संघार हजीवां तणां

अनेक।घात करमे षातसुं।।गयो भूरु ववेक।। वीर०।२८।।नाह ण धोव
ण पग वली,पांणी न हे पार।।कपडा मेल्यां न वगम्यां।।नव कीयो वेगार।।
वीर०।।२९।।करु करुतो करडा फरो।।न वगणीयो कोय।।उजल होइ नरा ची
यो।एणी निदम सोय।। वीर०।।३०।।मंदर मेडी षातसुं।।कस्या गोष वसेष।।ति
हां बेसीरे जीवडा।।मंन रोष धरेस।।३१।।वीर०।।वडी पण क्रस्ये कस्या।।रोपां मंन को
डा।।पाप गोत बांधर्के।।चाल्यो सव चोड।।वीर०।।३२।।फूल छुटाव्यां छुटीयां,देया
पेहरां आप।।सा ह्वव जब लेषू लहि।।किम करे रा जबाप।।वीर०।।३३।।वंन कांटा
मे षांतसुं।।उजाडी वन वेड।।एकलमल क्रुडी फीस्यो।।न व कीधी जेड।। वीर०
३४।।हू मूरष अति पापीयो।।समझू न हे लेश।।पछतणो स्म मजी करी।।पछे का
इ करेस।। वीर०।।३५।।लोक प्रवा हि हू चल्यो।।करी दषा देष।।एणी भा

यानेकारणे॥ वणस्याम्योवेष॥ वीर०॥३५॥ कपटकरीधनमेलीयु॥ घणोंआवे
बाज॥ बारपूरवधायेपन्थिमे॥ किमसरस्येकाज॥ वीर०॥३६॥ परनेंघा
कीधीघणी॥ करोकुकरमकोड॥ जीनएककिमकहो॥ अनुपातकछोड
क वीर०॥३७॥ वासरनोलामेकीया॥ कीयाथापेणमोह॥ नेलनानेलागातसु॥
करमकेसुदोह॥ वीर०॥३८॥ जोनवरोअधकोलीयो॥ घणोआप्पोघार॥
गामनगरबहुदेषतां॥ मेपाडीवार॥ वीर०॥४०॥ नीलनोईनेघाटकी॥ घांची
मनरंग॥ उबरनिचवोरावीयो॥ पीयोअलंगवलंग॥ वीर०॥४१॥ कीरकसाई
कागदीठगपास्यीदार॥ सोडीपांननाम्बीसां॥ करमकिस्योदोरा॥ वीर०
॥४२॥ घोरीधजनकालीआ॥ पषीधरकीर॥ बागरीनीचवोरावीया॥ पीयां
५२ अणगलनीर॥ वीर०॥४३॥ घोतकरीदहमेणीया॥ कीयोजीवसंघार॥ ५२

दवरीजीन्याकारणे कीया पापअपार ।। वीर० ।। ४४ ।। बेनकाजीव संतापी या ।। कीयो हाल कलोल ।। साजन न्याकूं संतोषीआ ।। नीज ग्रहो हूं बोल ।। ९
वीर० ।। ४५ परपीनजो एनीनहि ।। घणो दाषो जोर ।। अपारीधी कूं पापीयो ।। दुस न्हइहे कठोर ।। वीर० ४६ फूलतुंल्यां पांतेकरी ।। वेनका ग्या मूल ।। वेलवेलू रीबांधती ।। न्वमेल्यो धूल ।। वीर० ।। ४७ हासीगमाजीकरी ।। दृक्षा नहि पार परवशीपफतो जीवका ।। किम सहि सभार ।। वीर० ४८ कुवचणजबोहला की या नवकीधी सुध ।। रासनमनीपेरन्हूकी यो ।। अंगनारी बूध ।। वीर० ४९ पाप करीद्रव्य मेलीया ।। गल्यो लागोगाल ।। अलपदीवशनापोकूं एण ।। पणजाण सकाल ।। वीर० ।। ५० ।। न्हुये न्हारु गोवे नहि ।। कोग्यो सुं नलार ।। सातपांच न्हेलो मली काया कीधी स्वार ।। वीर० ।। ५१ ।। अंतसमे ए हीमल्यू ।। मलीसू छे न्हाग ।। केवनमे शीयालीया ।। कि हुथे काग ।। वीर० ।। ५२ एम देषी घूजनहि

निचुगमार ॥ दोए अंतरनी लाज नी ॥ सही फरीस्यार ॥ ५४ वीर० सोतेनरके
के नमो तेबार अनंत ॥ छेदन भेदन तिहां सिह्यां ॥ केता कहूं मीत ॥ वीर० ५५ ॥
नरके सवा बिहां जनो ॥ पूणापां चे ताप ॥ आगन झलते हो बहुपरे तेसहा
या आप ॥ ५६ वीर० ॥ गिरि जेतोगो लो करे ॥ लोह अती वीशाल ॥ शीत ताप
मे नांखतां ॥ सो गले ततकाल ॥ वीर० ५७ एहवा कष्ट बहु सह्यां ॥ तोहन आ
वी लाज ॥ एणी माया केर कारणे ॥ घणो आव्यो बाज ॥ ५८ वीर० ॥ नो फर
अजी लाजि नहि ॥ बहु आणी वेश ॥ मन षज मारो षाई करी ॥ पछे कोई
करेस्य ॥ वीर० ५९ ईम अनेके भव कह्या तो ते जु गुरु संग ॥ दर्शण देषी
नली यो ॥ ह्यो रंग मे चंग ॥ वीर० ॥ ६० ॥ तव शीष पूछे षांत सुं ॥ गुरु सुं मन
५३ लाय ॥ सुगुरु कुगुरु लक्षण कहो ॥ सुणतां सुष थाय ॥ वीर० ॥ ६१ ॥
सुगुरु वन ऊं सगरस्यो ॥ धरि आतम ध्यान ॥ मस्तक जोण अदवल्लुं ते ५३

हवो देहनो मांन ॥ वीर० ॥१२॥ पाषंडे भोले भूलीने ॥ मृग करे वीस्वास ॥
सूघंई घसे पासे रहि ॥ नव जाये नास ॥ वीर० ॥१३॥ आहेडी दृष्टे पड्यां ॥
मृग दह दिशा जाय ॥ वलषो एण मंन चिंतवे ॥ करे कोइ उपाय ॥ वीर० ॥१४॥
आसी अबुध करि पारधी मंन माया आस ॥ दरीए देषी भूलीयो ॥ मृग
पाम्या पास ॥ वीर० ॥१५॥ रोऊ मृग इम भोलव्या ॥ तेणे कस्यो विसास ॥ सि
हगीयो पाछो फरी ॥ नव पंमीयो पास ॥ वीर० ॥१६॥ तिम कूगरू जग भोलवो
मांही मंन जाल ॥ अंन म्यरने कारणे ॥ केई करे अपाल ॥ वीर० ॥१७॥ सूत्र सि
घांत तेणे लीया ॥ कस्या ग्रंथ अनेक ॥ विषया रस नां योग मां ॥ मांहि दाधां वि
सेष ॥१८॥ वीर० ॥ आडंबर बोहला कीया ॥ चेला बहू थोक ॥ आपि बुंणां नि विसस्यो

बोहल्या बहू लोक ॥ वार० ॥६९॥ पाषंडे जग मोहीयो । सूत्र कूण वांचे । लो
क सवे विटंबीया ॥ कुंण ईपे चा पेखे ॥ वीर० ॥७०॥ जिम मृगला तिम मान
वी ॥ पकापा ज्ञान छूट । सहू नर नारी भोलव्यां ॥ कुंण ई लूटा लूट ॥ वी० ॥७१
॥ असंयमी पूजा घणी । संयमी नहि काज ॥ जिन धर्म थीयो चालणी ॥ फ
रा आव्यो वाज ॥ वीर० ॥७२॥ वाणोल्या सबहू ईरेला ॥ कोके हने न सोहा
य । ते आपण बोहली करे ॥ भवए ले जाय ॥ वीर० ॥७३॥ हे स्वांमी दुःपान का
ल मतां जग मांहि ॥ सुगुरु सो भेटा भई ॥ साता सुष थाय ॥ वीर० ॥७४॥
तारे सके तारे सहू ॥ सुगुरु निरधार ॥ आपे आपने हालतो पहूचे भवने
५४ पार ॥ वार० ॥७५॥ दुहा ॥ एम अनेक भवे बहू भम्यो ॥ हजी न आव्यो पार ॥ हाल ५४

कलोलन्नवपूरीयो नवमांनी जिनकार ।७६। आलोयएान्नाचेकरी न्न
एाश्रेमंन वेराग ॥ सूरकहि साचोसही तेजेन्नेन्नवपार ।७७। स्वांमी
तेह वछनेथकी ॥ मेजांएगीसवेवात ॥ क्रपाकरीमूऊनेकहो । क्रोधत
एगीकेजात ।७८। क्रोधच्यारश्रीजिनकह्या ॥ तेहनासोलपरकार हूवे
न्निः न्नन्निन्न करिनेकहू तेसूएाजो नरनार ।७९। चोपई संजलच्या
रप्रकारहवेत ॥ प्रत्याखांनप एाच्यार कहेत ॥ अप्रत्याखांनच्यारमेन
रंग । अंनतानुबंधीच्यार सुचंग ॥ पाएगीमे रेषाजाएाज्यो ॥ वेलूलीरीते
मांनज्यो ॥ सूकेसरवरतरं गीन्नला ॥ परबतफाटोसुएाज्योकला ॥ ८१ ॥ च्या
रक्रोधनी न्नोलषइः एएो दृष्टांतेजाएगोसही ॥ तेहनीगतलच्छएाकहू

षंतःस्नवीकजीवसुणा जोएकचंत॥ दिक्षालेई गिरकेनररहे॥ केवलग्यां
नदोवलोफेरे॥ उदेहोयेसंजलतेणेस्रमे॥ केवलज्ञान तत्तखिणावमे॥
॥८३॥ घरछोमी मेनस्मंमर करे॥ दीक्षालेवात धमधरि॥ प्रत्याषानन
देजवहोय॥ बारवरतनोधारक सोय॥८४॥ समकित नविआवेस्नही॥
तेहनीगत तीरयंचेकहि॥ अप्रत्याषानी सबहुलन्नस्यो॥ मेनषजन
मतेआफो फस्यो॥८५॥ क्रोधवसे बल सबलोगयुं॥ दानपुन्यतेनिरफल
थीयो तिरयंच मांहि उमहाकरे॥ अंनतानुबंधी आफोफरे॥ ८६॥ करजो
फीबोलेन्नावता॥ आसाढुमारीयेफरता॥ तेकारण आव्यातमपात्रा॥
नरकमांहिथीकरोनीवास॥८७॥ च्यारक्रोधनीयोलेखइ॥ वेवरेकरतो
 चोसेठल्हइ॥ एहवुंजीणी समताकरी॥ एच्यार दूरपररहरो॥८८॥ दोहरा॥

तवन्निाषगरू परतेकहि॥ क्रोधकरिस्यामार॥ उस्याविशम्पारहोसद॥ को
इलगाविकार॥८०॥ कुणकारणहिनाथजी॥ कोई माविमाल॥ केस्रीपर
उक्षुगमे॥ कोइकरवेवोपाल॥८१॥ जोलावछकोन्नरमीयो॥ तूंजांणेमर्म अ
नादिकालनोआवरयो॥ करेतेबोहलोकमी॥८२॥ जनम मरण बोहलोकायो
॥पाचलफेअन्याश्रा॥ तेकारणमेहलेनहि: करतेनितनवावाशा॥८३॥ क्रोधत
णांथांनकघणां॥ उपजेक्रोधविन्नाष॥ तेथांनकमूंउनेकहो॥ सुणतोहरषधरेत्रा
॥८४॥ क्रोधेक्रोधजउपजे: मांनेक्रोधजहोए॥ मायालोभ्रथकीजके: पंचेडीर
सहोय॥८५॥ वीजोपणथांनकघणां॥ उतपतक्रोधअनेक॥ परवस्तजीवक
हाकरे॥ षोएवितअवीवेक॥८६॥ कांमेक्रोधघणोवदि॥ जिमइन्धनिआग॥
करमसवलजीतेनहि॥ नवलोनलहिमाग॥८७॥ आपसगतजोफेरवे॥ करे
करमचकचूर॥ कांमक्रोधसववालिके॥ पोहचेअल हजूर॥८८॥ चोपई

परस्नवन
श्रुकृतम
तेसाये।

क्रोधवसेबङु लागे आग॥ उगरवानवदीसे भाग॥ मायाये तनथोएसही
॥एवात परमसरे कही॥४॥ मांनथकीधछहरे सही॥ लोभथकीसवजायेव
हि॥ लोकसकु कोनंद्याकरे॥ अपकीरती दकु दिशविस्तरे॥५॥ जाकेजी
भ्यावासन होय॥ नर नारी सुरवनलहिकोए॥ पंचेद्री जेहनेवरूपहोय
॥६॥ क्रोधेपून्य सवेबलीजाये॥ क्रोधे लछमीनो ख्य थाये॥ सजन्र
गयो संघलो परदेश॥ सुषछोगी मकू बालीवेश॥१॥ वए अगंन अगीछो
बले॥ करक दकु देशो देहू क्रोधेमले॥ कामकाज सवनरफलथाए॥ दुख
अनेक तसक द्योनजाये॥२॥ देयानदी सेनामेरती॥ निरसपएपङुचेकु
गति॥ अनुष्ट क्रिया सबुजायेदूर॥ क्रोधेकरमकमायो कूर॥३॥ क्रोधेपरके
५६ रारी लेइ॥ क्रोधे पएगले पासीदेये॥ गलेचरीनेफासे हाथ॥ क्रोधवसेको ५६

एघालेबाघ ॥४॥ हईयां कूटे करोधे करी ॥ कूलसाहमू नवजोएफ
री ॥ माथा कूटे त्रोडे वाल ॥ बलीनवा कोया करे अपाल ॥५॥ विषषाये
तरूस्ये करी ॥ नरकविषेतजाये मरी ॥ उंपापात करे नरनार ॥ किमेनपा
मेन्नवनोपार ॥६॥ जलमांहि बुडीजीवगमे । अणोकालनरनारीन्नमे । वली
अगनमे ब्ल्यायेराष । क्रोधी अंतषाय कीषाष ॥७॥ क्रोधेअटणकरे अदेत्रा
सुषनोपामेन्यालवलेस ॥ क्रोधेअमरतन्नोजनतजे ॥ क्रोधेकेदीहरने
न्नजे ॥८॥ क्रोधेकणनेकूकश करे ॥ क्रोधपूरो पेटनन्नरे ॥ देयसराप कोया
नूलथई ॥ अगनसमान आतमान्नई ॥९॥ क्रोधेवसे पगपरघरधरे ॥ ज
ई दीवाणे चाडीकरे ॥ क्रोधेपूरष तजे घरनार ॥ नवि जाणे वलीपरनीसा
र ॥१०॥ तैंजेपूरष नव करे वीचार ॥ परपुरषां पूठे घरनार ॥ क्रोधेराजगमा

वेराय॥ कांमी उचनीचघरजाय॥११॥ क्रोधे पुत्र पिता नहणे॥ क्रोधे प्रीतापु
त्र ने विगणे॥ क्रोधे बंधव वेरी होय॥ वेहन नाणेजन वकोए॥१२॥ क्रोधे वल
पण लगुपणगणे॥ साम्रवउ उन्नांन विवणे॥ नजरे देषत जाये बली। हेजे
कदान वेस्नेमली॥१३॥ सगाति केवेरी होय फरे॥ ताघर कदिन भोजन करि
पणा ॥ रांधणें क्रोधे नवगमे॥ वासि को हां आसण जमे॥१४॥ न्नटक न्नटकरे दी
नरात दियातणी नवजांणे वात॥ निजे तन पर सवे करी। तालीपट के क्रो
धे करी॥१५॥ क्रोधे लाललन्नई तव आंष॥ अंनपांन ते वोहला नांष॥ अनो
धरी क्रोधे अपवात॥ छोडी ठांम करे के अवात्र॥१६॥ पूरव कोड करे तप व
ली बली दोय में जाय बली॥ माहादुष्ट ए क्रोध जकह्यो॥ वेदपुराणे कारणे
५७ लह्यो॥१७॥ क्रोध करम कमावे कूर॥ धरम तणो ते जाये न्नर। घणो काल ते क्रो ५७

धेर कल्पो ।चिह्नगत माहि बहू ऊलफल्यो ॥१८॥ घणा जतन करीश
घूंता स ॥पापी क्रोधन छोडे पास ॥बले करे घरमे पर वेश ॥एणध्या
नयाण सूझे लेश ॥१९॥ क्रोधे सोमत गई परदेश ॥ वेग कुमत करे पर
वेश ~~एणभीनअसाणनसूझेलेश~~ ।दान पुन्य न व क्रोध ध्याये ॥ क्रोधे जे
बोलेत वाट ।२०। क्रोधे जे हो मले ते थाए ॥ धरम ध्यान ते केमन थाय ॥
अति क्रोधे काम व धूं जोर ॥ क्रोधे उघ करे अती घोर ॥२१॥ आरत रौद्र क्रोधे
थी होय ।संगो सणी जो नगणे कोए ॥ क्रोधे न व माने कोए कार ॥ क्रो
धे बोहली करे पोकार ॥२२॥ ऊफ बोल से नारे कोए ।राफ वे फत शा बो
हली होय ॥दूघ संघ लोते बेदो घेर ॥ घणा जीव बसाये वेर ॥२३॥ क्रोधे
साजन जाये दूर ।दलिद्र पण घर आविपूर ।क्रोधे कदीन शायलो होए

५८ गुरुनाबोलनगणेकोए॥२४॥ वचन बाण लागे साधूनां षपे कर
मकेईवरसांन॥पापीक्रोधनमांनेरती:नरनारीनीहस्येकूगति॥
२५॥नितइतीरनिगोदिवास॥सूगततणो होएपणनाश॥जलचरथ
लचरअंगनवनसही॥पुरणदुषपरमेसरकई॥२६॥छेदनभेदनक्रोधे
सहि॥ कुंभीमेदुषबोहल्योलहि॥नरकतणांदूषपाछेकह्या॥एहवां
केवारमेसह्यां॥२७॥तोपणमूरुनेसांननवीवशी॥क्रोधकूकरनीपारेन
वी॥आंतरजांमिमूरुनेतार॥क्रोधलोभमूरुथकीनिवार॥२८॥दोहरा॥
॥जीभएककुकिमकहू॥अवगणकेहानजाये॥जिमजिमहलूयक्रुकरु
तिमतिमभारेथाये॥२९॥रातदीवसबलतोरहि॥सीयलोकदेनथाये॥को
बोलेहेतुयोथइ॥तेमूरुमननसोहोय॥३०॥कुणउपायकेवेदकरु॥केण ५८

वीध थाय दुर ॥ जिम जिम कूजार ण न्हयो ॥ तिम तिम क्रोध अ पूर ॥ ३१ ॥ चौ
पई ॥ एणथी मन वजमा रोजाय ॥ धरम धांनते निरफल थाय ॥ एणथी
होये कालो कूबड़ो ॥ चहुं हेरा ने मुख बोबड़ो ॥ ३२ ॥ एणथी निरधनने नीरांन्न ॥
रोगनो चोफेर नेहनो पाशो ॥ क्रोधे टुंटा ने वांमणो ॥ अंगहीणने द्रेयामणो ॥
३३ ॥ एणथी नारी वीधवा होय ॥ पुरख तके न वपरणो कोय ॥ एणथी नरनारी
होय दास ॥ कुगतमांहि ते करेवास ॥ ३४ ॥ एह वोजांणी छोयला रहो ॥ जीवदे
या धरम हईड़े धरो ॥ धरमतणी माता छे द्रया ॥ एहलोके स्वर्ग करस्ये मया ॥
३५ ॥ धरमे रूप रिध संपजे ॥ धरमे रोग सोग नवि नजे ॥ धरमे धरणी होय
सुजांण ॥ बेटो बोले अमरवाण ॥ ३६ ॥ धरमे दुरजण आवी मले ॥ भूत प्रेत कदी
नव चले ॥ देवलोक शिवपूर अवतार ॥ धरमे आयु वधि निरधार ॥ ३७ ॥ दोहा

॥ धरम थकी शिव संपजे ॥ विसण नं गजे कोए ॥ रूप अनोपम
धरम थी धरम दोलत होय ॥३८॥ क्रोध फल फल ए कह्या ॥ पाप अ
धो दुख जाण ॥ वार२ के तु कहूं रे न्नो लोक हुं मान ॥३९॥ जाणी को विक
लप करे ॥ कस्तु को धुन व होय ॥ काहे मन को फेरवे ॥ लच्छु न मरे कोय ॥४०॥
अलप न्नेद क्रोध हतणो ॥ कहो अगर समझाय ॥ अब लेखा वरण न करु ॥
सुणो चतूर मन लाय ॥४१॥ चौपै ॥ वह पूरष चाल्या परदेस ॥ धाका तरू यर
बेठा हे व ॥ षुंदा वसे थी यो अलम णो ॥ फल देषी बोले ते सुणो ॥४२॥ उल्लू
लो एक बोले आप ॥ एक कहे षांधे छू काम ॥ एक कहि डालो करु ॥ परां ॥
एक कहि डूंब कल्यो अरां ॥४३॥ एक कहि पाको षाईये ॥ न्हू ये पको छे ते ली
५९ जीये ॥ एह न्नाव ते हईडे स हि ॥ तेहने ते हवी लेख्या कहि ॥४४॥ शिष बोल्यो ५९

हइमेगोइ गही ॥ श्री गुरु प्रते पूछे सही ॥ जइ नर ने लेस्या केवाय ॥
कुण नरते लक्षण उलषाये ॥४५॥ तव गुरु बोले वचन रसाल ॥
सुण जो सहू को बाल गोपाल ॥ रोसवसे रातो थाये ॥ क्रोधी कलेश क
रे मन माय ॥४६॥ कर्कवछन कातरणी समान ॥ राग द्वेष अंतर नहि सांन
वेर वधे दया नहि होय ॥ लेश्या काली ते नर सोए ॥४७॥ दोहा ॥ कृष्ण लेसा
लक्षण कह्यो ॥ सुणो चतुर मन लाय ॥ अब गुण नीली लेश्यानो
तेके हसु मन लाये ॥४८॥ चोपे ॥ धरम करतां आलस करे ॥ सूत्र अरथ
नव हयरु धरे ॥ स्त्री सुं मगन रहे दिनरात ॥ कामवशे नवजोए जात ॥
४९ ॥ मानवसे मनमद सुं न्हस्यो ॥ अमे परच मोटको करो ; हइया मांहि
कातरणी फेरे ॥ अमे कस्यो छो पण एनव करे ॥५०॥ ते नर लेश्या नीली

न्नस्यो ॥ पापपंथ मे ते परवस्यो ॥ बांधघ की विनारे जेह ॥ नरनारी लक्षण
छे एह ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ नीली लेश्या मे कही अंतरगत नीवात ॥ आपणा मं
न पेह चांणजो ॥ मत कर जो कोई तात ॥ ५२ ॥ चौ ॥ हवि कापोत लेश्या कर
वषांण ॥ न्नोन्नवी यण मत धरजो कांण ॥ रात दीवस सो क्यो देषाय ॥
रूगे रूगे तेन जणाय ॥ ५३ ॥ परने द्या मूष नीत ओचरे ॥ ए नर धरम कदे
न व करे ॥ पर धंन देषी हइमे बले ॥ धरम करां छां पण न व फले ॥ ५४ ॥ रा
न वेन बलगाग करे ॥ पलवि ध्रोवलि मांहि फरे ॥ मांगी मरण वे चातले
से ॥ राज दीवांणे कछू एन देये ॥ ५५ ॥ अे ल घर वरो घणो पण होय ॥ आ
यपद तणो उपाय न को ए ॥ सांसा वृंत नित दीसे सही ॥ ए कापोत सि
६० धाते कही ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ ए कापोत हमे कही ॥ जेसी कहि जिणंद ॥ एह ६०

ग्रथ करतां थको ॥ मूरु मंन न्नयो आणंद ॥ ५७ ॥ चौपे ॥ जेनवचन
अरथे ले लीण ॥ ना हो दे यामोहि अवीण ॥ काज आकाज मनक
रे वीचार ॥ लाजन आलन्न न जाणेसार ॥ ५८ ॥ धरमध्यान मोहि मंन रमे
साधुसंगत झाझी गमे ॥ गुण देषते वी स्तुत करे ॥ अवगुण जाणे ते परस
रे ॥ ५९ ॥ लेस्या पीत लक्षण ए लक्ष ॥ जीन्नए कहुं केतु कक्ष ॥ जेसी मत ति
सी गत कहि ॥ सूत्र सीधांत थकी में लही ॥ ६० ॥ दोहा ॥ पीत लेस्या ए पारषो
चतुर सुणो मंन षंत ॥ अव पदम लेस्या तणो केहसु ते वरतंत ॥ ६१ ॥
चोपेइ ॥ लेस्या पदम तणो विरतंत ॥ न्नवीक जीव सुण ज्यो मंन षंत ॥
क्षमा वंत ॥ सीतलसुं गुण जात ॥ हस्यो विसम्यो रहि दंन रात ॥ ६२ ॥
सगत स्यागम नन करे वीचार ॥ पचड़ी मेंन रुधे द्वार ॥ आतम देवरुप

रवरे ॥ क्रोध लोभ टाली सोच जु करे ॥ ६३ ॥ आणंद मे नीत्रा दिन ने रामे,
अगम अगोचर मे मन रमे ॥ धंन ध्यान तिके कारमु ॥ एह सकु जोणो सोयु
णा समू ॥ ६४ ॥ दोहा एह लेश्या उतम कही सरगणो छे माग । अब छठी ले त
श्या सुणो करे ते पर नो त्याग ॥ ६५ ॥ चोपे हवे सुकल लेश्या मन वसी । ते क
हसो हइडे उलसी ॥ सकु एलोक पर का जे लीणा ॥ आतम मे करे परवीणा ॥ ६ कांम
६ ॥ रात दीवस ने दे आतमा । पर ना दोष न लहे ये माहातमा ॥ सोक संताप
न करे लगार ॥ राग द्वेष महा पुदगल छार ॥ ६७ ॥ पूत्र कलत्र धन नहि माहरो
दोहरा का लकूट विष जोणो परो ॥ अंतरजामी सुं लेलीणा ॥ शिव पेमी जोणो परवी
णा ॥ ६८ ॥ ४ ॥ उतम लेश्या एक ही । चतुर सुणो मन लाय ॥ जोत मे तम मलर
६१ हे बीजी गत न वजोय ॥ ६९ ॥ चोपेश लेश्या सुकल लछण जोय ॥ उतम नर ६१

ते एहवा होय ॥ शिष पूछे गुरु मंन उलास ॥ कुण गत कुण लेस्यानो वा
स ॥७०॥ काली लेस्या नर के जाय ॥ पांचे थावर नील कहाय ॥ कापोत
ह तीरीयचे जमे ॥ पीली मानव जव मेरमे ॥७१॥ पदम देवलोक अवतार ॥
सुकल मुगत पोहछे नरधार ॥ एहवात परमेस्वर कही ॥ उतम नर स्त्री
हईज गही ॥७२॥ दोहा ॥ षट लेस्या लछण कह्या ॥ जांणो हृदे मझार
आपआपणा मनथकी ॥ करजो सहु वीचार ॥७३॥ दिल षोलीने चितवो
मन हु करो वीचार ॥ बीज तस्यो फल नीपजे ॥ पोत ही रंग नीरधार ॥७४॥ चौ
वलतो शीष हरषीमे हसी ॥ एहवात मुझ मन मे वसी ॥ दुरलेस्या जे नर मे हो
ए ॥ क्रोध सहित नर नारी सोए ॥७५॥ तेआगे केतू सूषलहि ॥ गुरु वलतो
समझावी कहि ॥ मोह मगन मोहि अहिनीसरहि ॥ मधकबेध सूषते नर ल
हि ॥७६॥ वलतु शिष [illegible] दोए जोडी हाथ ॥ मधकबीधनी पूछी वात ॥ अरबी

गज ते

कोनर न्हजोपन्यो ॥ ~~न्हमतें~~ देषी वेउ लेचल्यो ॥७७॥ वनहेवलइह न्हस्यो अ
थाग ॥ नीसरेहे वा नवदीठो माग ॥ अजगर बे मुष फाडीरह्या ॥ च्यार सरप
चिहुं पासिरह्या ॥७८॥ उपर जाळुं नमरां तणु ॥ जोतां दीठो बीहामणो ए
कमाले बेठीरहे ॥ छीतो साहवानो केफेच ॥७९॥ तेणेसमे गजबिहामणो
साही वडधिओल्यो घणो ॥ गिरी पड्यो तिहां अही [illegible] लता ॥ न्हमरा तेहां आव्या
गुंजता ॥८०॥ मुंहा कवेते कापेमुल ॥ चउका चटक न्हइ अति हल ॥ माहाक
ष्ट सहि अग्यांन ॥ पूरव पाप तणो फलजोण ॥८१॥ तेणेसमे रथ वेताई त्रा ॥ पा
रवती विनवे जगीन्हा ॥ एह पुरषनु स्यारु कांम ॥ माहादेव तव बोल्या ताम
॥८२॥ सुण पारवती शंकर वाण ॥ न्हलीनरथई का अंजाण ॥ मोह मद्य एणे
६२ पाधोयणो ॥ वछेन नमाने सहगुरु तणु ॥८३॥ तवपारवती दोए कर जोड ॥ ६२

स्वांमी ए संकट थी चोरु ॥ घणो हठ करजो छे नार ॥ अंतत एपूरू टेनीरधार
॥८४॥ माहारू धर मन सुंचा करी ॥ कोनवी जाये स्त्री थी तरी ॥ वलषाणी त
नबोलीनार ॥ स्वांमी कृनवी आवुंलार ॥८५॥ त्रीलोचनाम्रूष ऋेहवूं कहि
स्त्रीनो चरीत्र कोनवी लहि ॥ नवरां कर समझावीनार ॥ रथथन्यो त
वलाइवार ॥८६॥ आव्यो बेसो मेनत ह्मारा ॥ तुरुने पूह चाकु केलाश
मधकटिपजो आबेवली ॥ रहो टूक मूरुपरोरली ॥ माहादेवू मं नवलषा
थीया ॥ रथवाली अफूटागीयो ॥८७॥ स्त्रीन्रु वचन गहे नर जेह ॥ निहस्पे
षरावगुता नेह ॥ कोटीधजते नीरधनकीध अपजसते सघलो घर लीध
॥८८॥ ईंद्रासणाथी पाम्यो न्रेपते पणपाम्या केइवंद ॥ सोलसहस गो
पीघरनार ॥ तोपण हरि रषमणीनार ॥८९॥ हाय हाय एमोटो वंक । देवा हि

ईंद्र

ह्री
मे चम्पोकलंक॥ तपकरतां केई मुनिवर चल्या॥ एणी संगतथी बहु घूल
मल्या॥९०॥ कू पण ध्यांन थकी चूकव्यो॥ किकर होई तुरु आगल लव्यो
ना चो तूरु आगे हू वदी। वचन बाण मूरु लागां तदी॥९१॥ लोके वात क
री छे नवी॥ जलधारी पाश्रोतो हवी॥ स्त्री थकी नव चूरे काय॥ तूरुने चोहूत
वस्तुष होय॥९२॥ दोहा मूज भोजनके छल्या। दश सिर की धां दुर॥ जरासे
घ जो घातके। भोजगीया चकचूर॥९३॥ कायोल राय विरंबीया॥ पंडित
मस्तक मूह॥ स्त्री नि संगत जे लगा तेजीवत पणीया कुरु॥९४॥ चोपाई सान्न
ल वसत तरुने कहू वात॥ ममता मगन रहि दीन रात्त। जि नर एणी पिर स्त्री
कर सहि॥९५॥ चोरासी लक्ष अटवी कहि॥ मिथ्यामत नर न्हूलो सही॥
जो मण मरण तणा दुह होई॥ च्यार क्रोध ते वसीयर सोई॥९६॥ नारी
तेहना आंहा आगनि काढे

ने

तीरीयजके अजगरा॥ दोयपाष उदर भरण गयवरा॥ आयुषवरु
वाई जाए॥ विसयारस्यें भ्रमरासमान॥९८॥ रोग सोकने विरह
विजोग॥ भोगसंयोग चारका लोक॥ धरम रथगुरु नें कर जाए॥
तृष्णारिछ चित छित वषांण॥९९॥ बालक तुरणी आशा फले॥ का
ले सैलेहीने झाल्यो गले॥ हायर मे घोटो करयो॥ धन लेई मे धरती मांहि
जो धरयो॥१०००॥ एकवार उवूवली तो कृ धरम करु मे नरली॥ एम करतां वी
चाथी रह्यो॥ फर पाछो अंधारो भयो॥१॥ आप काज जेउ द्यम करि॥ ते
सुषे भव सागर तरि॥ परनो काज करि पर वीझ॥ ति नर रह्या कनारु वी
न्ना॥२॥ मोह मगन मेरह्या निशानरा॥ पसु समाण जाणो षरा॥ तेहने ध
रम अपूरो होय॥ चिहूं गत भरकां मारि सोए॥३॥ दयादांन तन वग मे

कुगतीमांहि सहीते नर न्हमे। एमजांणीने ममतातजो॥ हुकम नाथई हर २
नेन्नजो॥४॥ दोहरा॥ आपकाज उद्यमकरे॥ तेनर वला कोए॥ परकाजे
राताजके॥ तेनर बोहलाहोइ॥५॥ एमओडा केतां कहू॥ हुजीनहि तूंनेला
ज॥ रे अपारधीजीवहू॥ कांवए साठे काज॥६॥ वात विमासी तेघणी॥
मान उदरमंझार॥ पणतेहवात सवतेहांरही॥ एमकीम परेशआत्ता॥७॥
वारपठेवहू॥ पूरवतूं पश्चिम दोरुत॥ इन्द्री वश ते नरपग्या॥ केणी विधका
जसरंत॥८॥ हुसामे नर मगनजे परजीवां परपाल॥ कामक्रोध जेहमे घणो
ताको कुंण हवाल॥९॥ तवशीष मन मे हरषीयो॥ श्रीगुरु संदेह अपार॥
६४ परजीवांने दुख दये तेहनो कुंण वीचार॥१०॥ तरण चरे वनमें रहे॥ एकल
डो निरधार॥ नृप तरस बहु विंवतां॥ नापहाठ अपार॥११॥ घातदेये नववा ६४

रलेइ।नदेयेकेहनेगाल॥ विनाअपराधतेहनेहणे॥ताकोकुणहवाल॥
॥१२॥गुरुवलतोमनजेह गेहा॥शिषसुंकहिवीचार॥जेजेहवूं नरस्त्रीक
रे तेन्नोगतेनरधार॥१३॥ मछकछ वाराहमे॥हरीलीयाअवतार॥तेहह
णीन्न हणकरे॥ कूगतलहेनरधार॥१४॥चोपइ॥ अरजण कांइपसुनेहणी
रोमएकनीसेरवासुणो॥स्नहस्नवरस्नजोजगदुख सहे॥ चेदसूरलग
तेनेहोरहि॥१५॥होमजागवलीएकादशीःतीरथस्नानननेवलीचांदणी॥अ
रजण जेनर आमिषषाए॥ तेहनोपून्य तेनिरफल थाय॥१६॥ छोतेसमरण
सुधनहोय॥ छोतेबूरोकहि सहू कोए॥एकाकारतेछोतेहोय॥हिदूतर
ककहि सहूकोय॥१७॥ स्नांनकरीनेसमरण करे॥ आन्नु छोतेपरजेन्न
रे॥ नोलामन ननव समझेरती॥एकरतव संघलां कूगती॥१८॥तीनव

रष्यउपरजेवरी ॥ वेदेअजाकहितेषरी ॥ धरमतणोनवीजांणोमूल ॥ हणी
जीवजलमेस्योधूल ॥ १९ ॥ एहवेचनसत्यमानज्यो ॥ माहापुराणमाहिजं
णज्यो ॥ एहवोजांणीपालेजके ॥ मेनषजनमअजुआलेतके ॥ २० ॥ दो
हा ॥ जेजगमांहिदुखअछे ॥ नरकनिगोदमझार ॥ थावरमेदुखतेस
हि ॥ जेबहूनांषेवार ॥ २१ ॥ जलचरपंषीमेजको ॥ भूजउरपतमझार ॥ चो
पगमेदुखतेसहि ॥ जेकरेदेहीसुप्यार ॥ २२ ॥ चोपई ॥ तवत्रीषबोल्योमं
नउलास ॥ सुंणोहमारीएकअरदास ॥ स्वांमीअसुबोल्योतमे ॥ पुदग
लउतमजांणपाअमे ॥ २३ ॥ नीरमनिरपंषाजोअंग ॥ आचावस्त्रपेहस्याअंग
विषवीनूषणअतिसानंत ॥ केसरनीलककरो मेनषंत ॥ २४ ॥ रूपअनोपम
मोडाघाट ॥ स्वांमीतेनेधोसामाट ॥ नरनारीदेवअनोप ॥ एसहूराचेउतम
नें

दे ते

६५ ६५

रूप ॥२४॥ आजे पण सकल आप आपणो ॥ राचे रूप न ले सकल वणो ॥ रूपह
ण अस्त्री पर वर ॥ तेहेनी सकल मली हास्मी करि ॥२५॥ उजल होय करि स्नाणगा
र मनमे हरष धरे बहू प्यार ॥ फूल्यो फरे घर पाउ न धरे कुल मे चोषन्न
ली पेर करे ॥२६॥ पंचांमे आदर अति घणो ॥ राज दा वाणो सोन्ना मे वणो ॥
मेले तन वस्त्र रकोर हे ॥ नेहने परोर ॥ सकल को कहि ॥२७॥ उतम मध्यम समक
रल हो ॥ स्वांमी वात विमास्यी कहो ॥ बलतो गुरु बोले वक्र नेत ॥ सोन्नल
वछ तु पयई एकचंत ॥२८॥ दोहा ॥ ए दु समन छे जीवनो ॥ लूट लीयो सकल
माल ॥ एणथी चक्र गत मे न्नमे ॥ एणथी होए हवाल ॥३०॥ षाटां षारां चर
परां तीषां मधक रां जेह ॥ याकी संगत जे लगा ॥ षरा वगूता तेह ॥३१॥ जिम जिम
तन सोन्ना करि ॥ तिम तिम फूले आय ॥ कागद कूर जमेरे ग्रे ह्यो ॥ तूंकि

णीविध करे स्त्र जबाप ॥३२॥ चौपई देही अचित न जो णी घरी ॥ जोणे
रा ह्न रा नी छे पूरी ॥ अंध गोप अंधारी जेसी ॥ गफा कन्द परबत नी तेसी
३३॥ कोमी तणो न आवे मूल ॥ जेसो आकृ तणो छे फूल ॥ मोह तणी क
रुना ली घरी ॥ मल मोत्र नी कोठी न्नरी ॥३४॥ रगत तणा दोनी माहा ठेर ॥ चां
बकु पण विघूचि कू फिर ॥ मेल तणी मूर तमाप ची ॥ मस्या ण माहि दो
ये रा पञ्ची ॥३६॥ रग तत णा नरिया छे कून ॥ केश तणा दोये माहाऊं
न ॥ हाड तणा दोये ते हो गन ॥ मांस तणा लेंदा था पना ॥३७॥ शुक्र तणी
यरु री वहि ॥ मेद मेद चकु पाये राहि ॥ पर न्नूषण मेली जो लष ॥ जाणे कूउ
च नो रुब घु ॥३८॥ केश विना दीये रुन मूंक ॥ दांत विना बोखू जिम न्नूक ॥ हा
६६ थ विना मस्य को न्नरी ॥ रूप विना नृष तेज न करी ॥३९॥ मांस विना शोन्न जेसो ॥ ६६
जो

जी

करंकंरुर वमे दीसे ज्योर के॥ अशुच वस्त्र दो लि धारि॥ तिम थिपंजर
सोन्ना करि॥४०॥ दोहा जिम फागुण नी एकमें अशुच आचुषणपंरे॥
रासन नुपर नर चमीफरे तेप्यार प्यार॥४१॥ रासन लेरु कंपमे॥ वाल
तणी गलेमाल॥ काजल चुने चितस्यु॥ मूरख जपे जंजाल॥४२॥ वण गुफा
के ऊंपरु॥ ददा मलि दंषंत॥ ज्यूं ज्यूं मूरख रूयल वे॥ त्यों त्यों तेजोन्नंत
॥४३॥ तिम अशुचन पूदगल मली॥ तव पंजर रोमंग॥ हाडकेरा सो नाल
हे। एछे नरमनो नंग॥४४॥ चौपई॥ नव नालां नें वहि असार। तेमांहि
दूरगंध नो नहि पार। नली वस्त जे नाके पके॥ महा अशुच थई नें ऊके
॥४५॥ जिम जिम कस्ति करि कार चारि। कोए वंतरो गालो करे॥ कब
ही वायनी काय्ये बक्क॥ नाक मरोडीने वेसक्क॥४६॥ पंच कोडने असे वली

ष:नवाणो सहस्र जिन नाथ ॥ पंचसे चोरासी लख्या ॥ रोग एता जिन
वर कख्या ॥४७॥ नष शिषमे एपूरण नख्या ॥ ग्यांन वंत नर लेष कख्या
को एक रोग नो होय उ कास ॥ एक दोए एहो आवे पास ॥४८॥ के
रा पाप जीव नर के जाय ॥ सूरव रोग ते हां दोला थाए ॥ करम करी नर से
नारी जेह ॥ को भूगवे नव छूटे तेह ॥४९॥ दोहा ॥ कोए मकूनके करब
र कू चमो ॥ अथुवावे अपार ॥ लेई माल अटवी मख्यो ॥ ता को कुंएए हवा
ल ॥५०॥ र एवाले घन सव हस्यो ॥ वेरी जीयो तन लेइ ॥ ताकेरए हसा
केरे ॥ दुःखे भव लेसी तेह ॥५१॥ चौपइ ॥ केई वरस नी चादर जेसी ॥ फू
स पूराणी जोग्णो तसी ॥ कागद ज्यो पांणी मांहि होय ॥ समुद नीर नव
६७ वी वे कोय ॥५२॥ हुस्या करतां होय वेषूसाल ॥ पर जीवां उपर ज्यो पाल ६७

ज्यो ज्यो कायावंनमे जाये॥ त्यो त्यो सब धजे बनराय॥५३॥ वंनका
जीव होय न्हेय न्हीत॥ एकल मल रनमे मलपंत॥ उनामे जेसा हो
यआग॥ तेसो देह तणो छे लाग॥५४॥ दोहा॥ इंद्री धनुष अकास ज्युं
करे दुधवण श्रोत॥ ज्युं कोजीरा बुधसो वैर मुंए बण न्रोत॥५५॥
फ्ल बअणी जलबिंदु सो॥ ज्यो कायररी बांह। ज्युं संज्यारी वांनकी सो
बादलरी छांह॥५६॥ ज्यो कुंजर रो कांनको॥ लवणी बीनो सफाक॥ ला
क चंचलता ज्यो ल ला॥ पीहर वक्रन जीक॥५७॥ उरही जग जेता जके। को
लमे वस्त असार॥ वगरु तो वारनो लाग न्ही॥ सही पूदगल एछार॥५
८॥ तिम देही छे कारमी॥ सरव जीवनी जांण॥ ता करण तूऊने कहूं तू
चिते कांइ नअजांण॥५९॥ चौपै॥ जब लग न्हि तर जागे रोम॥ तब लग सने

हे करे सक्त नाम ॥ हंसा चल्यो छोमी सरपाल । बाली राष करे ततकाल ॥
५९ । स्वारथ जब पूरे सक्त तणो ॥ तव सक्त प्रेम करि अति घणो ॥ स्वारथ
सही केनें पूरे ज के ॥ दुस मांन होई फरें नके ॥ ६० ॥ एणी देहनो वीस मो रूप
माहां दर गंधने अंधकूप ॥ घरणी तो घरमे घुमीर रहि ॥ वेगे करी काढो एम
कहे ॥ ६१ ॥ परम हंसा मोरगगयो वही ॥ मुषदी ये ए पासे सही ॥ दिवस एक
पाछे ने पजे ॥ रोम २ कीडा उपजे ॥ गंध अनंत शरिरि होए ॥ तेहने पासान आ
वे कोय ॥ करसे स्वांन अने सीयाल ॥ माषी काग न्नषे ततकाल ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ए
विपरत वात देहनी । केसी आस करो तेहनी ॥ बाजीगर नाटक पेषणो ॥
६८ चारपो हर जोए रही फणे ॥ ६४ ॥ कदाचित कोए समरण करे । दुष्ट ठगेंते
आणी फरे । आलश जंन्ताई अंगढाल । करथी माल पडे ततकाल ॥ ६५ ॥ ६८

एम करतां ला धोजे तलें मृतक समान न्नयो तेत ले स्वपना मोहिजं
पे जे जाल ॥ करे न वो वली कोए अपाल ॥६६॥ लरेरमेज लन्नोजनक
रे ॥ उछ नीच कोय मन न वी धरि ॥ फरी सेपंमो अन्नष जमे ॥ नागी छोत
अकाछो न्नमे ॥६७॥ न्नोला मन नवि जाणे असु ॥ रातिकाम कायुमे कसुं
नाय सि द्ध न पामे कोए ॥ न्नि तर उजल सवल कसू होय ॥६८॥ कीरक
करमी अलम्मी मरी ॥ जातजातनी धेलि न्नरे ॥ निच तपोतें उपरचंग ॥ ता
ते कोए न आवे ढंग ॥६९॥ जो आप विन काया लषे ॥ माषी कागदेषतमे न्नषे
कहा करु मूरु बुंध नवणी ॥ गणधर देवे नदी घणी ॥७०॥ न्नां फो वलि षोष
रो होय ॥ काज न आवि के हने जोए ॥ घरु घरु हस्ते ने करि विलाप ॥ रोए रतले
करे स्ने ताप ॥७१॥ जरा राक्षु स्मी आवि वैर ॥ देह तणो वांन्नो सव हरे ॥

मी अजब वात थे कही ॥ दोय कर जोडी आगे कहि ॥ गर्भवास जीव केणी
परे रहि ॥ ७९ ॥ वल तो गुरु सम झावा कहि ॥ कांमी नर नो हुई फांदहे ॥ संका
नूमत केर जे घणी ॥ कहू वात सुंणो पूर वतणी ॥ ८० ॥ मात पीता नव मस्यो
संजोग ॥ सुकर रुधीर दोए मलीयो नोग ॥ पूरव घर छोडी नासीया ॥
दोय समावारे लागीया ॥ ८१ ॥ तीजे समो कायो तेहां वास ॥ लीयो आर
मन तेहोंतु लावा ॥ तेहां थकी तुरु उतपत नई ॥ थोरो घर से लीधो सही ॥ ८२ ॥
हाथ पाय रेषा नष वीन्हा ॥ पेट पूठ बांधो मुंष नीहा ॥ ओष कांन नाक कुंण
वणा ॥ सास उस्वास रोम तीहां मणा ॥ ८३ ॥ वलण वलण तीहां सेचा कीया
चौदसे नस बेदणा दीया ॥ दरवाजा द्वादस तीहां कीया ॥ तीन एक नर स्त्रीने
त दीया ॥ अगोर सो नाफ लवंत ॥ रात दीवस तेहां धमण धमंत ॥ गुपत कीया
॥ ८४ ॥ त

कोलञ्आहेमी नरिबंदूक॥ मोरजा लमे बेगे ढूक॥७२॥ मनमथ थं
नारोप्पा पास॥ दिढ़ दि रा मांग्या स्त्रीना पाञ्रा॥ कुंबुध वायते घुघुक
रे॥ कोमी कुं करञ्आमे फेरे॥७३॥ मिथ्यामत तेञ्अटवी घणी॥ क्रोध लो
न्न घरमे सिर घणी॥ कुगुरु कागी वांसेन्नया॥ हेस्ताम हस्तेलीदया
॥७४॥ मेणा बांणनो गोलो वहि॥ कहो एकुंण थांनक जई रहे॥ गंधीदे
हीनञ्आवे कोंम॥ नीरमल एक नारायण नांम॥७५॥ घणा जीव नेञ्आंणे
बाज॥ निफर अजी तुरु नञ्आ विलाज॥ एणी देहाने त्रोड त्रा ञ्आशा॥ तब
होसी तूरुने थीर वास॥७६॥ दोहा॥ ×जबलग हे हजूर॥७७॥ ताका
रण निरविषहोय॥ ध्यान करो मेन चंग॥ पूदगल फरिनबा होमे॥ अवच
ल होहि अेनंग॥७८॥ चौपाई॥ तब त्रिष बो ल्यो मन जेह गहि॥ स्वां

॥७७॥
जबलगमै
मैहोईरह्यो
तबलगती
कमदूरःज
बलग...
६९
मु.जनैको
हुनहिं:

६९

हीरानीकरो। सबसदेव आगलतेधरो॥ देवस्यगत पोतानीकरि॥ रोमरोमत्र
तिस्याथिधरे॥९२॥ नवमाञ्ञा दूषएतोकह्यो॥ सूत्रसीधांतथकोमेलस्यो। ते
५६ हांजीवसौचाकरे॥ ग्यांनत्रएपतेमेनमेधरे॥९३॥ मनतिस्कतीअवधिधरेतेसही॥
धरहरधूजेतेतेहांसही॥ कुणाकरमकमाया। कूर॥ वेदनमेइहांलहीनरपूर॥९
४॥ इमदाजे बहुहइहांमांहि॥ एहवांकमेकमायाकहि॥ एकवारमूंडछो
मेमरुदेव। एहथांनकनवआव्योहेव॥९५॥ दोहा॥ नान्हकमसवेटेथीको।
फलछूटेजेहवार। आगगएदोषजनमतो। वहिजीवनरधार॥९६॥ कुसलपेमे
तेदुषधकी। छुटोजीवसुंजांण॥ मेवासोमांहिरहो॥ न्हलोकोई अजांण॥९
७॥ धंधातुरधपतोरहि॥ रांमनांमनहिलेश॥ मेनषजमारोषोएकर पछे
कोइकरेस॥९८॥ चोपेइ॥ अरेअजांणजांपाछुफरी। सुरव बातसविषि
सो

तेहीं बत्तीस वीर । पा चल जीव्या सहित सरीर ॥८५॥ प्रकृति पंचवि
स जोय: विचतारे बीसासो होए ॥ रा वे अस्त्री नर जमणो सोए ॥ मध्य न्या
का ग नपुंसा होय ॥८६॥ चंद्र थकी छे स्त्री नो वाश ॥ सूरज थकी नर रहि उला
श ॥ वणारां का विन घडीया हेव ॥ आपे करता आपे देव ॥ परम हंस तीहां
कीधी वास ॥ आपे आप वणायो तास ॥ करम विधाता घडीयो घाट ॥
ओरां नां मलीयो स्यामाट ॥८८॥ देव देवल पूरो घड्यो ॥ अमृत वस्त मे मुधो
जड्यो ॥ उचा पग मस्तक नीचे वली ॥ आराचमे तणी कोथली ॥८९॥ माय सूधी
तव पोते सूधी । माय दूधी पावत तव दूधी ॥ जलसां रुधीर तणो आहार । मल
मोत्र दोव लोन्तेहार ॥९०॥ नवमास वास झुरार हे ॥ सबल अबाधा त्यां ते
७० सहि ॥ ते दुख मृतु नव आवि चेत ॥ स्वामी थे सुणावो नी वेत ॥९१॥ उवकोनसो ७०

गीयापरा॥ एणं पूछे जे लगा नरा॥ ते हुने ऊटवे आपे छेह॥ ओरां सेती
मांडि निह॥७॥ पढि वेद कहे बखाण॥ ज्योतीक वेद नी मन ना जाण॥
तिन लोक वन नी नरणे करि॥ समुद्र तरे सुष वसीयर धरे॥८॥ एकलो
रणधुजे कोय॥ सिंह गज सुं जीते सोय॥ अंद्र चंद्र बल चक्री हरे॥ रणष्ट
मोण हजो णपरी॥९॥ पंडत नर जोगी ने जती॥ एणथी केणे न चाले रती
एहवो नर बलिया जग जेह॥ एणथी परा वसु तातेह॥१०॥ जोन एक हू के
तो कह्म॥ पापत णो पारन विलह्म॥ एणथी सहू वगू ना बरा॥ जेसम ऊठे
जातो परा॥११॥ सूर कहि छे वारवार॥ एणनो समगत जो नी निरधार॥ मुग
तनरणो अरथी होय॥ एह थकी नागो सहू कोइ॥१२॥ दोहा॥ कोम क्रोध स
वपरहरी॥ तृष्णा लोभ घराव॥ दुबधा ममता चोळके॥ निद्रा आहार मराव॥१॥
दयादान दम जे करे॥ छोडि स्त्री ना पाश॥ समदृष्टी शीतल सदा॥ तेन आवि

सूरी ॥ नाड़ी धोई चालि मलपति ॥ तेथां न कदे षी हरषंतु ॥ ९९ ॥ तेमे मगन
रहि दिनरात ॥ ते कारण तन षोए आथ ॥ मूरष नव समझे मन मांहि ॥ फे
रिपा छो वली तेह न जाये ॥ १०० ॥ तेह षी नर आंधो थाय ॥ कृमी मूरष परघ
र जाये ॥ पगत ल मरण न देषे कोए ॥ तृण गमावी डा जो होय ॥ १ ॥ एण थी रा
वण गमावुं राज ॥ एण थी नीचो थाये लाज ॥ एह देवी मन धाए सूर ॥ एण थी
वेदन लहि अपूर ॥ २ ॥ एण दो ठे नीह से दल फरे ॥ एणे सगत थी निश्चे मरे ॥ एणे
थी कुल ठ ठाडे छार ॥ एण [illegible] कोय न पूछे पार ॥ ३ ॥ एण थी धनी निरधन कीध थ
अपजस ते संघो लोकर लीध ॥ एण थी कछु न सीझे काज ॥ एण थी पकेगळे दावा
७१ ज ॥ ४ ॥ एण थी पच्यो कहि मकूदेवा ॥ वन मेथी केई पच्या मोनी रा ॥ एण थी लाज
गमावि मांम ॥ सूष न पावे आगो जाम ॥ ५ ॥ धंन धर्म नो अर थी होय ॥ एदर सणमति ७१
नर षीजोय ॥ एण थी बाया अगमे नरा ॥ नव रे नरका मारिषरा ॥ ६ ॥ कूल मेथी निकसी ॥

काइ बेठो पाल॥ तू घणो ने घाये कूटीयो॥ धोबी ये तूरू फोटीयो॥२३॥ उपल घा
ली तें कूटीयो॥ नाठो ते हो पण नव छोरीयो॥ कुंभ चमारो त्यां नो सध्यो॥ कलाली
घर तु तरु पध्यो॥२४॥ संका ते कोन कादी कदे॥ चोरासी मे न्नमीयो तदे॥ सेंन्न
रंध्यो लिप्यो थापीयो॥ उन्ने मारग तो नांषीयो॥२५॥ तूने छारा मे वण काज॥ तु
त्यां तू जने न वि आवी लाज॥ कोदाले षोधो केई वार॥ ता हरा दुष नो न आवे पा
र॥२६॥ तू चाप्यो तू आषो गल्यो॥ केती वार पाणी मे बल्यो॥ तुरु ने बाहर जई
नांषीयो॥ ते थानक ते वास्यो लीया॥२७॥ नांनो करी तरु के नांषीयो॥ षोण षणी
न्ने तो घालीयो॥ तुरंग्यो तुरु ने पान्नीयो॥ चूला उपर उकालीयो॥२८॥ तू मूष पकु
यो चिता सही॥ झाल्यो माझ करंतो चीह॥ जोरत के कुण थानक धस्यो॥ मोरी
पणो ते बोरो कस्यो॥२९॥ गोत को लत के तो कीयो॥ जात जात मे ताको न्नयो॥
पम घणी परे घाठो घणू॥ जीन्न एक रूके तू न्नणो॥३०॥ कुगणी का घरे रुस्ये

गर्भवास ॥१४॥ धरम न बाड़ी निपजे । धरम न हाटवे काय । धरम शरीर उपजै, जेजो
कछु कीया जाये ॥१५॥ सूरां किं मेदान में नहि कायर को काम । शूली उपरे खेलणो
फगे तो ठोड़ने गाम ॥१६॥ जोग बैंज मो रोल्ल लो ॥ एक पल करो काम ॥ रात दिव
स को झूझणो । वणाय का संग्राम ॥१७॥ चौप सूणमूरख मन करजो रांका । में दूष
जोगव्या विसवा वीशा ॥ पाछे काल अनंतो रस्यो ॥ सूधन पायो बहू उलझे
लो ॥१८॥ दुबनी वात कहू सो णो वली ॥ जो तु पाणी मे गयो गली । पवन पेरे रेतु
उड़ीयो ॥ नदी समुद्र मांहि बुड़ीयो ॥१९॥ वण मूले तू उने वेचीयो ॥ उने चक्क
टे तू घेचीयो ॥ हिंग दलद उपर देश लुण ॥ ते लमांहि तलीयो ते कुण ॥२०॥ अग
न बली थयो तु छार ॥ आथाणो घाल्यो केई वार ॥ रशी लेई ने कूछा कीया । केती
वार पाणी मे पीया ॥२१॥ तो षोजो तू षास्वी कीयो । केई वार तू षुन्य दीयो । तो घाणी
लेई मूंघा लीयो । पीली पीली रस काढीयो ॥२२॥ एम तू उ मे के कीया । हवाल । एणे भवे

तोश्रवगणनोछे नंभार॥ सुगुण तणो न विश्रा वेपार॥३८॥ चतुरपणो तुं
ऊमेछे घणो॥पुदगलजोतो असोहांमणो॥तुझमे हंस्यानो नहीपार॥कोइन
चितोसुयेगमार॥३९॥ ऊचो ऊछालिऊ लीयो॥सूरपणोते तामेलीयो॥
तोकेहनेनवि आव्यो काज॥नफरहजी तूऊन आवी लाज॥४०॥ अनंतका
ल चिहूगतमे रव्यो॥धरमनजाण्यो वकूऊ लफल्यो॥कू गुरूये नरमाव्यो घणो॥
पंथन पाम्यो जिनवरतणो॥४१॥हंस्यामे कोधीऊ कऊोल॥तेकारण पोहतो
६ ईवोल॥मूऊमे देयान आवीरती॥एकरतब संघलां कूगती॥४२॥ आठेवेरम
कून्नो लव्यो॥इडीपांचे कूरो लव्यो॥ एम अनेक न्नवथीयारेवणी॥ चरणे आ
व्यो त्रीन्नोवनधणी॥४३॥ मुऊ दुषजांणी करजोदेया॥बालक ऊपरकरज्यो
मेया॥तुह्मचरणे प्रन्नु करूनिवाह्मा॥ कूछूरांम तुमारो दाह्मा॥४४॥ दया
वंतप्रन्नु बलीया जोर॥ मूऊ ऊपर कांथया कठोर॥दूषनो बलीयो बोलूब

गीयो। बांध्यो नाख्यो कस्यो जू जूयो॥ तरण मे पड्यो केई वार। तारा दुख नो नत्रा
विपार॥३१॥ तो घरणीए लेई वेचीयो॥ तरुके लेईने नांषीने पासीयो। तके
कर म्यो चुज्यो केई वार। सुषन पामो कीहां लगार॥३२॥ तेपर घरबात रपा
कयाः ठोर लई गाम धालीयां॥ त्यां तुरुने गाढो झालीयो॥ सुली षोके तो घा
लीयो॥३३॥ नाककांन शिरछेदापाय॥ कस्योजू जूयो मेलीयो घाय॥ तु तो ल्ये
तूरुने वेचीयो केई वार वषारे दीयो॥३४॥ लाते लावे तो घुंदीयो॥ छाक
उपर तुरुने लेईदीयो॥ तू चीरो तू कोर व्योघणो॥ तदे कीहां जीयो मोरी
पणो॥३५॥ झाली मूरुने काढी अंत॥ ते पण कुण लवण मेन षंत॥ रसो
ई मांहि गृहीगही। आन कछे र कहो किहां गई॥३६॥ तो बेहरो कालो कूबको
च हुहे राने मूष बोबको। टुंटोने वली पांगलो॥ कवण कठोर अने गले
७३ गलो॥३७॥ लोब मजीराने ठगणो॥ रूपरशाल अनें षोहामणो॥ ७३

९

दने सेचक्सरी जांण पापीपोसो प्रत्याख्यांन ॥५३॥ ओरजके स्तुकृत जग मो
हि ॥ बहु न भणोज बांभण कांहि ॥ लाषकोडवर स सगे दांन ॥ तपसा करो को
ई मेहलीमांन ॥५४॥ क्रोध अगन अंतर परजले ॥ सूरत एकमांहि सरव बले ॥ तेका
रण मत करजो रीश ॥ वत जाय सही वीशवा वीश ॥५५॥ ते कारण आव्यो तोम
पास ॥ मूड मूरख नी पूरो आश ॥ कृपा करी मुझ बांहे धरो ॥ क्रोध लोभ ते दूरे क
रो ॥५६॥ एणे पाप दुख दीयो अपार ॥ तो पण चाल्यो एहनी लार ॥ दुख समुद्र
मांहि बोलीयो ॥ भव अनेक मांहि रोलीयो ॥५७॥ तोपण माहरे एणसुं प्रीत ॥
रात दीवश मे करे अनीत ॥ कलेवाने मे बहु दुष दीयो ॥ दुष्ट लोभमे वाहलो
कीयो ॥५८॥ जुनो सगो उपरे पाल ॥ ते[illegible] मे पण कीया हवाल ॥ नवा सगो सूं मां
ड्यो नेह ॥ ते कारण करि नव नव देह ॥५९॥ स्वांमी हूं आव्यो तहलभणी ॥ सा

कां परमेसर थे जांणो सहु ॥४५॥ मंनष जमारो फोकट गम्यो ॥ धंन रो मा करतो
भम्यो ॥ मयण बांण मूझ लागो जोर ॥ ते कारण दलन ईकी गोर ॥४६॥ मोहम द मूझ
चड्यो अपार ॥ मूष थकी नेका मी छार ॥ अंन म्हेर ने कारण जोण ॥ घणा जीवनी
कीधी हांण ॥४७॥ मोह चंडाल तणे वश पड्यो ॥ ते कारण कुबुद्ध रह वड्यो ॥ परधन
लेतां मंन हरषीयो ॥ पाप करब जई पोषीयो ॥४८॥ जिम करु तिम राषू नाम ॥ पाथ
र जेम तेम नाषू दाम ॥ लाष चोराशी जोनेर हि ॥ नाम अंने ता आगल लहि ॥
मन ४९ ॥ मान वसें मद सूं नस्यो ॥ कर मो ला कल नी पेरी फस्यो ॥ मुझ आगल सहु
तरण समान ॥ धरम तणी बहु कीधी हांण ॥५०॥ जे तू मान करुं घणो ते तो मान मन
घटे आपणो ॥ नीच गोत मे लेइ अवतार ॥ तेहनी कोइ न पूछे सार ॥५१॥ क्रोध
७४ करे नर नारी जेह ॥ पापि पंड भरे स ही तेह ॥ तीरथ दांन पुन्य जे करे ॥ होम जाग
ते मन मे धरे ॥५२॥ एकादशी अने पर वणी ॥ ओहण जो पण मन मे वणी ॥ सरा ७४

रावह मारीए ॥ बीजा तुम आगल कहूं ए ॥६७॥ थेओ दीन देयाल ॥ पर दूषणौं को
तण ॥ पर उपागनी सोहामणए ॥ तुम दरसण जिनराय ॥ हई होओ उलसे ॥
मनह मनोरथ सरवे फलिए ॥६८॥ रोग सोक संताप ॥ आवट सकट टले ॥
आठ करम सेह जे गलेए ॥ भूत प्रेत वेताल ॥ डाकणी साकणी ॥ कामण मो
हण सवी टलिए ॥६९॥ ओरंग षेतरपाल ॥ तुम दरसण पीडे नहिं ए ॥ अस्व
सेन कुलचंद ॥ वामा नंदण समरे ॥ संत होय सदाए ॥७०॥ पद्मावती धरणेंद
आसा पूरवे ॥ एह लोके फल देयो घणोए ॥ जे समरे दिनरात ॥ ते घर नव नि
धि ॥ रीधी वृधी न सुख संपजेए ॥७१॥ परलोके फल आपो ॥ आप निरंजण द
रसणा तोए ॥७२॥ नीच तणो निस्तार ॥ उण थी उधरया ॥ केइ जीव सीया लाकीघाए:
जे नर जपसे आप ॥ तेहनां कारज सरियाए ॥७३॥ दक्ष दिसा नटके जेह ॥ तेन वउ
आप निरंजण, अंतरजामी समरतां ए. केई पोहता परलोक केई प चढे

रकरो मूरू मूरषतणी॥ ये छो अरु वली या आधार॥ तूरु गुण कोयनां
पोमे पार॥६०॥ स्वामीनां मध्य को आधार॥ वेग करी पोहचामो पार॥ ती
न लोकमे॥ आव्यो जोम॥ घर घर व्यापो केवलराम॥६१॥ दोहा॥ रुडारीय
रु मालज्यो॥ उथल पथल केई वार॥ मूल गमावी चालीयो॥ कोण न आव्यो
जार॥६२॥ सेकोडे वी षोतसू आपी सकू को साथ॥ पाछे कछू न नगरी॥ फोका
ट दाधो हाथ॥६३॥ वासीत के वरो कीयो॥ उपायो न कोइ॥ बक्क करता किसि
र चमो॥ गीयो कमाइ षोइ॥६४॥ क्रोध लोभमे मगन जे॥ मिथ्यामत सिर बोजु
केतो ताथे घर नला॥ कि जे जगमे रोज॥६५॥ क्रोधापिशाचे कू चव्यो॥ बुध न उपजे
७५ सेशी॥ जतन करीय घणा साच वु॥ बले करे परवेश॥६६॥ अथ ढाल॥ चौद भवन
नानाथ॥ सुणज्यो विनती॥ मिकुं करम घणा कस्यों ण॥ ते सूणजो जिनराय॥ ७५

नो काज ।। पर उपर मन जे धरे ।। ते नर की आ विवाज ।। ७१ ।। आप तपे आपे गरे
आप पो कू छे पार ।। आप ही छोके आप कूं ।। आप ही करसे सार ।। ७२ ।। त्रिष्ण
बोल्यो मन न गह गही ।। श्री गुरु करो जबाप ।। कुण थान क निछल रहे ।। ते
ह वाता को आप ।। ७३ ।। चोपै आप अयोधा आत मराम । सीता सुमत करि परणाम
उपज्यो के ष्य मिलण कु चाह ।। समता साध्य कीयो मन लाय ।। ७४ ।। विरहान त्व
पीयो के ध्यान ।। ज्यो तलफे ज्यो जल बिन मीन । बाहर देषू तो पीयु दूर ।। घर
मे देषू घर मे नर पूर ।। ७५ ।। घर मे मगन रहि दिन रात । अगम अगोचर मन
मे की बात ।। सूगम पंथी निगम हे गोर ।। अंतर ओर वेहर की दोर ।। ७६ ।। क्यो
मगन दरसण पाय ।। ज्यो दरीया मे बुध समाय ।। जग ठोर्यो पीय के काज ।। मैं
घर मै मीलण नयो मरु आज ।। ७७ ।। नो जे घटे संमारे सोए ।। करतानुगत ।

लभे ।। परसेती भटकी मरेए ।। तेहने नवि वीसरांम ।घर भूला कुं बोहनदि बहु
भवकरेए ।।७४।। आपे सरजणहार ।आपेकरताए ।। भोगता पण आपे सहीए
घटसमारे आपं बीजो को नही ।। मरघते मांने जू जू याए ।।७५।। दुजे सरीन हे
काज कोए तारे नही ।।गुरु नहीकोइ केवलीए ।। एणथी पुन्य बंधाय ।। मारग
पांमीये ।।कर सेते तरस्ये सहीए ।।७६।। विखया कषाया जेह ।पोते जे कीया: बीजो कुं
ण छोडी सकिए ।। आपे आप सधार ।सकल सभालीए ।।७७।। मुगती सुख हणमे
मलेए ।।७७।। पड्यो परमादे जीव ।।तव लगे रडवडे ।चिहु गतनो दुख भोगवे ए
कांम क्रोधने लोभ ।।त्रष्णा सव तजी ।।आप भजी सुंष भोगवोए ।।७८।। छोडी सव जं
जाल मोहतणा फंद ।। चोडीने सुख अनुभवोए ।।तेहांपर नो नहे परवेश ।।आ
७६ पनिरंजण मेन ववोए ।।७९।। दोहा ।। आपे भवसागर तरे आपसंधारे काज ।।
आपेआप निहालतां ।पांमे अवचल राज ।।८०।। भोसामत भरमे पडे ।।परथा स्रे ७६

समायक पालीजे। मेलीमंन थी कोण ॥९६॥ पक्षपात मन नवि आंणीजे ॥ लो
का रुठन कीजे ॥ क्रोध मांन माया मद छोडीने ॥ आप काज एम कीजे ॥९७॥ एक
कहि पूरवे अम कू ल ॥ जे कीधू ते कीजे ॥ एक कहि सुख दुख जे पांम्या ॥ ते फल
अमने दीजे ॥९८॥ एक कहि अम कू लजे आगे ॥ मोटा कारज कीधा ॥ देदे कारकी
यो दक्षदिन्ना ॥ एसां फल ते लीधां ॥ ९९ ॥ दोहरा ॥ परपीडा जांणी नहि ॥ कारत सु
णी आणंद ॥ जिम जिम मन चूरण करे ॥ तिम तिम पडि बक्षफंद ॥१२००॥ चोपई
॥ कर जोडी शिष पूछे पछे ॥ श्री गुरु मुझने संदेय छे ॥ एणे आराधे ने फल हुंत
ते मुझ सोणवानी छे खंत ॥१॥ सुणवछ गुरु बोले बक्षनेत ॥ कहु सुणजो मन थई
एकंत ॥ पाथर कमल करि मेन रंग ॥ वेलू पीले मन ने रंग ॥२॥ बीजे रत नु परखाके
मृतक वेची कोमन संरे ॥ अटवी रुदन करे बक्षजीण ॥ कुकस घांणे थई खरवी
ण ॥३॥

निस्पेहोय॥ देव अलष निरजण जेह॥ नष शिष मे वायी रह्योतेह॥ ॥ घर मे दे
व ल घर मे देवः घर मे चंदन पाती देव॥ घर मे पाणी अक्षत चंग॥ दीप धूप माहि
छे अनंग ॥८९॥ घर मे जाप जपो दिन रात॥ एह करतूत ने एह ज बात॥ धरम
त के सक्रु जांणो एह॥ पुंन्य काज सही बीजां तेह॥ ९०॥ दोहा॥ सहु सए कवि
शतिषट॥ अहोनीश आतम रांम॥ हंस अजपा नित जपो॥ सोहं हंस ले नांम
॥९१॥ रुधे कमल मे थीत करी॥ सुंण ज्यो एहु धुंकार॥ गरजन्न वाशना द्रूषथकी
छुटे ते नीरधार॥ ॥९२॥ ढाळ वेल्ल अं तरंग लो चन उघाडो॥ मे हली मम ता राग॥
आप काज उपर चित दीजे॥ कीजे मन वैराग॥ ९३॥ आयो षाने अते पोहुछे॥ कोय
न करे ते हो सार॥ त्रण काल जिन पूजा कीजे॥ दया सहीत मन ल्यार॥ ९४॥ नवी
७७ यण श्री जिन धर्म करंतां पामे सो सुष थांन॥ ढाकोर चाकोर सम कर जाणो॥ सो
वन त्रण समान॥ ९५॥ दुविधा छांडो हुडको बोलो॥ सीतल रहो सुजांण॥ पोसा ७७

करतोन्नारिष्याय॥एणी कांमे न होय सेर॥नव साधे नेत्रूटेतेर॥१२॥ आंख विना
जेम्रोपेषणो॥तेम्रो चार उपर लेपणो॥कालकूट विषमें धरे॥जीवो नीपए आम्रा मुष
फरे॥१३॥आंणारहित जे क्रीया करि॥कहो कांम ते न्नवसागर तरे॥आंण लेई मा
हावरत आचरे॥तेमाहि कछु न करीसी करे॥१४॥ पंचमाहावरत मोटा जांण
पहधरे पोहचे[illegible] नीरवांण॥अनंत कालनादुषीया जीव॥चक्रगतमांहि यांफे
रीव॥१५॥ एणेपांचे तेशीतलकस्या॥मृगतपंथतकेपरवस्या॥एईपंचमाहा
वरत जांण॥निचतके पोहता निरवांण॥१६॥हरीकेसी कहि एचंडाल॥करम
थकी छूटे ततकाल॥अरजण ते वन मालि जांण॥करमषपी पोहता नीरवांण
॥१७॥मेतारज कहि एचमार॥वादरवेद्यो लेई सोनार॥घोरपरीसोपो तस होः मुं
गते जातो लोकोक स्यो॥१८॥ पंचमाहावरत सुधां पाल॥मोहपाश्नत्रोम्यो जंजाल॥

जनम अंधने फारीनाव॥ आंधोषेवे मंननेन्नाव॥ कोमीलुण वसाये वली॥ कस्तु
रीमांगे मेनरसी॥४॥ कर जतन धतुरा तणां॥ जो एणे आबा मासो घणा॥ पेरामे का
चलेइ फरे॥ रतन आंगणे मेलीधरे॥५॥ मूछके मजारी विसास॥ कुकर बेसेची ता
पास॥ दादूर व मीयर संगत करे॥ तंन धारे जो तोफरे॥६॥ नीरवलो येचीकरका
जा परालकूरी आवि बाज॥ पथर तणी बणाविनाव॥ मूरष बेसे मन नेन्नावृ॥
७॥ कहो कोणी परे पुहुछे पार॥ जेमीथरे करा लीनार॥ परस्त्रल नापूलानवबले॥
न्नाजे न्नाजन अमृत गले॥८॥ न्नोला समूदन्नू जां बल तरे॥ सफर तके से[illegible]
न्नोवे॥ दुरे परस्मेरे॥ मतवालो नव मांने कार॥ तेसो मां कहूने गले हार॥९॥ धरमत
णो नवजांणे मूल॥ षांठ वर सेषा एथूल॥ सांभल वछ तु उने कहू वात॥ केतांउं
गां कहू वार षात॥१०॥ एणी बुध सूष होए जेतलू॥ हंस्माये धरम होए तेतलो॥ जीव
सहूने जीवुं गमे॥ हंस्माये चितगत मेन्नमे॥११॥ सांभल वछ ए मूरुन सोहाय॥ हलूये॥

कथा पण वांचे वषांण ॥ केइ नरके केई स्वर्ग रहे ॥ तातपराई हसीर करि ॥ २७ ॥
लीयो करत मन आणंद पूर ॥ सकुमली कीधो चकचूर ॥ पोते पण बुडा जाये व
ह्या बीजा ने पण लेता गीया ॥ २८ ॥ दोहा ॥ गुरु लोभी शिष्य लालची दोनो खेले
दाव दोनो बूडे बापडे बेठ पथ्थर की नाव ॥ २९ ॥ लाल चमन सब लकरे: जिम
तिम वेस्ये पाञा ॥ आणरहित क्रीया करे तेहुनो दूर गतवाञा ॥ ३० ॥ अन्नपान
जेहना उदर वस्त्र नला देय तेह ॥ तेहने फर गोता देय ॥ षरो हरामी तेह ॥ ३१ ॥
चोपइ ॥ लाल चरे कारण मन वञे ॥ एक जगत पोषे सहू खे ॥ अगउ एक थे मोरी
करो श्रमने वांदी भोजन करो ॥ ३२ ॥ देव मांहि देवातन होय ॥ एह वात जाण सहु को
य ॥ अणु आण नी मायाये धोक ॥ केई कोसाना आवि लोक ॥ ३३ ॥ पोतानु जे करे
वषांण ॥ पसु थका ते षरा अजाण ॥ एपासे थाजि न वरक ह्या ॥ गेलो मूढ अफूरा रह्या
॥ ३४ ॥ भोला मन न विजाणे असू ॥ लोभी नर ते तारे कसू ॥ एह वण जछे संघलो

केई पुरष एणाथी निस्तस्या ॥ मुक्तती वधूते निस्पेवस्या ॥१९॥ एहवा पंचमा
हाव्रतसूर ॥ लेईन्नार कीधा चकचूर ॥ पंचतणी शाखे ओचरे ॥ अरिहंत सी
धसाध गुरु धरे ॥२०॥ आप पंच एन्ने लाकीया ॥ एपांचे मोटा साखीया: ओ
णा लेईनेन्नांजे तके ॥ दुह बोल नर जास्ये तके ॥२१॥ विषया रज्ञाने कारण वलि
सब लोन्नतणी टोली मिली ॥ पेट पसारो मांम्योषरो ॥ पोसा पडीकमणां घे करो ॥
२२॥ समायक पाठ ओचरो ॥ आपकाज ते कांनवकेरो ॥ आठम चोदस ने पंच
मी ॥ बीज अग्यारस ने पूनमी ॥२३॥ पजूसणा ने रतजोतरो ॥ षांडो दलो तन ठ
जलकरो ॥ माथां छोटी वस्त्र सार ॥ जीवतणा त्यां कीयां संघार ॥२४॥ उजल धो
तीपोसा करो ॥ मस्तक टीलो चोषा धरो ॥ पोसो तव सूझे थां हरो ॥ गुहली पण
थी आगल धरो ॥२५॥ आगे बेसो मन उलास्ता ॥ नाना मोटा आवो पास्ता ॥ पोसा ७९
७९ समायक पंच षांण ॥ आदर कीधो वारु जाण ॥२६॥ पंचतणी साषे पंचषांण ॥ वि

जम शीयल सहित नरजके ॥ समायक सूधव्रहेतके ॥ सकललोक नेवलन्न
होय ॥ पण कोरतन बांचे कोए ॥४३॥ धरम क्रीया तेजाजी करि ॥ अहनिश
पोतू पून्येन्नरे ॥ पांचलोक मे बेसे जेह ॥ धरम बुध उपदेश तेह ॥४४॥ एसाव
चन सुखबोले हसी ॥ सकललोक मन थाये खुशी ॥ पोता नित्ते नीद्याकरि प
र नंद्या चित्त नवधरे ॥४५॥ विषयारस थी कूड उदास ॥ परमेसरसुं ना ली
लाग ॥ इस्यो लक्षण नारि जकेही ॥ परन्नवरामें नरते सही ॥४६॥ दोहरा ॥
जेसो न्नाव अंतर वहि ॥ तेसो दरवत सहोय ॥ जेसा पोत उपर लगे ॥ रंगकरि
सकृ कोए ॥४७॥ चोपई अनंतर माया अतिकरि ॥ कूड कपट मे अहनिश फ
रे ॥ अणाचार सवि मनरली ॥ तेपण कोमत जांणो वली ॥४८॥ एम चोनी मा
अति यौंकरे ॥ पाय करम तेम न धरे ॥ कीरत कोए बोले तेह ने ॥ आदर महिमा मांघणी तेहेने
॥४९॥ बाहर लाज घणेरी करि ॥ निचा द्रष्ट करि नेफर ॥ अंतर पण नहि दे
मै

सरि॥बाई षूदीने जाये परे॥३५॥मूरुने पण त्मोल वियोघणो॥पंथनयोम्यो
जिनवरतणो॥एम न्नमतां सदगुरु मल्या॥संसा सेदह मननारल्या॥३६॥
तवमे जोएयो मारगषरो॥चतुर विचारो उद्यम करो॥श्रीजिनवर बोल्या उपदेश
॥तेमां हि हे सानो नहि लव लेश॥३७॥दोहा॥ शिषपुछे तसलेमकरी श्रीगु
रु चतुर सुजांण॥ केण करमे नरभ्रवतरे॥ विदलकुंण बषांण॥३८॥नरा
फीरीस्त्री अवतरि॥तिमू रुक होविचार॥सावधान थई सांभलो॥सुणज्यो
सह नारनार॥३९॥चोपे॥निरमल अति उजल प्रणांम॥नइक भावी आगे
जांम॥मांन रहित मायाने रती॥ घरछोमी कवहो सजती॥४०॥देया भावस
छरनव होय॥ तेजूप दमा सूकल ते सोए॥ मोहो पुरष साधमनरमे॥ते
८० हने सेवा झाझी गमे॥४१॥ एकाकी निंद्रा ही निराश॥ कवरे हसुं गिरकिन ८०
रवास॥ सीह स्वरप वितर जोर क:कब परि सासिस तजी संग॥४२॥सं

दणो एकनामन ओकवार॥ एह विधतप साजे करे॥ ते पूहचे नवपार॥५८॥ एक
दरव अलूणो॥ अनपान लेयसाथ॥ एआं बिजश्रीजेन कहो॥ बीजोतवणका
य॥५९॥ जिम विणकाथे मोल्लघर॥ मेहले कोइ अजाण॥ कालांतरे तेहांथी खसे
करे देह नीहाण॥६०॥ फरसी अने चरापरी॥ तीखो लेये आणद॥ तुप महीत अ
बलकरि॥ एणीतपस्यानहि बंध॥६१॥ एके आसण ठामजल॥ विगनहिल वले
श॥ तेनि बीश्रीजिनकही॥ आगम एउपदेश॥६२॥ एके आसण जेरचे॥ पांचे
जलनोत्याग॥ अथवा एक समे लहो॥ एजिनसासन माग॥६३॥ विखयारस
राताजके॥ धरमनजाणहार॥ जाणे तम मूरख वा चरे॥ सो[illegible] लगे लय नीर॥६
४॥ नो लामेन समकुन हो॥ कोइनेजाणते[illegible] नेद॥ माया तप सुख सु[illegible] नेकरे॥ वी
जिम अरवी माहि षेद॥६५॥ उचरवा वूनवफले॥ वण मूले फल होय॥ चंद विना
जीम जामनी॥ कंथ विना स्त्री जोइ॥ तेम तपश्या मूष मोकले॥ मन ही करो विचार
॥६६॥

ऊ

थाळ्नगारु॥ त्रिकथानो नवी आविपार॥५०॥ परनंद्या बोले मुरख मोक॥ बेअ
गा बेपाछो जोक॥ पोसा सामायक तप करे॥ धरम कथा हसीर स्तांन्हे॥५१॥
मेगा वचन हसीने कहि॥ हइयामांहि कातरणी वहि॥ अंतर जेम नन्हर
मो होय॥ जो एपेथी सो अे सकु कोए॥५२॥ पापतणां थांनक मंनगमे॥ तेपणउ
पदेशा मेनरमे॥ जेस्यो न्नाव अंतर मे होय॥ ते सोदर बेउपजे सोए॥५३॥ एककुण
तेरदाम अार॥ नरफीटी ते थाये नार॥ स्त्रीपुरुष जेहने अंतर घणो कलेशे
रुधर ध्यांन ने काजी लेश॥५४॥ कंदपनो घणो वीकार॥ स्त्रीपुरष सोघणा न्नो
ग अपार॥ बेजण स्तु लाल चअति करे॥ मदोन्मत्त होइने फेरे॥५५॥ कांम अगन
अंतर परजले॥ ज्यौं दारु मे अगनी मले॥ ईटन एणे जे सो अवाशा॥ तेस्यो कांमत
णो छे दाशा॥५६॥ एहन्नाव नर नारी जेह॥ फर पाछो विदल होय तेह॥ एहवो
जांणी तपसा करो॥ सूधे मारग होई संचरो॥५७॥ दोहारा उतरवारु एणपा

८१ ८१

लषी सोए ॥७५॥ थ्यवर कलपि मुनि होय सराग ॥ जेन कलपी मुनी माहा
वीराग ॥ निस्चे एमो नीस्वर जांण ॥ विवाहारी मुनि करु वांषण ॥७६॥ रषी चौर
उपर नहीं रती ॥ कपर विणा थांनक ने हां थिती ॥ वणा बोला वो बोलेन हि ॥ दाधां
विणा कछु ग्रहे नही ॥७७॥ पंच गरासी भोजन करे ॥ असरु तो कछु चंत नथ
रे ॥ चरु कने करु कपर स्मरे ॥ दोय दरव ने जान व करे ॥७८॥ दोत विना जेसी
मो करी ॥ जमे लापनी चांनी हरी ॥ अथवा ससरा पास जेठ:पासे बे से वकु
कनीष्ट ॥७९॥ जमे राव मंन आंणी नेह ॥ पण कोन वीजां णे तेह ॥ साधजने एम
भोजन करे ॥ बचका बचक न वाजे रसे ॥८०॥ जोतक नीमत नहे तीथ वार ॥
झाको झो न हि लागर ॥ मूरत सकन चिन्है वीधरे ॥ मंत्र जंत्र न वकारा करे ॥
८१॥ गमण करे जव चोनीगाया ॥ अण बोल्या चाले मुंनी राय ॥ मलमां लांण

सयं।

जोयोगीचीतसु करसु करावी छार॥६१॥ चोपइ॥ अ मुल गुण करूमुनी सर केरो
पंथ मुगत रमणीनो थायेकंथ॥ रूमूरष कछु समझेनहि॥ ज्ञानवंत जाणेमे
नमांहि॥६८॥ सगवीश मूल गुण साधूना॥ तेहतणा बोलूं विवरणना॥ पंचम
हावरत सुधा धरे॥ पंच सुमति लीधी रुषा करे॥६९॥ षमाव रुपनीत पालेरही॥
मंजननी नव लोपे कार॥ लोम सेयन करे नीरधार॥ जावजीव दातणनो त्याग
आहार पछी नही पाणी लाग॥७१॥ जावजीव लगे पाले जेह॥ सा कनर सिधांते
तेह॥ अलप आहार तेगहा करे॥ गिर कीनर वन वासी रहि॥७२॥ अजाची कनेर
हे अंबोल॥ परीसो आवे रहे अरोल॥ लक्षण शारिरे एह शुं होय॥ बारभावनि
तनावे सोए॥७३॥ चारित पंच मले नस मांहि॥ तीन गुपतथी चूके नांही॥ अं
संख्या ता गुणे दीपंत॥ मल मजीणादी से बहु संत॥७४॥ थविरकलप जिनकलपी
जकोहोइनग नरहे सहीत के॥ सेषसाषांथीर कलपीहोय॥ एकाकी जिनक

अंभक्रीते जीते सही; वस्त्रत्याग करे ते सही वाल अग्र तेराषे नहि॥७०॥

८२

८२

घूघ समुनें ओर हेवा बग ॥ सुगुरु कुगुरु तेम होय ॥ ८९ ॥ ज्योरज सोधे हंस
पय ॥ कुंतक पंक न्निन होय ॥ जब कारज घात चाहिए ॥ दही मथ सकु कोय ॥
९० ॥ धरमत णो अरथी प्रछे ॥ तो साध जन ल्ये दूर ॥ कुल कार [illegible] ठब काछो
रुदे न्नूल म मस्त क मूरु ॥ ९१ ॥ गुण एक विासे आदरो ॥ आमे घअयाणो दूर ॥
दरशण गुण निरमल करो ॥ यहो वैराग पूर ॥ ९२ ॥ बार वृत सूधा धरो : जती माव
होई पार ॥ एण हीरितेज के चले : ते श्रावक अधिकार ॥ ९३ ॥ जेम वेष धरे सू
रतोण सुत ॥ वलि बीबी गज सीह ॥ रीम चतुर न्नोज मुगरधर ॥ त्यो पांणी मेली ग्र
ह ॥ ९४ ॥ ज्यो बुठी स्त्री पर वेशे ॥ वेष करे मन लाय ॥ क्रीया अनुष्ट कछू नही श्रा
वकनोम कही वाय ॥ ९५ ॥ चोपइ ॥ श्रावक नर नारी जेह ॥ धातरुपी कर आपे ज ॥
तेह ॥ गरन्नमाहि थी गली गली जाये ॥ आगे नी चीगत ते थाये ॥ ९६ ॥ नाम पोस्तक
न्नाको न्नरी ॥ आपि घर चवाट नो करी ॥ साध नाम लवे मूरख एसु ॥ एणे दाधे आगे

गातर नज्ञा होय॥ वस्त्र तेल मेणा मे सोए॥८२॥ सरस वस्त्र नो कीजे त्याग॥ ला
जे बिजे दीन नहि लाग॥ गंभ न्हात पांणी नहि लेवा॥ अने एक थापी जेव
॥८३॥ असेयम संयम मेन लाग॥ विकथा वचन करे सव त्याग॥ पंचेंद्री
नो मोरे मांन॥ तप जप क्रिया सोये वांन॥८४॥ पोहर एक त्रीजे ने दरां अल
प आहार। ध्यांन मुद्रा जेह थानक हसा नीचाल॥ ते थानक चोरे तंत का
ल॥८५॥ मास एक उपरंत दी। जिन वांणी नव लोपे कधी॥ बाल संन्तावासो
त्र एां बोल॥ ग्पांनी सु बोले चीत षोल॥८६॥ च्यार हाथ धर जो तो फरे॥ हं
स्थांन कथीघर हरे॥ लेये धरे ते पूजी करे॥ पाछी हटी न दे पेफरी॥८७॥
दोहा॥ उविवहारि साधु जन॥ कह्या जिनागम मांहि। एणाथी अकूरा जके॥ ते
साधु जन नांह॥८८॥ मुक्ताफल पाषणफर कौ हीरा दीक चन जोय॥

ग्रद्व ८३

एतेल घणी बहू कला ॥४॥ स्त्रीनुं अंग नरषे घणो ॥ सरस आहारने दूजां मए
कथा कलोल स्यारजी जणो ॥ तेपण कान देइने सुणो ॥५॥ वचो मणो दोयने
लांघरे ॥ सूये बेसे षांतिकरी ॥ आंचो वस्त्र मूषन बोल ॥ ब्रह्मचर जजाये डुरुबो
ल ॥६॥ उनू पांणी कलपे जती ॥ च्यार घडी उपर नहे रती ॥ शीतल पांणी आव
के जाण ॥ महूरत उपर जीवां हांण ॥७॥ अलध्धि षपे चेद्रीव षाण ॥ ॥८॥ मूर
उपर एता कह्या ॥ विषयारस मांहि जाये वहा ॥ कूंक घणाने करवक्रा चोमासे
माहापूरष नम्या ॥९॥ लई आले तेहने बहू पाप ॥ कुंथुनो घर घाले आप ॥ मु
लो आचार अंग मे घणो ॥ ह्रं मूरष मूष केतु जाणं ॥१०॥ दोहरा ॥ विषयारस
राता जके तेनर दषीया होय ॥ एणाथी बाह्या जेनरा ॥ जीया सोतन धन षोए
॥११॥ इन कूं लकीकरणी तजी ॥ उत्तन जोन गकांन ॥ नहीं उपरत

असत्री [illegible]
तोस्याचे [illegible]
द्रीनरसेनो
ससबेद्री
नेद्रीजांण
॥८॥

पाम सो ॥ ९७ ॥ मूरु न जोए मन मे अम्मी ॥ आध होये तो न्ना चरकसी ॥ पुण
दोने वण से धन धरम ॥ आगे बोहला बांधे करम ॥ ९८ ॥ विषया रता नीउ
मग हती ॥ घर कांमे हल्यो न्नो लाजती ॥ कुलनी रीत तजी कुण काज ॥ धेन कारण
बहू आवे बाज ॥ ९९ ॥ घर कुंस न्नो जन स्त्रीना न्नोग ॥ छोम पलंग वचायो जोग ॥
न्नूदर न्नजन न करो लगार ॥ दोम्यो मन जिम कछु तो षार ॥ १०० ॥ आचारंग न वजो
योरती ॥ एकरतव संघलां कुगती ॥ आचा वस्त्र निरमल सूर ॥ न वे वारु थाये च
क चूर ॥ १ ॥ सरस आहार उपर मूषवान्न ॥ आचा वस्त्र पेहरे षान्न ॥ तन ताते दान
नीडा करे ॥ स्त्रीनी कथा चित मे धरे ॥ २ ॥ एषर करम त वजे न वर करे ॥ शिवदोरी
चरुतां कातरे ॥ तपजप क्रिया करे अपार ॥ एषर वाने थाये चार ॥ ३ ॥ पाटपल
८४ ग वसां रणं करि ॥ वेशण पण बोहलां पाथरे ॥ तन मंजन दातण कोगला ॥ मेरु ८४

कोय

कीरतम टे धरम न बधाये। धन नासी जस्‍आरी जाय॥ बीजो काढीयो आ
लस होय। धरम वणजन थाये दोए॥२०॥ बाहर सीथल होय सव अंग। अंतर
धरम वासनान्नग। लोक थोक न्तमेते ●एणा। ए आलस मोहा असो हाम एर॥ धः ७३
२१॥ ढगती सरो। शोक संताप। उदे होए जीव करे विलाप॥ माथों हडीयाने पीर
एणी॥ आरम्भ न्तेरम्भ अतीकरे घणो॥२२॥ ऊरु पीर त्रोके वाल। हाथपाव कूटे कपा
ल। मूरख नव समजे मन माहि॥ मायाये वत सो घलो जाये॥२३॥ सीतर कोमा को
मी मारु॥ काल गमावि एणी पीर जोय॥ कोये अणबोल्यो रहि। सुजाणते कहिह
डीयो पथर समान॥२४॥ घणो रोए नव आवि कोय। योरु पूग न फेरी जोय। दि
नदश पंषी आव्योनोत॥ जिम ए तिम कुकाल हवंत॥२५॥ सूतक पातक जे घर
होय॥ धरम कीया त्यान करे कोय॥ करे काज जमे दोय वार॥ धरम करतां जो
एहार॥२६॥ ओरांने न वपाये नीर॥ परघर जमतां थाये मीर। एकल जग नो दीसे।

लेकातके। ज्यूँ बलै घू लेके पोन ॥१२॥ मोंहि नलाधेपमरस्स ॥ परस्पे
राचंत। दीवा ज्यो न पतंग ज्यो ॥ सपषादाऊंत ॥१३॥ तेर काठीया ॥ धरम
करे को न वससके ॥ पर उपर मन जाय ॥ कहा करे जीव बापको ॥ सो काठीआ
को थाये ॥१४॥ तब चित षोलि शीष कहि ॥ गुरु ये छो कृपानाथ: विवरण करि
मूझने कहो तेरे काठीया वात ॥१५॥ जेवटपाडू वाटमे। करे उपद्रव जोर ॥
सोरठ देश गुजरात मे बोहत काठीया चोर ॥१६॥ तिम ए तेर काठीया
करे धरम नी हांण ॥ ताते कछु एण की कथा ॥ कहुं वशेष वषाण ॥१७॥
जूया आलस शोक भय: कुकथा कौतक कोह कृपण: बुधी अग्यान
तानंरम निंद्रा मद मोह ॥१८॥ चोपई ॥ परथम काठीया जूया जाण ताम
 पंचवस्तकी हांण ॥ प्रजुता घट मरे श्रुत कर्म ॥ लोकमांहि नंधानो मर्म ॥१९॥

माहि अपकीरती होय। केई वरसमनो त्रूटे नर। लाभ कारु जोतष त्रा करे। घणी दोय
अंतर ते हरे॥३६॥ कृपण बुधी का बा अति जोर॥ खोन्न लेहर मे सोरा सोर॥ धन कार
ण दोरु दिनरात॥ धरम तणी नव जाणे वात॥३७॥ पुन्य काज को यह लो करे
न हवका नो मूरु नव सांन्न ले॥ लोकां माहि ममता परकास॥ ममता करे धरम नो न
ग नास॥३८॥ नव मोठे अग्यान आगाध। जाके उदे उपजे अपराध॥ पाप करतो
करे कलोल॥ हसामे अहनिस रंगरोल॥३९॥ पापकरतो सूछ जो होय। तो ए धरम
करे न वी कोए। जिहां अपाराध पाप छे सोए। जीहां पाप ती हां धरम न होय॥४०॥
दसम का ठीया नरम विछेष॥ नरमे असुन्न करम को लेप॥ षोटा उपर आदर करे
कू गुरु कूदेव चेत मे धरे॥४१॥ असुन्न करम दूरमत का षाण। दुरमत करे धरम नी
हाण॥ मुगत पंथ नी न पके सुध। वणा सोग्यांन सुध ने बुध॥४२॥ नवाए का दसम।
... आतम रसाधी अ लगा कीया। सपनो ... माहि दोरु दक्ष देखो। काज अका
म

चेन॥ आगे सुख थाए तस्स ही॥२९॥ अय चोथ काठीयो वर्षांण जेहने उदे होये
बल हांन। ओर के पेष्यर हरे काय॥ विकल चंत को करे उपाय॥३०॥ न फुरे ब
ल चंता बहु थाय। उधम धरम राग मरी जाये। ठग पांचम कुकथा बकवाद
दोषण ध्यांन तव ज हो अषाद॥३१॥ कूठ पाठ दूहा चोपई॥ कुचे वांचे मन गद गद्दी॥
विकथा करे धरम नी हांण॥ लोक सहु को कहि प्रजांण॥३२॥ जब लग जीव मग
न ईरा मांहि। तब लग धरम वारा नानो ह॥ कतुहल छठो काठीयो॥ अरम बिल
समे हरषे ह होयो॥३३॥ बाजीगर अवाइ जोय॥ राउ वेरु तेहां आगे होय॥ षोटू रू
पन रषे धरी ध्यांन॥ अवण से सुध बुध ने ग्यांन॥३४॥ जेहां [illegible] अरमते हां सूष
नहि आप॥ धरम राग नो तूटे वाक॥ कोप काठीआ छे सातमा॥ आगन समोन
नई आतमा॥ आपा पर बाले निज दोय॥ कस्यो कराव्यो जांणे षोए॥३५॥ लोक

काहूकोन हि वंक ॥५१॥ चौ॥ त्रणपरकारे उपजे सो दोष ॥ सतर भेद जिन
सासन भाष ॥ अहनीस एह तुजने उपजे ॥ समनाम कोइ कोकट भजे ॥५२॥
आप विचार करो मांन मांहि ॥ जो तुज मे एछे के नांहि ॥ त्रण भेद सुं मन लू
टाटो ॥ चतुर ते के सुणज्यो मन लायो ॥५३॥ पुदगल पुत्र कलत्र उपरे ॥ धंन धा
न चोपग मंन धरे ॥ एह उपर मन आति ले लीण ॥ क्रूर्म्य वषांणे थइ परवीण
॥५४॥ षाटो षारो मधुरो जांण ॥ कोमल लोभ मंन करि वषांण ॥ माया लोभ क
रे परणांम ॥ मोह मगन में आगे जांम ॥५५॥ एह परिणांम करि दिन रात ॥ पुन्य
धरमनी होय घात ॥ प्रथम भेद राग एल ख्यो ॥ द्विष भाव हवे बीजो कहो ॥५
६॥ क्रोध मान दुगछा घणी ॥ सोक संताप मन अरु निंद्रा वणी ॥ दुष आवि अति
चेता करि ॥ विकल थइने देहू देह्रोफरे ॥५७॥ एम दोउ बहू हइडा मांहि ॥ म

गकरपरवेस॥४३॥ मनवचकायनाई जनरूप॥ बुजेधरमकरमघनकूप॥ हाद
शमोअष्टमदनार॥ जामेअकर रोग अधिकार॥४४॥ अकररोग तेहां विनयवि
रोध। जिहां अविनयतेहांधरम निरोध तेरम जोर काठीयामोह; विवेकबुधनो
करेवछोह॥४५॥ धरम करे व्या उधमकरे॥ तेणेसमेते आनोफरे। अविवेकीनर
पसूसमान॥ धरमरज्ञानी होयहाण॥४६॥ दोहा॥ एहातेरह काठीया॥ धरमस
बेलेयेचीन। यातेसंसारी दसा; षोजें परवीण॥४७॥ एतेरजोधासबल; ऐसूरके
नकोय॥ सावधानथई चालसे॥ तेनरसुषीयाहोय॥४८॥ एहसूणी शिष हरषी
यो॥ श्रीगुरुंकहोवात॥ कृपाकरीमुझनेकहो; केमतणीके जात॥४९॥ अंनतसगत
छे आतमा। केइपरकेरु कोय॥ केणीपरबत संध लगमे॥ गालो पोलोहोय॥५०॥
॥ अम्मरत वांणीगुरुकहि॥ सुंणो शीष सन्नानीशक। आपेआपकेमायोगो॥

सु

८७ ली

८७

त ६४ ६५

लो छोको पराईतात ॥६५॥ चौ धरम नास वचन मत कह्यो ॥ आया छाक
ओरमत लहो ॥ इसा वचन कोइ मत कोइ ॥ तेहथकी बक्र अनरथ होय
६६ ॥ कर्कवचन बोले नरजेह ॥ केईवरसनो आऊ नेह ॥ परसंसा आपणी जि
णे कही ॥ कोडीनो नरदाखे सही ॥६७॥ नेधावचन कहि नरनार ॥ परनामल धोये
निरधार ॥ होइ तिके दोएं षपरा काध ॥ देत तके परधूलो दोध ॥६८॥ नंद केना नर
रीकर गडी ॥ जीन्पा करी नुसारे सही ॥ ते कारण जेन धाकरे ॥ रतनभंडार काचमं
नधरि ॥६९॥ उपघाती मत बोलो कोय ॥ तेहथी करम बध अति होय ॥ तौंप वचन पा
बोले नरनार ॥ आपापर बालि नीरधार ॥७०॥ हांफांमो हिंषरकोपके ऊंफांचोतरू का
फा लके ॥ धरम ध्यान नीहोय घात ॥ वचन दूके पुरा आत ॥७१॥ सातवचन एनषरो ॥
जोण निस्चे धरम तणी सही हाण ॥ एणे सातेवचन दूभाये ॥ दोंनपुन्स तेनर फलथ्या
...कस्यो करा वो धाये फोक ॥ ए हवो बोले बक्र लोक ॥ ते कारण मूषमे

मशीएतीहेविचारुथाये॥ कोयकेहनीजोसमस्याकरि। देइकोननेचितमे
धरे॥५८॥ निसासोनउस्मायोघणो॥ द्वेषभाव एबीजोभणपो॥ त्रीजोभेद कहूमी
थ्यातःसुणी यम करजपो केहनी तात॥५९॥ स्त्रीपुरष नपुंसकवेद॥ विकारभा
व करे मन भेद। घोराउपर आणे प्रीत। देवांकुल गुरु एहीरीत॥६०॥ होमजागई ज
देविकुंभ॥ नाउपर मन अतिले लूब॥ मूढ उतारण अद्भुत कहि॥ त्रीजोभेदके
होए सही॥६१॥ एह भेद त्रीजोमीथ्यात॥ दूराये मंन नीस वेआथ॥ मनोदेरु अल
पविचार॥ आगममांहि अरथ अपार॥६२॥ दोहा॥ रागद्वेष मिथ्यात मनः अह
नीशेरहि लोभाय॥ ता कोव[illegible] गहे न हीं॥ मन घज मारो जाये॥६३॥ केथाव
र तीरयच गतिंते मांहि ले अवतार॥ फिरर जनमति हो लहि॥ केइवरज्ञानिर
९८ धार॥६४॥ वछेन रुंजेजिनराव ह्या॥ भेद लहु एसात॥ सावधान थई भा ९८

निच गोत मे वास ॥ पर जीवां ने ताफे कोए ॥ ताथे राग परो न व होय ॥ ८
१ ॥ मंजए व षय विन्हषए धरे ॥ काय दंड ने ए साते सरे ॥ धरम ध्यान नी
होय नास ॥ सा व ढ पए न व छोडै पास ॥ दोहा ॥ त्रए दंड मन ना कह्या ॥ सात
वचन ना जांए ॥ साते काया ना कह्या ॥ अतर भेद वत हांए ॥ ८३ ॥ एए दंड दुषयो
मस्ती आगे होय निरास ॥ वत सेगलो वगफेस ही ॥ जिम पय कांजी वास ॥ ८४
म ॥ जेम मुनुक्कर पुर लूंटतो नर हे माल लगार ॥ तिम व वि क विना प्राणीयात
पज पक्कीया विगार ॥ ८५ ॥ जिम कोए नर राजा ग्रह्यो ॥ लूंटी लीयो सव माल ॥
कर वह्ला ना किसेर कीया ॥ ता को कुए हवाल ॥ ८६ ॥ रात दीवस तूरु प्रांणीया दंड
पडे छे जोर ॥ अेह नव नो वत सवगीयुं ॥ आगे थायस्या जोर ॥ ८७ ॥ वार २ तूरु ने
वाफ्ला ॥ तृष्णा ने घटाव परिग्रह थी कैए ई भूषको लह्यो ॥ ते तो मोहे वताव ॥ ८८ ॥

गर्वाहा॥ सुषे समाधि सिवपुर जहि॥७३॥ दोहा॥ वचन थकी निरवध होय॥
समो इन लोपि कार॥ जेम षमे अम्रत श्रवे॥ थे काये नि [illegible] कासो
छार॥७४॥ जीन्याए धन सव हरे॥ ज्यीन्याये तन जाय॥ जीन्या न रुणी अव रुणी॥ वंध
व वेरी थाये॥७५॥ चरु पक्ष की छुटा तिके॥ ना लषमे मंन लाय॥ न्दार छूटां जीन्याथ
की तेम न वषमीया जाय॥७६॥ मेवा की मीस्री अंबर त्रा॥ गोरस है बक मुल॥ ताथीं जी
न्या सर सहि जो कोए बोले बोल॥७७॥ चोपइ॥ हवि कहु काया दहाय॥ नरना
री सुंणा जो मंन लाय॥ पर प्रांणीने पीडी कोय॥ वेर लेये दस अन्न वलग सोय॥७८॥ चो
रीजे नर नारी करे॥ पाये पिड आयणो न्तरे॥ छर ला कहु ने छोणाराच॥ ते नर नारि
८९ होय वणलाछ॥७९॥ मेथुन सवे कु से फरी मे हलूणो तू पाथि न्नरी॥ परिग्रह पण
राषे अतिजोर॥ पापी पाप करि अति घोर॥८०॥ आरन्न करे जे मंन उलाज्ञा॥ नाते ८९

सुंबहूनातां ॥ सीयलदोष सोणवानी बांत ॥ केमेन लागे दुःकरदोष
के काया । बहू करता पोष ॥९७॥ वचन श्रवण चक्षु पेषणो ॥ के
परिमल के फरस्य घणो ॥ पंचइंद्री मांहि बलीया जके ॥ कुण कामी
जोगी कहू तके ॥९८॥ कुण गत कुणइ दीनो वारं ॥ कुण पटराणी
कहू उलास ॥ सीयलदोष केता केवाय ते सुणतां मुंझ उलरथाए ॥
॥९९॥ श्रीगुरू वछन वीचारी कहि । धन्य पूरष जे हइडे गहे । जिनवच
न थी गणधर लहो ॥ तासपरंपर साधि गह्यो ॥१००॥ साधवचन थी पुस्तक
वणी ॥ पुस्तक थी मे श्रवणे सुणी । सीयल तणा गुणनो नहि पार ॥ मुझम
न रषमे लहे लगार ॥१॥ सीयल तणा गुण वरणुं आज ॥ तेहू केहसु मेहली ला
ज ॥ दरीया तणो नवी आवि पार ॥ बुधसारो हू कहू विस्तार ॥२॥ अलपम

ग्रेह अगावीस मोहीला ॥ एकेगेदु षकूत ॥ दुष परिग्रह पापियो । सरवे गे
वीहत ॥ ८९ ॥ जिम गिरी षड़ला कड़ सहीत तो आगने दाझंत ॥ षड़ विना डुगर
हीनो: अगनी कोइ वलंत ॥ ९० ॥ जम दोए पंषी प्रेम अति: आमिष एक लेई जाये
मैत्री तणी दृष्ट पड़्यो ॥ रुड़ फेगा वड़ माये ॥ ९१ ॥ तव पंषी स्यो चाकरे ॥ एदूषदे
कुंण काज ॥ आमीष छोड़ अलगो न्तयो । लेई आमिष गयो न्राज ॥ ९२ ॥ तव
ताहे स्यातान्तइ ॥ गयो दोष विकार: पाप मूल । ए परीग्रह ॥ एहने पड़ो धीकार ॥ ९३ ॥
चतुर ति के को निध्यय ॥ मूरष रह्या लो बाया ॥ शील वरत्त जे पालसे तेनर सुषी
याथाये ॥ ९४ ॥ तव शिष बोल्यो ॥ उमजी ॥ जोड़ी हाथ हजूर ॥ शील तणो वरणन क
रोसु एण सो आणे दयूर ॥ ९५ ॥ गुरु गरुया वलतु कहे ॥ सूणजो छोड़ जंजाल अ
लप कह्रू सव छोड़के । पण छे अति रसाल ॥ ९६ ॥ चोपइ ॥ शिष बोलि गुरु

९०

एहवातगणधरकहि॥चतुरसुणोएकचेत॥सहस्राअढारशीयलतणा
केरसोतेविरतंत॥११॥श्लोक॥त्रिजोगकरणसंज्ञा॥सोन्नादेचितन्ना
दीकं॥अष्टादशासहस्राणी॥शीलानिकथीताबुधे॥१२॥चौपइ॥देवति
रायंमनथगतजोणलेप॥मनवचनकेकायाजोगणी॥काष्टअनेपाखणए
च्यारेनूकरीवखाणी॥पणथेसुणज्यो चतुरसुजांण॥१३॥मनवचननेकाया
जोग॥एह॥मोकलेधरमनीहाण॥एतीनेचोगणाच्यार॥लेषेकरताथाये
बार॥१४॥करतकरावतअनमोदना॥तिगुणबारकरोएकमना॥एम
करतांछतीसेन्नया॥इंद्रीपंचगुणातेकया॥१५॥एसीसतसरवालेहोए
आगेलेषूकरसांजोय॥सरीरनीसस्रषाकरे॥सणगारादिअतीमनधरे
॥१६॥सरागेहासप्रसंगजिघणे॥विषैवादसरीरेमंमणो॥पूरवविलसु

तीनकामनस्मरे॥ कोएनस्त्री एणथी नीसरे॥ तेकारण मूरुख मन गथ ईं
एमतणे मरू मनगहगहा॥३॥ तपजपसयमसुधांकरे॥ अठसठ तीरथ बहू
परफरे॥ होमजागधनखरचे रोग॥ जीयल विनातेसघला फोक॥४॥दोहा॥
दोएकामीत्री जोगनी एपांचेमदमत्त॥ एहाथीदुरगतके केथावर फलपत्र
॥५॥ सबहीथीरमनासबल॥ एणसूरकेनकोए॥ एणथीवाद्याजेनरा गया
सोतनधनषोय॥६॥ वाघसिघगज सरपवीष॥ अगनकरक बहूघाव तेसरू
येचितमेधरे॥ पणए दुषलागेहाव॥७॥ सामंतसूरबलचक्रीहरी॥ अंदुरचं
द्रनागेद्र तेपणकेकरहाय रह्या॥ एहथीकीबलमंद॥८॥ एणथीकोयननीसत
स्यो॥ एणसूहोए हवाल॥ एणथीकीरतनव होय॥ एदुरगतिकेमाल॥९॥ सतवर
वानीमोकरीजरारोगसुरंग नाककोनविणनरषतां जीयलतणोहोयभंग॥१०॥

जीवहणे नीरधार ॥२४॥ सरखे जे पंचइंद्री ॥ मनष हणाये जेह ॥ वणस्यांने जीवक
हा ॥ अंतरमुहूरत तेह ॥२५॥ दोहरा ॥ दोए घडी मे घाट कह्यु ॥ ततेंछाए जोएए
एकसमोए कावली ॥ लघुमहूरत वषांण ॥२६॥ जातएक छु एक छे ॥ त्रणे वरण
९ वषांण ॥ नवे प्राण छे तेहने ॥ असेष्यात नीहांण ॥२७॥ परतषपापवलि सुणो
आंषदाघ सेरजेह ॥ जो तेहनी दृष्ट पडे ॥ दुषपावि सही तेह ॥२८॥ नलीवस्त
पापफवली ॥ फोफासाकर संग ॥ मक्क लोक जाणे सही ॥ वणसे संगत रेग ॥२
९॥ ते कारण पातक घणो ॥ नणपुं संन्नाहजूर ॥ ए[illegible]थकी अलगानया ते
नरकहि ईस्नूर ॥३०॥ शिष्य वलतु नणे एसुं श्रीगुरु दोष आपार ॥ कृपा करी
मूरु नेकहो ॥ किमचाजे[illegible]नार ॥३१॥ केणीपरे एदोष वारिए ॥ केणीपरे
होए निरोग ॥ केणी परि वाफ निवफ करु ॥ केणी परि साधक योग ॥३२॥
[illegible]णीपरे नवसा[illegible]गर तरु ॥ किणीपरे रूबीकाय ॥ अंनपांन नोजन तजी

॥ चेतसमे॥ स मरण स्त्रीनो मनमेगमे॥१७॥ मन चंता दशा पूरा
होय॥ मेमो देइ लेषो जोय॥ एक स हस आठ सत होया॥ लेषोक
री कस्या जू जूया॥१८॥ चंता पर व दन जे कहा॥ दश दाण वांचा
बीजी लही॥ अंगआरत माहा असोहामणी॥ अंगदाह मे चोथी जाणी
॥१९॥ मंदागनी सरीरे होय॥ मूरछा ठ नपत्ति छठी जोय॥ मदोन्मत ते होये
अपार॥ पण केहनी न व माने कार॥२०॥ शुक्र मोचन आठे आठमे॥ प्राण
संदेह ए नवमे गमे॥ जसा स्मा निश्वासा घणा॥ ए दशा लेषे पूरा गण्या॥२
१॥ ए दशा गणा लेषे कीजीये॥ त्रिजी मे मी वलि दाजिह॥ सोह सत्र अठार
८२ सीधांतिक ह्या॥ लेषो करता पूरा थीया॥२२॥ दोहा॥ सिह सत्र अठार त्री ८२
य लत ण॥ दोष कस्या मे न लीण॥ नर नारी जोडी चा लेछ॥ तिजाणपरी
वीण॥२३॥ चाष दाए वेइ डी नीगादनो नहि पार॥ एक संगमे एता कह्या

दा रास्त्रूत ज्यो घरे वदे सोवार॥४२॥ तव सीष वलतू रमम कहि॥ वक्रूपर करी
र लाज॥ कृपा करी मूरूने कहो॥ क्यो कर की जे वाज॥४३॥ चौपई॥ तव गुरू
बोले वचन रसाल॥ सुंण ज्यों सक्रू को बालगोपाल॥ मन मोने तेह श्रूके धरो
ए सूरणी कांम आपणू करो॥४४॥ जेह नर नारी जेहवी मती घणू कहे नव मेह
लेरती॥ जेहवी जेहना मंन मांहि वात॥ जांणे परीपरो लेन्तात॥४५॥ न्तावे सुण
तां गुरू ने पातग॥ तेती वी रहए मंन नदा सुग॥ ए सूणतां मन नरमल थाये॥ कांम
करम ते सवे मटी जाय॥४६॥ वक्रू विध जोर करे मंन मांहि॥ सामॅरी विन समझे
नांहि॥ विषया रस गुरू तारन सकि॥ घणी ग्रथ जोमूष सूब के॥४७॥ गुरू गोरोणी
दोये नेलां रहि॥ ए मूरू तारे मूष एम कहि॥ पंके वस्तर जेप दधु ज को॥ पंके ही मां
हि पषाले तके॥४८॥ जिम धोए तिम लपरे घणू॥ जीये कल जग नू पेषणो॥ ग

पाकतां रकवन आय ॥३३॥ नगनरक वस्तरतजी। कसीकरनीकु काच
कहोतो कोटरमे रक ॥ छोलीते से घली लाछ ॥३४॥ कहोतो देश आरण करूं
नमसी घरलीदेह। कहोतो कर तू बोगहे ॥ जायूतेधरतीछेह ॥३५॥ गुरुगरू
या मनमगजी ॥ बोलेअमरतवाणी। सा कर अमीयतकेनजी। तेहथीअधि
वषांण ॥३६॥ सावधान थई सांनलो ॥ नर नारीएकचंत। सहसअठार जी
यलतणी ॥ वारूकरूवंरतंत ॥३७॥ नोलाशीष समझेनहि। नगनरहि सामार
गिरकानर रहीकछुनही ॥ नही अपीननहि टार ॥३८॥ नेषधस्यामे कछुनहि
कोई तजो अंनपांन। तीरथ नाद कछुनही। नहेंगा कोरके वांन ॥३९॥ अरथे
तजीनावत कहो ॥ बकू परतन परजाल। जोतेरा मंनवसनही। कांइ फेरावे
माल ॥४०॥ मंनराई मंन मेरस्याम। मनकायरमनक्षुर। मनथीमाधवहूररहे ॥
मंनथी होयेहजूर ॥४१॥ मंनलोनी मंनलालची ॥ मंनकामना आयार कतू आरी

॥५५॥ अंनपांन लेवुं एह हाथ॥ गोयम सांमी केम घालो बाथ॥ कहो श्रीगु
रू कोणी विध करूं॥ कुण विधकर तांक निस्तरूं॥५६॥ दोहा॥ जोवन वेस
निरूप स्त्री॥ संपूरण सिणगार॥ आभूषण अंगे वणा॥ कंठ एकाउल हार
॥५७॥ आंगण बालक पसूयानो॥ आहार लेवा वरजाए॥ अंनपान विना
आकलो॥ बहू विध वलषो थाय॥५८॥ स्त्री तके अंन कारण ग्रही॥ पसू नाए
ते जाये॥ रम झम करती संचरी॥ तरुफो बेठी थाए॥५९॥ जोयो तेहनी नजर
कहां॥ अंन उपर एक चंत॥ ओर केहांन वी फरे॥ जोण एव रतंत॥६०॥ एण
दृष्टे तूं साध शिष॥ जो चालेसी सुजाण॥ चतुर वेवारी चंत सूं॥ एमारग निरवां
ण॥६१॥ एह विध जे नर चालस्ये॥ तेहनो भवनो अंत॥ दृष्टी चालजे हमे घणां
तेह भव मांहि रलंत॥६२॥ जिम नर तेम स्त्री जाण ज्यो॥ तेमां हि नहि संदे ह॥

श्रवणे। वचन सूणे जो दुर।। शील वाड थाये चकचूर।। ४९।। नयण कयो स्नेह
मूषह विलास।। बलि र बेसे तेहने पास।। नवर स्या चाले नेणे वषांण।। शी
ल तणी होय निशे हांण।। ५०।। दूर थकी जे आंणे बाज।। ते लाेर हि के मसी
रु काज।। सूणी स बद्ध मंन थाये षोभी।। देसे प्रत न्ह रा न्ह ची।। ५१।। घणो स्ने
क होये वारोवार।। शीयल बली ने थाये चार।। शील तणो जो अरथी होय।।
तोये दरसण मति निरषी जोय।। ५२।। कोएक पुरष एम बोले वात।। स्त्रीने
संग रहो दिनरात।। जो आपणो मन होय हाथ।। तो चाले धेग नी साथ।। ५
का ३।। माहापुरष जे आगे थीया।। स्त्री छोडी वन मो गीया।। ते गां दोष न लागे
९६ कोहि।। जिन वचन कोइ मांने नहीं।। ५४।। शिष्य वलतू मंन करे विचार
एहवनो न वसरे लगार।। जांहां जायु तेहां आगे षडी। पाछे पडु तो सांमी जडी ९६
५५।।

सुरत

परी ग्रेह करे ॥ एनव लेइ चोगणा धरे ॥७०॥ छती से पूराई मलक्ष ॥ पंचेद्री ह
वे आगे कक्ष ॥ फरन्हाने छ्रणाज कही ॥ चक्री सो सिद्धी मेलही ॥७१॥ छती से रश्री
पंचगुणा करो सत एक ओसी मन धरो ॥ यतीयं तणा दशाधरम सु जाण
तेह तणो हवे करु वषाण ॥७२॥ प्रथम गुण क्षमा नो कह्यो मान रहित मा
र्दव गुण लह्यो ॥ सूया लपणो आर्जव गुण होय ॥ चोथे सत्य ते नरषी जो
ए ॥७३॥ क्रोध लोभ नरा ली सुचे करो छठे संयम सबरो धरो ॥ तप सात मे क
रो मन रंग ॥ सगत त्याग करो मत भंग ॥७४॥ आकंच्या संका परहरो ॥ ब्रह्म
चरज दशा मे मन धरो ॥ ए दश लषण छे साधना ॥ जीव तणी करे वेराधना ॥ न
७५॥ एसी सत कर जो मन रषी ॥ बीजा मेलो दाजो वषी ॥ सत अठार क स्या मे
गुणी ॥ मूरु मूरु मन मे क छूएन वणी पृथवी आप तेज ने वात ॥ प्रत्येक वनस

॥७६॥

जाससंघ एणी बीध चालसी तो मुगत रमणी फल लेह ॥६३॥ तवसी
षमन मे हरखीयो ॥ मधुर वचन अतिसाय ॥ जे पाछे पूछी कही ते मरुक
रापसाय ॥६४॥ जिम पूछे तिम र अधिक केह तन आवे अंत ॥ सर्व छो
रु मूरुने कहो ॥ वारुतणो वरतंत ॥६५॥ अमरत वाणी गुरु कहि ॥ सुणो च
तुर एक चंत गणधर मुषथी मेलस्यो ते कह सुं मंन षंत ॥६६॥ अनंत जीव
एणथी तस्या: वलि तरस्ये नरनार ॥ जनम मरणना दूषथी ॥ छोर्म निरधार ते
॥६७॥ जाये कणसण इंदि नुमाये समण धम्मोय अणोणाही अ
न्नछा अगर सह मज्ञीयल सह साई ॥६८॥ चौपई मंन वचन ने काया जोग
एथीर राषो चतुर सुजाण ॥ करत करावत अनमोदना ॥ एतगणा कर जो एक
मना ॥६९॥ लेष करतां नो वे लह्या ॥ सझा च्यार ते आगे कह्या ॥ अहार नय मेथुन ५५

मोली ग्रथ का स्वाजूजूया ॥५४॥ सूत्र सीधांत पुराण कूराण विषया रसमे
कीया वषाण ॥ ग्रथ तके कूगुरु मोलीया ॥ विषयारसना छारा दीया ॥५५॥ कोत
के नर नारी बहु मली ॥ गुरू गोरो णी लागे मन रली ॥ वसणी नर वांचे मन थ
ई सूर ॥ साधरमी ते जाये दूर ॥५६॥ विषयारस ने कारण वली विकथा बोछे
टोले मली ॥ छद चोपई निरासका ॥ रागरंग ने वली नासका ॥५७॥ ए दुरगत ने सा
थे जोर ॥ ए नाणतां दल होय कगेर ॥ ए सुणतां नर सो दल मले ॥ कोमी नर नो हइ
मो कल मले ॥५८॥ एक कहे दामो केम जाय ॥ एक कहि बेगां नासो हाय ॥ एक कहे
बाहर केहा नमो एह सुणीने दामो नीगमो ॥५९॥ को एनर सूतो नदर नरे ॥ रसी
आ तनी हासी करे ॥ एह वात कहो पकरीयलो ॥ सूतो नर तेसां मोन्न लो ॥६०॥ सूतां
एक वहि अति घोर जाग्ये चौद तणो छे जोर ॥ ते कारण नर सूतो नलो ॥ ज्याग्ये है

पतीनीजात साधरए। वीकलत्र होय। इंद्री पच गणो सकू कोय।७७। सत अग
र जे पछे लाएपा। एदना गणा करी मे गएपा। ए लघू ले दू की जीये। वली त्रीजी मे कीदी
जीये।७८। सहस्र अगर एणी परे होय। चूला चूका कहजो जोय। सहस अगर वाळ
जे नरकरी मूळ मूरख मे कछूना रही।७९। नववाड तो सक्क को काहि। श्रावक नरन
री सक्कू लहि एम एणे गणो सक्क मनर ली। सहस्र अठार मेन वसो न्हली।८०। सद्गु
जै रू सुगुरु नै टी काइ। शील तणी वाड़ए कही। ए वचन मे कायो प्रमाण। कसु वरण
वत्ते मली कोण।८१। एह वात नर वि लालहे। अएाग मता ने हइ के दहे। एक क
हजे एत मन्नएु। आजय पर हलो नव स्तान्नलो।८२। कथा कलोल सुणी मे घणी
९५ ए वात मूरु हइरु वणी। ए सुणतां हइ को न लसुं। कोएन न्न एो ते कारणे कसुं।८३।
।शिष पूछे गुरु उतर काहि ते अगपानी कमून लहे। पेरुत नर ने वन्नाणी कूया। ९५

तीहीपणपारनलहस्यो॥ अलप कह्रू बीजू परस्परी। नरनारी सुणज्यो। चेतधरी
॥४४॥ उगावात ते अलगी करो॥ कोमकाज दुरे परसरो॥ आलस मे हलो साहस
धीर॥ एकमनाथइ सुणज्यो प्रवीण॥१५०॥ डाकणी शाकणी सिकोतरी॥ भूतप्रे
त अनेवंतरी॥ षबसपणजाये चलासार॥ जोरगपूणघरहरे अपार॥१॥ जेह्व
राक्षसादेवीवीताल॥ छलचीद्र मंनआविकाल॥ वाघ सिंघ ते होय शीयाल॥ व
शीयर फाटीफूलांमाल॥२॥ वीयलेगजउपरे असवार॥ समुद्रतरीनेपोहछेपा
र॥ वीयलेराजाआवीमलि॥ अगनसे तीतेकोनविचलै॥३॥ कांमणमोहणसु
वगलिजाय॥ यंत्रमंत्र एणथी सीधथाय॥ गढगोवरु रोघण विसराल॥ वायचो
सीने केवमाल॥४॥ सनीपात चोरासीफ्रूर॥ कोढ अष्ट सबजायेदुर॥ रगतपी
तपीडे नवकोय॥ फोडाघोस वाढ नव होय॥५॥ दुष्ट रोग न व आवे तीर॥ सो
[illegible] न होये सरीर। चोरचरड नविघालेबाथ॥ अटवी भूलां लाले साथ॥६॥
धार॥ का

...सणपरस. ... कार ण करे ॥ ॐ णकार णदुरव

मानो छे नलो ॥९१॥ ते कारण विकथा न सोहाये ॥ हलू करता नारे थाय एनण लह्वे ईक
तो कोए मु... कुमति वको ॥ एण पनर थी निह स्येपमो ॥९२॥ चौद पूरव धारिजे ३६
ह ॥ एण विकथा थी पडीया तेह ॥ जिन वचन नी लोपी कार ॥ निगोद मे पोहता नि
रधार ॥९३॥ शीष पूछे मन आंणी नेह ॥ गुरु ने मोटो छे संदेह ॥ आचावस्तार निर
मल नर ॥ वेष विन्तुषण मेह लो दूर ॥९४॥ सरस आहार नो स्त्री नो संग ॥ गीतरा
ग ने सुण जो रंग पूरव वलसु चतमें धरो ॥ कद लगे भोजन मत करो ॥९५॥ कुण त
कारण इन्द्री सुं लरो ॥९६॥ तनमे लूं वस्तर विनचोर ॥ तली आंगली धो जो मत
कोर ॥ कुण मूरुफल कुण थां नकवा रा ॥ ते गुरु ने कहो लील वीलास ॥९७॥ श्री
गुरु बोले अमरत वांण ॥ स्त्री षत्तो काए थाये आंजाण ॥ त्रीयल तेण गुण नो
४७ नह छे ह ॥९८॥ कुकिम नरण आंणी नेह ॥९९॥ शीलतणो महिमा जिनकहे ॥ स्वरप ४७

होय॥१३॥ वछ्छनणीमाता गणो॥ लघुपुत्री वषाण। अपरा मांडणी बह
नगणो। एमारगनीरवांण॥१४॥ एन्हा वहइक्रे धरे। तोसमरणनी सुध॥ मुगत
पंथपरगट हुस्सी॥ जो छोड़स्सो दुरबुध॥१५॥ वेदपुरांण कोरांणमें। बोधन्न
गतजिनमाग॥ शीयलसद्रू कौ वरणव्यो। शीलवडो वेराग॥१६॥ शूली ति
के कमलरची॥ सिंघासण ततकाल। पूरा चीर अषुट तन्ना। छांट पो लन्नर
थाल॥१७॥ केइ मनष ने सुषकीयो॥ केई पोहता परलोक॥ केइ एणथी पोंच
से। नरनारीना थोक॥१८॥ शीयल तणा गुणअनन्त लो। रचना करि विचत्र
नणो सुणोने मन न वसे। ते हुनो जनम अपवीत्र॥१९॥ एह सुणी शिष हरषीयो॥
तन हूयो रोमांच॥ अबमें नम्मा पूरी नइ। राजवका विषास॥२०॥ कंलंजंग
घांरं॥ अबकलजगधावापर तणी। वात करो गुरुराय। परोतसेठके

अ लुंजी स्त्री नितरत सुषथाए॥ त्रास त्रतणो नवी लागे घाय। विष अमृत
होय अतिरत्रा ल॥ नचे अ सुनजरूपे काल॥७॥ पारो धातरियो ण जोइ॥
शीलवंत विन ते नव होय॥ रसकूप ने पोरसोजके॥ शीयल विना सहीन
मलित के॥८॥ कामधेनू घर आवि करे॥ व्यंतर काम काज सही करे॥ शीयले
धरणी होय सुंजांण॥ वैरी बोले अमृत वांण॥९॥ चावल दाल घृत घेवर घो
ल॥ मोदक मेवा मुष तंबोल॥ आसण तुरी अनोपम रूप॥ मांन महोत क
रे ते भूप॥१०॥ जनम मरण ना दुष थी टले॥ शीले सूअ सयत सव मले॥ दे
वलोक शिवपुर अवतार॥ शीले आयुवधे निरधार॥११॥ छ॥ चेला सुषवां
छा करे॥ तो मारग म्हुम॥ दुरगत ना दुषन विगमे तो छोडो दर बुध॥१२॥ सर्व ध
रम उपर मुगट॥ सील कहि सहु कोय॥ नरनारी जे पालसे॥ ते सही सुषीया

।१२७॥ बेहूजण बेले मलीया थोक। षमा षमा बोले सहू लोक॥ बेहू पासे न
रजालीबोह॥ फेर मलपतो चहूटा माहि॥१२८॥ पारवती तव पूछे दीन॥ मूरु
सांसो भांजो जगदीन॥ ए संगला माहि मोटो जेम। बीजा नरत नीचा केम।
१२९॥ सूण पारवती ना करवो ण। कोनुंग परवारी जोण॥ सेठ परेल अने
परधान। बंधव तने चतुर सुजाण॥१३०॥ राजाजी मन करी विचार। गाम नगर नो
सोंप्यो भार॥ आलीवर तण कस्या मन सचंत। पेहरावा गादा यारे वंत॥१३१॥
सेरधान सूमारे काज॥ गाम नगर नो सोंप्यो राज। अन्मारो तांतो तोफजो। चु
गलीजन रांमां न मोफज्यो॥१३२॥ करो जतन परजा नां घणां॥ सहू लोक
कुरे भांमणो। एम कहीने सोंप्यो भार॥ चोर चरफनी लोपीकार॥१३३॥ ना
...माज

४८ एणीवीधचले सुषदुष केरणी परथाय॥२१॥चपइ विनयकरि त्रिसमेनसो
ओलसी त्रीयलसबधमूरु हइरुवसी॥ ओरनांत पूछीतत्ल पात्रा॥ ते
मूरुने कहीलीलवीलात्रा॥२२॥ब्रह्लसनाबेठी कैलास हृदयाचल पा
रवतीपास॥ पूछापूछे कुएार नांत॥ कोइबोलापारवतीनाथ॥२३॥
एक कोयेहापरनी केसीरीत॥ कहीकलजगनारीत॥ कृपाकरीकहोवरतंत॥
मूरुमंनसोनलहोकलजगनीकेसीएकस्त्री वानीबंत॥२४॥ ५९७॥:
परमविलात्रा कैलासमे॥ नरमतिमिरकछूनांहे॥ बेजएामनउमगथई
हावपरदेषएाजांये॥२५॥ रतनत्रयस्रुल ग्रही ग्यांनगलेरूमाल॥ कमर
नादवजायके॥ पेषेमननोपाल॥२६॥ चः एकदीवत्रा रथशंकरवली॥
पारवतीबेठीमंनरली॥ एमकरतांएकनरपेषीयो॥ सुन्यवंतघरधंनदेषीयो॥ ४८

कुयो तेत ले। आपपी यारो नव ओलषे। ग्रनी पातूं [कणी] पर बके।४१। मूरुग्र
जे सकृत रण समांन। करुणा देया नहि कछु दीन।। क्रोध मांन माया मद
नरो। आतवसण ते मंन परवस्यो।४२ मारो बांधो धरो वषार। धनकारण नव
जांणे सार।। लावो र मुष ऊचरे। धन कारण ने दर मे फरो।४३। लूटा लूट करे
दीन रात। मेहला नी न च जांण वात। परधन जांण ते आप नू। जाये ते जांण बा
पनो।४४। विप्रां वांरा लो प्यार ही। अन्या ऊपर बेंगो सही। दुरबल नी नव जो
ण [illegible] सार।। लेतां ने केमे करे नीवार।४५। कांम न्नोग मनं मां हि गमे। प
रदारा सुरंग रमे। आगर ऋजारा मे मेन सोए।। बेगे षत न्नवाई जोय।४६।
छाल छीद्र मता कतो फरे।। लांवो लावो मूष ओचरे। माहरे तो लीधा नो कांम
धषतो रहि आगे जांम।४७। रांम नांम कछु न लवे। फोकट माला कर फेरवे।।
सारण मे हलो फेरो कुट। फेरो को हलू घांणी षोर।४८।। बालद आंणो वेगे

[illegible] साचरे। कोइ अकरनवोनवकरे। लोछ लुचने करन विधरे। वोकान्त
ते सुधा करे। ३४ दामकोमनी पण नहेकमी। परनारीते मातातसमी। सहु लोकनी
पूरे आस॥ षायोषरच्यो करोवीलास। ३५। कोठीनोन व करे अन्याय॥ कामक्रो
धनो फेफेगय। पूरव पुन्य करी भोगवे॥ सुषे समाधे सहु जोगवे। ३६। आले
वरते ण लेषु करी। मेहले पोतू पुन्ये नरी। देदे कार कार कैरै दीनरात। अन्पात
णीनवजोणेवात।३७॥ अंतयमे सुंषा ज्ञाण धरी। धरम राग आगेसेचरी। आ
मण बेसणे मेले हस्ती। करे आरती मंन नीषुसी।३८ देवगंनाते आवेपास १००
नाटक मोफि मंन ठलास॥ परजा नापी हरषे हता। कोम रागस्ये वो भावता।
३९ सुंणपार वती वारो वार। तेहना सूष नो नो आवे पार। एह वात हा परजाण
१०० कलजगनो हवे करु वषांण ४०। राजन्यार च्यो प्यो जे तलो। आघे आकम

ल्गोजा महाना लोपीरीत। जण चाकर सु करे अनीत॥५७ कोय अरदास
करेकर जोड़। तासो वात कहि मुष मोड़। दोम राजा थे लीमे जाये। त्यार पछे
वात ए थाये॥५८॥ एम करतो जई बेठो घेर। पणए तणी ते मांडी पेर। मेल्यो
लोक नगर नो वड़ो। नो नो मोटो ते म्यो सड़ो॥५९ अमकुं आपो अमकुं दयो।
अेतीवस्त अमारी लीयो। करो यो कांम सड़म लीम हुंत। ले सोल वादा करी
सड़ंत॥६०॥ लेयो केहीन हतर केरो हवाल। रूपीये थो अरधा नो माल॥ हाल कलोल करी न्नवपूर धरमत केकी धाचक चूरः ॥६१॥ अ
केपर घर के उझो घाल मंन मे लो मूष वेयण कठोर पापी पाप करे अती
घोर॥६२॥ पर जाने दुष देये ने घणो। जीन्न एक हु केतो न्नणो। मजारी परथई
परवस्यो॥ जांणे रा ह्स्न थई अवतरो॥६३॥ मूष आगल सड़ जीजी करे
हरी आमांहि अनेरु धरे। ए नर वड़ा दुर्षं पांमशे॥ दृष्टे दीसे सातादसे॥
कंब

अनरथक रीउपायो माल

अछे तेपासे
स्फ़ कोय ५४
अह नीसज़
गमाहि रहे
जे॒ग हि मे कलो
लः सबला

करी। तमने मोज आपसु फ़री। एम करतो चाल्यो कुंतवा तेहां। अकरत्ते काधा
नवा।४९। केहने देवानो नही लाग। घरमां दिणी घालेसातेत्राग। बांनणना
ट कोइने आवजो। कभिण तके काले आवजो।५०। एम करतां बेगे चोतेरान
वीनवीते कोदे करे।। लोहार रंगारां कलाल। घांची पेंजारा लखवाल।५१। वज
र नाग सावु सूकाम। करो उतावला जोफोदाम।। फेरतो र गायो चोवट। वेपारी
नोवानो घरे।५२। करेन जोए विसवावीसा। दृष्टी दीठे कांपे सीस।। रातां लोच
न कोप कराल। रेखा तीन पडे कपाल।५३।४६। न्याई पण दुबल अछे। तेहने
न वगणे कोइ। जे॒त के सबलो नें वलीजे करे। तेजायेद्र बोल।।५४।।८४६।
तेहना पापतणो नही पार। ते पण पांचे करो वीचार।। एहवा कूंमि कमाया कुं॥
तेह घी त्रीकम जाये दुर। लोक तणी नव जाणे सार। वलीजई बेठो राज द्वार।।
।५६।।

एम करतां जरा राक्षसी। आवी वेखोम नन नवे वसी ॥ ७२ ॥ एती घरमांहि तूटी
तूटी। जमराजा मोकलीया जोए। दीसे दुत दीसे वीहांमणा। हाक हाक क
रता ते घणा ॥ ७३ ॥ मोटू मस्तक लांबा दांत। रूप करूप दीसे बहु भात। पग
पोलाने पेट लवाल ॥ रूरू मुरू दीसे वकराल ॥ ७४ ॥ पीली आंषने लांबा कां
न। मोदु पेटने कालू वांन ॥ षरूषरू हसे अंग वांमणा। केइ का लाल बाल
सो हांमांणा ॥ ७५ ॥ लोह तणी लाठी कर ग्रही। दुजे हाथ ते का तू सही। एक न
रूा ल्योगा वकी। बीजो वेगो चाती चढी ॥ ७६ ॥ धीरो तूरून वमे रूलू घकी। वे
गे का को दही आंकमी। कृका कृक न्राबद ते करे ॥ कायरो ना हइया थरहरे।
॥ ७७ ॥ मोगर तणी बहु देय मार। लाको छोदा तणो नही पार। वेगा गोली करे
आयार। ले झाचाल्या जमराजा बार ॥ ७८ ॥ एम करतां यो हतो जे तले। जमरा

॥६४॥ दूहा ॥ मूरखनरस्वारथकेताकहूं । केहतांनांआवेपार । पापकुंरबनेका
रणे । नवजांणे परस्वार ६४ सांजसमेपंषीमले । तरुपरलेवीसरांम । भोरभ
ये दह्रुदसेगया । कोइ कहनेनआवेकोम ।६५। मूरषपापकरेंवणो । स्वारथ
करे काज । दिनदसाआबावलसवा । तूकोईआवेबाज ।६६। पुत्रकलत्र
धनकारमो । तुंपण तेरो नांह । आरसीधीजमरोफरे । स्वयेनीचतोकांइ ।
।६८। पूरवपुंन्यपासधीथी । उतमकुंलअवतार । मूलगमांवीचालीयो । को
यनआवेलार ॥६९॥ चउपई ॥ तवराजामंनएसीवसी । नांनोमोटोघोन्हा
गसी ॥ बांध्योपकड्योगाफोकस्यो । तातातवाउपरलेइधरो ॥ ७० ॥ लूटयू
घरनेषोच्योघणो । दायुंदूषतेकेनोन्हणुं । परजानातेपम्या सराप । गालोपोलो
कांधोआप ।७१। धनसघलोराजाघरजाय । चाल्योमूरषवासीषाय ॥

उदेन होय धरम। आगे बोहला बांधे करम।।८९।। एह वात देखी सुणी। पार
वती दुष थाय। रथबेठां बेजण वली। फरि कैलास जाय।।९०।। तव पारवती ईश्व
मंन। करे मनमे विचार।। आये वीतो ते कह्या। परन्तु नहीं लगार।।९१।। एम केती
पर कह्यो। हजी न आव्यो पार। सावधान थई चालसे।। तेहने अलप संसार।।९२।।
विषयारस नो नो तणुं। जे ओरु स्त्री त्रक। सिध गत मारग चालतां। कोए [illegible] नक
रे हटक। राय पुछे मननी रली। मरु मन न्तयो आणंद। पाछे नोम रहे जके
के से कह्य जिणंद।।९३।। नोम तणा लोनीज के। कुलमे करे आपार। पाप करतो
नवौ [illegible]।।९४।। मंबकरे धन सव हरे। जिम तिम राषे नोम। तनषो
ए तें कारणो। न्नमे ते आगे जांम।।९५।। न्नव आगे फलते हनो। कांये ले हि नर नार
क हि माधव मेलो हस्ते। केन्नव फो कट हार।।९६।। कांक्ष दिन कास्त समे। करुणा

गणो
रुघे बह्य जे
माल

नाम रहे
णा के का
रणो आर
न कर आप
र पाप करता
नवहरे नव
मोन जनका
र।।९७।।

जोबालीत तले। रेसुरष सुकरतो काज। स्वामी केहतो आवे लाज।१७। लोकोमे
ने कीया हवाल। फोकट लूट लीयो को माल। वरतलईने ज्यां घणा। तग
त चुथा बोजण तणां।१८। एहन्तरम लोकी कहि जोय। नीहस्ये जोतां मारग
दोय।। धरमतणो न वजो णोमूल।। घोळ वरस्ये घाधीधूल।१९। आंबतणुं जु पालो
मूल। मूरष रोप्यो आक धतूर। एहने लेई नरके धरो। तमामे सकत होयेतेक
स्यो।२०। नत्पर कोड़ लाष तेवली छपन हजार कोड़ तेमली। ऊड़ो माठो
तां दुष सहि। चंद सूरज लगे त्यां रहि।२१। ते दुष नो नव आविपार। ते तो पछे
कस्यो वीचार। तेकारण हसा भन करो। एह जाणीने थापर हस्यो। सुणपा
रवती कल जग वात। एहवा करम करे दीनरात। ते दुष थो काले ने कस्ये। केआं
१०३ धोकेटूटो हस्ये।२२। के कोठी के मूरष वांमणो। दाली डीने दयामणो। तेहने

कहि। करणीसारु सुषदुषलहि। लोकबक्यासारुनव होय करस्येतेनो
गवसेसोय॥३॥६ हे॥ हाथीचडीएग्यानके। देयादलेचोफार॥ स्वान
रूपसंसारसवि॥ नुस्सरहोऊषमार॥४॥ जीवसह्जीवयुगमे॥ म्रयुनबोचे
कोय। दयादानथीसूषहस्ये। हस्यायेदुषहोय॥५॥ कौलीतुंजरएकहि
घरघरकेवलरोम। ताकारणतुरुनेकह्य। तूकोविणाशेकोम॥६॥ अना
दीअनंतभगवंतको। सुजसवजरकीलीक। भवसायरबुडतातेतारण
तेहतीक। उपजतवणसतवारनहे। ताकोजसरंगफीका॥ पंचदिवस
फूल्योफरे। कीरतअथीरअलीक॥७॥ थिरनरहिनरनामकी। कथाज
थ्याजलरेष॥ एतेपरभीप्पामती। ममताधरेवसेष॥४॥ वीपद॥ मिथ्या
मती भरमधरस्यदीव॥ कुगतीमांहितेपाफिरीव। वध्योवहिआगेवहि

जलै

मोल

ज

दे समंत। सुगुरु नाम निरनय करे। भवीक जीव के हेत ।१५९। जीव दुवि
धसंसार मे। अथीर रूप थीर रूप। अथीर देहधारी अलष। थिर जगवान सरू
प ।१६० पथ६ अवीनाशी जीय देह विनाश। जोला भया तब नाम विनाश
देह धरी तब दीनो नाम। जात जात के हवाणो नाम ।१६१। करी पाप ते कुगती
गीयो। पाछे जश बोले कहा भयो। पाप करे तो पोते सहे। जस वाला कोय वा
टन [illegible] लहि ।१६२। सगात के सहु षावा मलि। दुष वांटणा पण कोन व भले।
जिम वृक्ष पात फूल फल लाग। पंषी लोक न लहि भाग ।१६३। रानदा वक्षार
षवाल करे। स्कंद मे हली पातु न धरे। पात फूल फल लागा गांम। कोइ न आ
वे जांम ।१६४। तिम सष वांटी जासे सहु। दुख आपे भोगवसे बहु। पाछे
१०४ बूरो कहि सहु कोय। आगे देवतणा सुष होय। पाछे जलो भलो सहु १०४ आदे

॥१६॥ बाई बांमण नर मली । सो च करे विचार ॥ मांन मांने सो नांम देये । कुणाप
रुषकुं ण नार ॥१७॥ जेसे नांमे बोलावतां । नांम धरे सो जाण । जोयो सेयां णे चे
तसुं ॥ फोकट करे वषांण ॥१८॥ नांम अनेक समीप तुझ ॥ अंग रे सव गेर ॥
जाकुं तू आपण कहि ॥ सो भरम रूपी ओर ॥१९॥ सवाइक केसी संनाल
लोट वारुणी पलक ने नगोलक कंपोल गंज नासा मुष श्रीन हे ॥ अधर
दशान होठ रसनाम सुढा ताळू घंट काच कूष कवकं धां ठर लोन हे ॥ के श्री
षकूरी लोजा कर नाली । कुंच पीठ पेट अंगुरी होय हाथेली नष जंघा घलमो
न हे ॥ नित विचरण रोम एते नाम अगनि केता मे तू विचार नर तेरा नांम कुंना
हे ॥२०॥ दोहा नांम रूप नही जीव को । नही पुदगल को पंथ ॥ नही सो लाव सं
जोग को ॥ चकर भरम को लंक ॥२१॥ सुणो सेयां णे चेतसुं । मां करो मान गुमांन

जोय॥नोमरहणकुंतनधनषोए॥१०॥वारवारकहेमेन्नागवंत॥जगमे
रूमोटोरूधंनवंत॥जगमेसदाकालरहोनोम।एसीममताञ्राणोजीम
॥११॥तेहनोफलन्नोगवेविस्राष॥जोनजोनमेनोमञ्रनेक।ञ्राकथ
नूरानेलेबका॥बाउलबोरनेषजमा॥१२॥ञ्रांबारायणकेहलकेर॥के
इमधुतुराकेइजेहर॥हेगयगधासीहसीयाल।कोएञ्रीयलाकोए
करेञ्रपाल॥१३॥गायन्नेस्रपंषीनीजात।सूरमानवछेनवरजात।कुं
एसुषीया।कोएदुषीयानाम।ईमजाणोसंस्रारीनाम॥१४॥नामञ्रने
कलहिजगमाहि॥ञ्रलषपरुषसुमेलोनोमै॥रस्चणदेवदमोद हि
नहि।नवनवनरकामारस्रही॥१५॥दोहा बोलीजेवक्तवकेसू
१०५ णतनांमकीहाक॥सहीसबधसदगुरुकहि॥एहन्नरमरूपधमाक १०५

मन विग्यांन मंन धरे। ए नव गुण पुरण जब होय॥ नव सिर तब गलि घाले सो
ये॥३०॥ ऐसे गुणे ब्रहमण जे होय। तरण तारण समरथ होय॥ अलप भेद
बोलण नी कहो॥ वाणरजी विलास थी लहो॥३१॥ दु० जो निह स्पे मार
गगहे॥ रहे ब्रहम गुण लील॥ ब्रह्म द्रष्टी सुख अनुभवे॥ सो ब्रह्म णपर
वीण॥३२॥ चोपै क्षत्री यथा। अष्ट कर्म को तोतो तोडे। इंद्री पांच तणा
ग मद मोडे॥ ग्यांन षडग क्षेमा कर षर्मो। क्रोधी तस्कर न आवे नेडो॥३३॥
अन्या तणी वात न वर्जाण॥ ब्रह्म देव अंतर पहिचांन। मंन मारे ताको फर
मारे॥ अंतर नोम तके रषवाले॥३४॥ दोहा क्षत्री घर कुसदा॥ वैर करे नही
कोय आप समाण सकु गणे॥ साचा क्षत्री सोए॥३५॥ जो निह स्पे गुण
जाणके। करे सुध विवहार। जितेसे न्या मोह की। सो क्षत्री न्रूज नार॥३६॥
...ठ्य कर्म कपाट ह षोल के॥ करुणा गादी जार॥ आगम अरथ पले ग्रहे॥

देह मगनम मन वसे अत बाधक बास ॥२३॥

॥जे नाम मदे मो हार हा ते कल जग मे स्वान ॥२२॥ रामभजन को आलसी
जस कारण धन नाथ । कही सुगुरु संक्षेप ॥ जे समजी ने सर दहे तेनरा स्तु
रनर खेप ॥२४॥ तेवञ्चीष मेन आणदायो ॥ सोणी सदगुरु की वाण ॥ मुरम
न जा सो उपनो । तेन्नाजो नगवान ॥२५॥ वरण च्यार ते कहो कहा ॥ मुस
लमान क्यो होये ॥ वेद कहा जो त कहा ॥ वैष्णव केसे जोये ॥२६॥ कुण ल
डुण कुण चालते ॥ कुण करीया न होय ॥ जे से ते के सब कहो त समझ
ऊवो मोहे ॥२७॥ ब्राह्मण चौ॰ मांत दांत व्रत पुराण करे ॥ पूज कनेद क समक
बधरे । जति ग्रेह के थोमो रहे ॥ आगम अगोचर मई मोनर हि ॥२८॥ क्रोध लोभ
राखी सोच करे ॥ आपपीयारा सम करधरे । जतन करे जकु जीव नाकरे ॥
कंचन पाथर समकर धरे ॥२९॥ देमादयाद मतपसा करे आचार ज्यां

नहिं दोझे मन तुषार। देव गुरू समजे नही ते कोपा विपार॥४५॥ धरम ध्यान
समझे नहि। नेहे लिह जिनमाग। सुगुरू वांच नमाने नहे। ताको को आन्ना
ग॥४६॥ जो मीथ्यामत आदरे॥ रागद्वेग की खान। विना विवेक करणी करे॥ सुद
करण सुजांण॥४७॥ च्यार भेद करतुतसो॥ ऊच नीच कुल जांण॥ उर करण शो
कर सवे॥ जामे शीत प्रणाम॥४८॥ नामें चोको नहि; करणी नीची होय॥ ता
करण तुरुने कहू॥ तुरु देवी चारी जोय॥४९॥ चौपइ॥ एती वात तनि स्पे जांण
जोयो वेद पुरांण कुरांण॥ ऊच नीच कुल स्यु मत जोय॥ हर को भजे सो हर
को होय॥५०॥ मोशलमांनयुक्त आदम पीर कें बरजके। अतर पाक रहे सदी
तके। न लये वाज हरांम न षाय॥ परनारी सें वजांणे माय॥५१॥ नाष्य तके
नर सुधां करे॥ फरजन वेरी स्रम कर धरे॥ नहे जीजीयो नही जगात॥ भुजनप व
ना

...विचार ॥३७॥ चे तनमेवांण करी कायकाढे ॥ परका दोष तिकस
३ वगामे तनमन नेताकमीतोल रामनांमनवजायेन्नोले ॥३८॥ गुण गा
हक सेती बोरावे बारवूंत करियांणोन्नावे सत्यसबद तेकेमुषन्नाषे ॥
अशुन्न वस्तरें आंकुलता नांषे ॥३९॥ दोहा पेर पसारो छोरुके करे आंपणे
काज समकीतगुणने सारवे ॥ छोरु कुलकीलाज ॥४०॥ पापकरतो घरह
रे ॥ अहनीस्यर हिपोशाल ॥ एसा गुण जामे सदाः ताको कहो बकाल
॥४१॥ जोजांणे व्यवहार नय दृष्टी व्यवहारी होय ॥ सुंन्न कारणी सोरमीरहे
वैश्यक हावेसोए ॥४२॥ अथ षोटी वस्तपलेग हे ॥ रुगमोंहि दीनरात
हंसाकरतो सूषलहे ॥ देयातणी नवबात ॥४३॥ देहमगनमेनेतरहि ॥ पुत्र
कलत्रपरीवार ॥ धधातुरधपतो रहे ॥ त्रष्ना नो नही पार ॥४४॥ अंतरदृष्टी जागे

उहीपढे कतेब॥ एकवस्तके नांमदोय॥ जेसे सोन्नाजीव॥८५॥ तनकी दुवधा
जेलपे॥ रंगबारगीआंम॥ अंतर नयणे दीषीयो घटघट केवलरांम॥८६॥ छे
द यथा चौपइ मोह वेलकी जड़ उषाले॥ दश लक्षणी दशामूलो न्नावे॥
केद्रप मन सेती मन मारे॥ ध्यांन अगन सेती लेई जारे॥८७॥ समतपांनसो
तेनर पारीषावे॥ अजरांमरत पद पावे॥ कर्म रोगकी प्रकती आवि॥ जथाष्यात
उषद फरमावे॥८८॥ उदेगतीनीनाड़ पहिचांने॥ साचावेद मोरमेन न्नावे
पंचवरतका षारषलावे॥ उदेकरम गांठ गलीजांवे॥८९॥ क्रोधलोन्नटाली
मंन गाले॥ बारवरत विधधारणन्नाले॥ ग्यांन गोटीका दृष्टा चूरण॥ साचावे
दन्नयाए पूरण॥९०॥ ज्पोतक यथाचोपई॥ लगन वरत मनमक्रतशास्त्र प
उग्रेह न्नार उतारे तात्रा॥९१॥ क्रोधछेद टीपणां घरे॥ लोन्न शनीशरतव
कर

तानजवरोनात ॥५२॥ मारवचनमुषथेनवकहे ॥ रातदीवनानरफरतोरहि
अलषपुरषनीतहइफेथरे। तिनवगतबंदगीकरे ॥५३॥ दोहा ॥ फरकरणीफर
परमगुरू ॥ फरकरणीमिस्मार ॥ षोजीफरेसोउगरे ॥ गाफलषाएमार ॥५४॥
॥ चोपई ॥ मोसालमानमूसावेआप ॥ सत्यसबुरीकलमांपाक ॥ षलीनछेफे
फलीनषाए ॥ सोमुसालमाननस्तकोजाय ॥५५॥ दोहा ॥ गईवस्तसोचेनही
॥ आगमचंतानहोय ॥ रोजीलषीमीटेनही ॥ बीजतस्याफलहोय ॥५६॥
जेमनमूसेआपणा। साहेबकरुषहोय ॥ ग्यानमूसालागहीटके ॥ मूसलमा
नमेहीसोए ॥५७॥ एकरू पिहिंदु तरक दुतीदंशानहेकोए। मनकीदुविधा
मानके ॥ नयेएकसोदोय ॥५८॥ दोयेनूलेनरममे। करेवचनकोटेक ॥
रामरामहेदुकहि ॥ तरकसलामआलेक ॥५९॥ एनकेपोस्तकवांचके ॥

य

१०८

राग वषांणुं ॥ दुनीयां रागत के सब फीका ॥ वैरागरङ्गा लागे नीका ॥९३॥ धन
सगलो जगपोते पायो ॥ वैरागरसजाकेमन न्नायो ॥ सरागसुनवसाजो
कीनो । वैरागी ताकारण दीनो ॥९४॥ दोहा ॥ तिलक तोष माला [illegible] । मती व्रत
मुद्रा सूतचाप । एलङ्गणसु वैष्णव ॥ समजे हरीताप । जोहरि घर मे हरी लषे
हरीवांनो हरी बोये ॥ हरी छिनर समरण करे । विमल विष्णु वसोए ॥९५॥ सु
गुरु वचन सुणे थकी ॥ गयो नरम सब न्नाग । चितअवनासी मोहि रह्यो
कुमत करे सब त्याग ॥९७॥ नांम लीये नवरा चीये । गुंणराचे सङ्कू कोय ॥ एक
राजा परन्नात को ॥ दोजीराजा नरपत होय ॥९८॥ एक घर जाके रहे ते घर दुलु
त होय । एक घर बसे जो कदी । त्याग करे सङ्कू कोय ९९ । मायगाय नो दुधजे
लीधे पंफपोषाय । पय आक थो हर तणु लीध जीवत जाय ॥१००॥ नोमेमाधवसङ्कू

धर

उत्तरे॥ धरमधजा पवन निरोध॥ न्नम बादल दिन्ना करे विसोध॥ न्नएगा
रवनो करे वीचार॥ सुगुरु वचन की अमृतधार॥६७॥ सहज चड़ गरस्य
डी चोरु॥ पंचदी नांमान मरोरु॥ मृषचंद्रमा ग्रारिरेगलो॥ ममताछोरुं उल
फल्यो॥६८॥ नव रस रूपत्र ह पेह चांन॥ बार राग्नी न्नावना मांन॥ से
हजे सुंकर जोय॥ ज्योतीकरायकहावे सोए॥६९॥ वैष्णव यथा चोपई॥
ग संवर चांकेत के करसाहवे॥ राग सोई वैरागत्र्या लवे॥ जाप अजपा अंतर न्नावे
अविनासी कुंलके गुण गावे॥७०॥ क्रोधादीक सुं प्रीत न जोरु॥ पंचदी कामों
नमरोरु॥ एतेवजाके वस होय॥ वैष्णव नांम धरावे सोए॥७१॥ अंतर ली
१०९ नकंटमाल वणाई॥ पाराने कन छ तरे न्नाई॥ न्नगको अंत तिके नर कीनो॥
न्नगत नाम ता कारण दीनो॥७२॥ दोयराग जगमांहि जोण एक सरागवे १०९

कुले लहि अवतार॥ कुंण कष्ट आगे सहि। ते गुरु कहो वीचार॥४०॥ गुरु
कृया वलती कहि॥ सुण शिष रुदे मझार॥ आप आपणो मन थकी। आपे क
रो वीचार॥४१॥ सुख दाधे सुख उपजे दुख दाधे दुख होय। एक वार दुख जे दये फरी
दुःख न वले सी सोय॥४२॥ आन्त वणीं न वलछे। आगे स वलस हास। स
वला न वली। जब हस्ते तब वेर लेय से गिरा वावी त॥४३॥ जोशी षसुण वा
धं त छे। तो कुल का कबका छो कड़े। धरम पंथ पर गट हसे। न कर पीयारी होड़॥४४
॥ कलजग मे कुगुरु घणा। जे स्वारथ के मीत॥ धर्म पंथ कंठ हकरा॥ और नी
हस्ते करे अनीत॥४५॥ एक मना थइ सांभलो गुरु को कहो जीणंद॥ वसणी
नर दुख पांम से॥ पानी लहि आणंद॥४६॥ चौपाई॥ कंद मूल नो करु वषाण॥
सुणो सन्त सहु मेह ली मांन॥ स्वान मास तेरा तो जाण। लहण करे ते अजाण
घरा

कहे करणी करमे फेरे॥ एक मस्त के मुगर धरे॥ एक घर र मारे टेर॥७१॥
परजा पत सरूप को कहि। मन नव लहि बीचार॥ एक घर गेय वर गुजता। एक
घर गाधाचार॥७२॥ नाम थकी नवनी स्तरे करतुते फल जोय॥ चतुर वीचारो
चेत सो बीज तस्यो फल होय॥७३॥ एम आगे केना करूप॥ जीन्न एक मूब मोहि
कलजगनु कारण एसु। नामे सरूपू जाय॥७४॥ सारूप नाम सरूप को कहि। एतो
मूरु न सोहाय। एक नर बेसे पालखी। एक राजा छोडी वन जाये॥७५॥ सूर कहि
सुणो मानवी॥ को मत करजो रीझ॥ जेसी गतते सी मतनो गते वीसवा वीझ॥७६॥
॥ तव शिष मनमे हरषीयो। सुणी वचन रसाल॥ मूरुमेन सो सो नुपनो। न्ताजो
दीन दयाल॥७७॥ शीष पूछे स्वामी कहो। नइ अन्न हवीचार। केदमूल कुं
णपाप पछे॥ कुंण पोहचे नरक मझार॥७८॥ आन्नाव छीनी कुंण गते। कुंण

११०

करे

अलष। मनसा देस देश फिरे वे। केणा न जाये परष॥४॥ नाळ देतां काय कोः
जिनर करे उफांऽ॥ जोनजोन मे दषस सहि॥ नवर थास्ते नांऽ॥५॥ नाकू देतां स्य
दकुं जे नर नेर नार॥ परभव ते दूषीया हसीः पामे भवनो पार॥६॥ चोय
इा॥ लूणी जेरा षेव ऋीवार॥ विगस्या विणाधरे आपार॥ सोल पो हर उपर दी
हीर हि॥ त्रिरु दिन पूठे कीला कहि॥७॥ लुणी दोय घडी जब थाय। जीव अन
ता तेह ज भाय॥ मूरष लोक न जाणे ओस। आगे करम बंधाये कसु॥८॥
॥सो नवल वछ मूरु एन सो हाय॥ आलस कीधे बरु दूष थाय॥ नरना
री बरु रामे जेह। करु पाप सुणा जो हवे तेह॥९॥ आगे भव ते विधवा थाय। केस
ष ते हने न दये नाय॥ कूष न फारे न होय पूत। जो फारे तो बेरी जोत॥१०॥ के दासी के नि
रधन वास॥ रोग न छोरु तेह नो पास॥ घणु कहि तो कछु न वणो कष्ट करे तो
... स्या दकुं ः नांवार जे नर नारः परभव ते सु षीया हि सीः पामे भवनो पार ६४

॥९४॥ धोलूजवूकछेसही ॥ ओदव पूछेगा कोरकही॥ पीलूगर्दन्तनीलोरा
य॥ कालूकागतके जेषाये॥९५॥ उदरमांहितेष्टेजेह॥ तिचीगतके नर
केतेह॥ दांनपून्य ते निरफल थाय॥ मंनष जमारो फोकट जाय॥ जनर लागा
जीन्यायाथ ताको मनक्यो आवे हाथ॥ घांत करी चाले कातली॥ हिंगतेलने
स बरस मीली॥९६॥ भोजन करतां लागेगली॥ रसीया नर कहि ला बो वली॥ मू
न वि षठतरतां लागे वार॥ बलीजरी ने थाये छार॥९७॥ तेतो सरूपे रचाणे सही॥
जीन्या वसते जाये वही॥ पण जीन्याथी बरू दूषसहे॥ एण जीन्याथी सूषनव
लहि॥ एण जीन्याने कारणे॥ ऊचनीच अवतार॥ जीण एक सुमने कारणे
कोयन पोहुचे पार॥२॥ जिम बीज दीयो हमालशिर॥ परवीदीनो दाम॥ बोजभा ११२
११२ रफिर बाहरो प्रचन को नहि कांम॥३॥ तिम कायारी पोठ सुं बांध्योदेव

सोसोन्नोजोन्नगवांन॥शरीर घरछोमीछालीया।कुंण मार गषई।नेहाली
या॥१८॥ कोएक हे मूष थी निसरे॥ नयणथकी पियांणेकरि॥ कोएक
हि कोनिवहिजाय॥ नाके थइने स्वे कसे नयणथकी वाय॥१९॥ अधोद्वा
रपंथकहि।चलेः एहबोल मूरु कोजोवले॥ केमपूछे श्रीगौतमस्वांमी॥
कोई उतरदाधो श्रीरांम॥२०॥ कृपाकरीने मूरुनेकहो॥रुदेकमल थीराजे
लहो॥ कुंणग्रथथी गणधरकहि॥ मूरुसंन्नलवा उलट थीइ॥२१॥ लोक
लवेतमूरुनसोहाग॥ राजकहोतेन स्येथाय तेकारणमूरु करोपसा
य।सोन्नलवामूरु उमगथाये॥२२॥ दोहा अमृतवांणीगरु कहो।सोन्नल
वचएकेचंत॥ मूरुनेपण।श्रीगुरुकह्योतेकेसुस्युंणमंत॥२३॥ वांणाअं
गनेवषे।गणधरकहो वीचार।अलप विचारकरुं स्योणो॥पणग्रंथेअ

एनवमले ॥११॥ एहवुं जांणी राखो मती ॥ नही तो म्हही जासो कुगति ॥ करम्येते
भोगवसे सही । एह वात मुझ श्री गुरु कहि ॥१२॥ आय सवारथ मलीया सहु
माय बाप और बेहनी वहु । स्वारथ लगे सनेह सहु करे । नही तर एदस मन
होया फरे ॥१३॥ माय बाप जे पासे हता । घरणी बेटा मंन भावता । वेरी ते अ
तिवा लाग्या छे ॥ बाला ते मुझने सोहाय ॥१४॥ वसमो रूप जोयो संसार: बेह
नी ते घरं नहीं छे नार ॥ जात जात सब मलीया पूर । कोई आवा कोई आ कथ
तर ॥१५॥ ते कारण सहु को कारमूं ॥ एह सहु जांणो सोहणा सम ॥ केनी मा
या केनी आथ । अंत समे कोय न आवे साथ ॥१६॥ आगे होय नर केरस्य ब
ही ते नर गोता खासे सही ॥ जीवत के परमसर सही ॥ एह वात मूझ श्री गुरु
ये कही ॥१७॥ जीवनेकलानी वगत ॥ सीष पूछे सब मेली मांन मुझ

११२

सांभलजो[illegible]के सुतेवखांण ॥३२॥ चौ पगवालोतेनरकेजाय ॥ पेहलेआदसात
मेसमाय ॥ जेहनेरुदेय देयानहीरती । करिपापपोहछेकुगति ॥३३॥ जोघथ
कीजोतनीकसे । गततिरयंचेतेनरवसे ॥ प्रथवीपांणीवहनिकाय ॥ दोयव
नसपतीगतमेजाय ॥३४॥ चोपगपंषीजलविगलदेह । नजघरउरपरक
होजीनंद । जोघतणोएमबोल्योछेहसी । नानतणीगतहविकेहसी ॥३५॥
नरनारीअनेवेदला । पनरत्रीशनामजुगला । छपनदीपअंतरजेनरा ॥ सु
नासुभकरमेतेपरा ॥३६॥ सुभकरमथीउचोजोय ॥ असुभकर्मेथीनीचो
होय ॥ दशमाध्यनतणीकहुवात ॥ कोकेहनीमतकरजोतात ॥३७॥ व्येतर
भवनअनेजोतिका । परमाधामीअंजोतिका । कलपसीविमानलोकांत । ग्रेय
[illegible] अनुतरहुत ॥३८॥ एहजातदशदेवनीकही ॥ करणीसारुजायेवही ॥

रथअपार।२४। अनंतसगतछे आतमा तिंकेमनी कसेबार। चौदलोकएक
पलकमे:फरत तनलागेवार ॥२५॥ अंनतवलआदेअछे सकत तणोनहि
पार पूदगलसंगेनबछे धर्मकरतांहार॥२६॥चौ। एकंराहछेपगनेतले
परमहंस थइनीकले॥ जांगथकीनीकाले जीव॥ एहपंथएह चालशदीव
॥२७॥ त्रीजोपंथछे नान्हनो परमपुरषचाले अकमनो॥ नषशिषसिकेलि
छलेहंसते बालेवेश २८ परदेश॥ ॥२८॥ रोमरोमथकीनीकसे द्वारपांचमो मूरुमे नवसे॥ एपंचपंथ
एजेनवरकेहा॥ सूत्रसिधांतथकी मेलह्या॥२९॥दोहा तवशिषमनमेहरखी
यो ध्यंनाम्ब्री गुरुनीवांण। रुदेकमलसीतलन्नयो सुणीएहवषांण॥३०॥
वलतूं शीषन्नणीएसुं॥ वातकहोलवलेश॥ कुणमारगथी कुणगती करे
जीवपरवेश॥३१॥ विचारीवलतुकहि। श्रीगुरुअमृतवांण॥ संन्नासहूको

परहरो। अलप आहार उघ मत करो॥४७॥ रहोए कलां उदास। मोह मयाए
नाओझो पासा॥ आरत रोद्र ध्यांन मत करो॥ कुंल काठ बकात परस्परो॥
४८॥ मांन गुमांन तजो अहंकार॥ शीतलर होतजो झुकार॥ राग द्वेष उनमू
लो धीर। हास्यी नीमत करजो वीर॥४९॥ जीवत एणी नित जयणा करो॥ विकथा
च्यार तके परस्परो॥ सुष दुष बे मन जांणो एक॥ पूज कनंद क द्योए विवक
॥५०॥ कंचन पाथर सम कर धरो॥ पठणा गुण णास व परस्परो॥ सेहासए
मन रहो उदास। मन मत धर जो के हनी आस॥५१॥ मूल चाप द्रढ आसए
करो॥ सिधासए ध्यांन मंन धरो॥ चंद चढो सूर ज उतरो॥ सूषम एपूर
चंत मन धरो॥५२॥ सोतथ इने समकीत धरो॥ रांम नजन त्यार पछी करो॥
जाप अजपा सू मन धरो। दोये अक्षर नी निरनय करो॥५३॥ चितन सन मूष

दयोच्चाव जे माहि जसो तेथ्यो न क जड़ी वासो वस्यो ॥३९॥ रोमरोमनो कक्र
तेवी चार॥ सुणो सीयाणो रुदेमजार। जो तजो तमे न्ने लीन्नइ। क्षुन्न वास नत्रा
वेस्य हो॥४०॥ चोद लोक उपर कोकहि। मुगन जीव तेथान करहि॥ ओरन्नागोनी
कोकहि आणगमतो रुइफे देहे॥४१॥ चउद रजू उचो लोग जोये। तीनसेतेतालीसहो
य उपरअथ फेरए तो कह्यो॥ नषशिषमेते व्यापीर स्यो॥ वचन सेयोणोमेल
ह्यो॥४३॥ दोहा जोएपू स्तूएपूतके कल्के। कोमत कर जोरीन्ना केवल वच
न तके षरो जोणो वासवो वीनो॥४४॥ लोक बोकनामूषथकी ते कीमजाणु
साच। मूरुमनमे एसीन्नइ। षरा जिन आगम वाच॥४५॥ पापड़ी तवत्रीषबो
त्यो। इरुफे हस्यी॥ एह वात मूरुमन मे वसी। श्रीगुरु मूरुने बोल्या षरु॥ कुंणमारगथी
२२४ नीसरो॥४६॥ इन्द्री पांच दमो गुण वंत कोमक्रोधनो आंणो अंत। त्रेष्ठा तजो लीन्न

मरणमृत्यु
पातलंपरथा
कारतणेअ
कारतेहाजी
वपरारको
॥४३॥
घ्री

११४

इरिस्य नरी। तपमे वाप रधांन। शील सलील अति शीयलो। संयम भाग लपा
न॥ ६२॥ गुपत अंगपरकासीया। वणपोस्तक नीरवांण। अकथक था मूष
नाषीयो सुरता आप सुंजांण॥ ६३॥ अदभूत गुणरस्सी यामल्या। अमल वि
मल रस प्रेम। भगत रंग मो हि छकरह्यो॥ मनंचा वाचा नेम॥ ६४॥ परम जोतप
रगट नई लगी होली की आग। आठ कोठ सब जलि बूझ्या॥ गई तताई नाग॥ ६५॥
प्रकृती पचासी लगरही। वचन निरन्तर सोय। नाई धोई उजल नये। फरि नव
पलेसोय॥ ६६॥ चाप॥ आठ कर्म सुइणी परे नमो। वस्त्र एक नो पगणो पग्यो
ओर नांत न हि सीधल गार॥ पठणा गुणणा लोकाचार॥ ६७॥ एह पंथ नर जेह
चालसे। भगत मो हि ते वासो वसे। एह सुणी मत करजोरी न्हा॥ एह पंथ छे वीस
वा वीन्हा॥ ६८॥ कोइ अनुभव कोइ इष्ट वल नाणू। कोइ परवचन थकी मे सुणू॥

रहाष वीण॥ अंतर द्रष्टी धर रहो लेलीण॥ श्रवण सुण जो अनहद नाद
लागो न्हरम गयो बाष वार॥५३॥ ब्रह्म अगन अंतर पर जली करम का
ष्ट जाये सब बली॥ पुन्य पाप दोए की धारा ष। पुदगल ते मन जाणो षाष॥५४॥
लेग वाच नातेग लगई॥ अन्तर दल अति निरमल न्हई। गुण ते रमो चहुंयो। त
सहाय। मृगतरमणी सुघाली बाष।५५॥ दुहा॥ सुरत अगन ज्वाला जगी॥ सम
वीकसत कीत नांन अमंद। रुदे कमल लूं न्हयो। प्रगटो सुज स्वम करंद।५६। शिव सागर सू
ष उर॥५७॥ विगष्य नात व्रनूं ता मही। जप्यो जपा रथ काज। जंगल नौमी सो
हामणी। नृप वसत के काज॥५८॥ नव परनति वसुधा न्हई। अष्ट कर्म वनराय
अलष अरुपी आतमा। वेले तवण साय।५९। राग वेराग अलापीयो। न्हाव न्न
१९५ गत बहूतांन। रीझे परम रस लीनतो दा दन्ना विध दोन॥६१॥ देया मेग १९५
ने

रूप चेतन। अनंत ग्यांन। अनंत बल। अनंत वीर्ज। अनंत सुष। जगत्र स्व
रूप। को दोषएण हारो हुं। शुध निर्मल। स्वभाव मेरो। शुभाशुभ रहि
तो हुं। निर्मल सास्वत पद मेरो। असंख्यात प्रदेशो हुं। लोक प्रमांण
हुं। निराबाधो हुं। ज्ञान समुद्रो हुं। टंको त्कीर्णो हुं।। टंकावेएण नीपनो।
सास्वतो हुं।। अरूपी चेतना मेरी। स्वयमे नीपनो। अनादि हुं। क्षय नहि
मद मछर नही। मोह नही। निरमलो हुं। एको हुं। सर्व स्वरूप प्रपंच प्रका
स्यो हुं।। आठ करम बंधन छुटी विगलो। छेदे नही। नाक नही। जीभ्या नही। का
न नही। वीकार भाव नही। एसो शुद्ध कमल बांधो हुं सु। जे पुकार छे। अना कार
दीकालनो।। एक विसस हस ने छे से।। २१६०। अहो रात्र जे पुकार करछे
।। ते तो सावधांन होइने सांभलेस तो।। निरसे कर्मथि को छूटस।। पएए

अथकुं ओचोजेकेहवाय तेपातक। मूकने नरफलथाये॥६९॥ परउपागारी
नणे मकलो। एहसुंणतो हइ फोनुलसे॥ एनणतां पातकमरीजाय ए
सुणतां मंन नीरमलथाये॥७०॥ एसुंणतो मारगपांमीये आडाअव
ला नवधांमीये॥ एहपंथ नरचालेजेह॥ निहसे सखीयाथाये तेह॥७१॥
दोहा॥ घरमेंहु ठतनि करहे बाहरदे सोदूर॥ एकपलक एक दरसतां॥
करेक्रम चकचूर॥७२॥ नेहां देवकुंणं रूपछे। कुंण नांमे अनुभांन। मूकने
पणसांसोअ छे तेनांजो भगवांन॥७३॥ नामन सोहंहंस। सोहपरमजोती
परमहंस। परमनीरंजण। परमानंद। परमेस्वर परमातमा। परब्रह्म। परमत
त्वे। परमइष्ट। परमपुरख। अविनाशी। अरूपी। अज निराधार निगमा नि
रंजण। निर्वकार। निराकार। निरदेही। निरदुंद नीरदुख चिदानंद चि

११६

१॥माचुव चन तके मानीये॥८०॥ मुधोमारग पर गर करे कथा
कल्पो ल चत नव धरे॥ शबद वात छुरणा की करे॥ साचा देव गुरु
मन मे धरे॥८१॥ सबद छंद अक्षर। चोपई सूणी य कान नर थूजे
सहा॥ वमे राग धरे वराग। पुन्य धरम नो जाणो माग॥८२॥ ग्यानी रे
मेन उमग थायू। क्रो हे हू हे नव धामीय॥ सुणता हे सु थाये हे मन। नु
नमारग मे जावा नेम॥८३॥ दोहरा॥ जोहे जोहे अंतरो। सुणे न फेर घ
णम॥ एक सुणता पारो बले॥ एक वक्र दाघे कोम॥८४॥ ते कार
ण तूरने करू॥ करजो हृदे वीचार॥ एक सूणता चिक्र गत नमे
एक सुणतां पी हछे पार॥८५॥ रस अनेक जगमां हिछे॥ सब थेव
मो वे राग। ग्यांन मगन वैराग नर। च ले म्रगत के माग॥८६॥ बेलत

अग्यांनी ने दु
न सो हाय। अ
गम अधात म
जेहा होय जो
का नरम त क
हजो कोए
॥८३॥
जेह सुणी मार
ग पामा वे॥

हवात कोए वरलो समझे ॥ दोहा ॥ समरण अरु निद्रा जे करे । रुदे कामलदि
नरात ॥ जोत जोत मे मलरहि । छुटण कीए हवात ॥ ७३ ॥ कुलकानूब का
छोरुके ॥ अलख लखे नरजेह ॥ आगका ठ सब बालके । शिव मगलेसे
तेह ॥ ७४ ॥ बात करे ते जउ सही ॥ पढत पढता सोए । जोरुत के जोरुस
ही अलख लखे नर कोय ॥ ७६ ॥ अपाराधी राम को । चल्यो जोरुके पंथ ॥
आपका जकछू न वकीयो ॥ सुं जस मोहि मंनचंत ॥ ७७ ॥ चोपइ जोरुत के
नर जांणो सही । विषया रत्ता मोहि लागा वही ॥ पेट पसारा कारण बली
॥ जस वालो कोटो लीमली ॥ ७८ ॥ मारग सूद अफूटा रह्या ॥ जो रुत ते नर
जिनवर कह्या ॥ न्तरमव्या नरनारी थोक । बाल सजोवा तेसकू लोक ॥ ७९
१२७ ॥ जो रुत ते नर जाय वह्या ॥ ओरा ने पण जेता जीया ॥ बीजी जोरुत के जांणी १२७

नव
कूगती॥ वक्र फूले धरती चले॥ खोटो खोरूदो नर हे पले॥९४॥ वयण
असत्ता मि दिन गमे॥ ते नर नारी दूषमे नमे॥ नव गाजे नव वर षे जे
ह॥ उतम मधम मे नव तेह॥९५॥ समचावे नव भेद ये कोए॥ गांठसा
रु घर सज होय॥ सगत नहि मूरु अन्यात णी॥ कुम नहि मूरु घर चा
तणी॥९६॥ ए चोनंगी तणो विचार॥ आगम मांहि अरथ आपार॥
एह सुणीने पाले जेह॥ परमत्त ब सूषी याथा से नेह॥९७॥ आप वषाण
करे नर नार॥ गुण सगला ते नाखे नरधार॥ ते नर नारी नानो होय
आप वषाण करो मित कोय॥९८॥ से की वाव्यु नव वस्तर॥ नागे नाजने
अमृत करे॥ पोची पाले नर हे वार॥ औषद विण कांइ कीजे सार॥
॥९९॥ दोहा॥ इह सरिषा उचनर॥ रांण अने षोमांण॥ लोक मांहि

शीष गरू ने कहि। स्वांमी करो पसाय॥ चोभंगी जिनवर कहि। ते मूळक
होवी चार॥८८॥ चोपई॥ मेघ तणो दृष्टांत जे वली। नर नारी सुंणजो मेंनर
ली॥ अेक मंनष न व गाजे रती॥ जलथल न्वे करे दो लती॥८९॥ बहु गा
जे ने वरसे घणो॥ वषाण कुलमन आपणो॥ ए कर्मे न षते गाजे जो
र॥ न ही वरसे न वन्ते जे कोर॥९०॥ न वु गाजे न व वरसे रही॥ ए चोभं
गी जिनवर कहि॥ एह युणे नरनारी जेह॥ गुण लछण वरणो सही
तेह॥९१॥ न व गाजे ने जलथल न्वे रे॥ ति नर उतम कुल अवतरे॥ गाजे
घणो ने वरसे जेह॥ मध्यम नर कहीजो तेह॥९२॥ दांधु पण न व जासे
सही॥ जरे नहीं ते गणधर कही। मध्यम कुलते लहें अवतार॥ षाये
११८ षरचे नहि लगार॥९३॥ गाजे घणो न वरसे रती॥ ते नर नारी लहि ११८

पूज्य धरमनी केम्षी एकरीत । इछा पुछे श्रीगुरु पासे ॥ मेहर करो मू ऊली
जवालाहूं ॥७॥ चेलो इछा पूछे रही ॥ श्रीगुरु बलतु उतर कहि ॥ उग
वात तेअ लगी करो ॥ कोमकाज दूरे परसरो ॥८॥ माहापुराणमांहि अ
धीकार ॥ तेमांहि छे अती वस्तार ॥ सुणी वात मूरुउसर नहीं करु व
रणने हेछे गेहगही ॥९॥ दोहा ॥ बल बुध पराक्रम सव हरे ॥ सारवस्त
सव जाय ॥ साची वाते वणेन ही ॥ रूव डीमे वही जाये ॥१०॥ करसण
कण घोम हसी ॥ करबेसे बहु जोर ॥ अलपधनि वर लात कि ॥ जेदिसे
तेनोर ॥११॥ हूरनेछादि अति घणा ॥ पाणनाय अगार । गाजघणी
विज लपके ॥ दुषत णो न हि पार ॥१२॥ चोपई ॥ गाय तके बहु ओषर करे
॥ अलप जण दूध न तरे ॥ उचा फूल अनेक फल होय ॥ दाताधन नव

लघुतालहि ॥ आपहीकरेवषांण ॥१८०॥ कछु सयांणो सो नलो
गरन्न मकरजो कोय ॥ गरन्नेथी नांनो मुरे ॥ नांनो सो नर होय ॥१॥
मतकरजो कोकहि नी ॥ कथा तथा मूषमोड ॥ नर नारी दुषी यां हसी
न कर वराणी होय ॥२॥ नेद्या छे अती पाहुडी ॥ ऊण कर जो नर कोए
वार र केतुकछ । बीजत॰ सो फल होय ॥३॥ उसर वाव्यु नव फले । व
णमूले तरु होय ॥ कस्युकरा व्यू नवगमे । नेर क ए सो होय ॥४॥ चौ
पई ॥ ॥ शीष पूछे मन उमगथई ॥ स्वांमी वात नली थे कही मुझ
चं। जो। नेमोरा अछे संदेह ॥ तिमूजो आणीने ह ॥५॥ पंचमकाल पंचमका
लकहो काइ हसी ॥ कलजग रीत केसी चालसी ॥ नरनारी कोइसु
११९ षन्नोगवे । कलजगमांहि केणीपर जोगवे ॥६॥ केसीपरते चालेनीत ११९

सतणो॥ नीद्यापण बोलेमनमोड॥ बेआगोबेपाछाजोड॥ २१॥ धातवच
नतेबोलेकहि साचुबोलेतेमंनदेहे॥ विकथा वांचैक्रूयेकरी॥ केवलवचन
जायेफरी॥ २२॥ दोहा सासूसयरा घर धणी। सा जे नेह आपार। मायबाप
बधव बेहन। कोयन आवेबार॥ २३॥ हेसकसूहे जेमले॥ गुघेपापजेजाल
कोइ धरमथांनक नेलाभलीकरेनवेंआपाल॥ २४॥ कुमावेत सूधरे करे दमीसो
कहि अंदत॥ सुमतजगमेथोडलो बहूकेलवे कुमत॥ २५॥ चौ सयेसरोला
मांकणमबी। जूजेगोला जोयानेबी। सैणमंजारी सातेकीतएबोहला। वाप
सेअनीत॥ २६॥ मणिमाणी कनेचुनीलाल। मोतीपरवाला नहिमाल॥ आ
लक्षेफकरे अतघणी। कूडीशाख मोटाईवणी॥ २७॥ कोलापरमाणे तेआ च।
हार। तेन्यास्मीबांधेहथीआर॥ पापघर ब्राह्मणमेनवसे॥ छत्रीपणअं

पोमेकोय ॥१३॥ करपीनरतेरीस्येघणा ॥ वक्रकैरे रोमानाजणा ॥ पूर
वपून्यनणो फलमले ॥ तोसंगलोराजाजीगले ॥१४॥ नीबारीनारीसे
थोक ॥ वरूयोते बोले लोक ॥ स्त्रीयपुरषने पीडे सही ॥ दिनर मेते अथ
कीगुही ॥१५॥ छूरातेपणकरे आपाले ॥ मायबापनेदास्तीगाल ॥ बेटोब
कृतके घरधणी ॥ ससरासासूनेरेवणी ॥१६॥ थांपण लोपकरेते बरी ॥ कू
फकपरबोलेमेनरसी ॥ लांछ लेचतेझाझीलहि ॥ अथकोलेइठचोरेइ
॥१७॥ मष मेगोहइीफमांहि चेरी ॥ पलपलमेतेबोलेफरी ॥ वचकनो
लोननतेसही ॥ चोमी चूगलीबोलेरही ॥१८॥ धरमीपणछेजासेघरी ॥
अधरमीघासङ्घरहे ॥ रोगीकेवणअनेकेरूप । अन्याइनेदासेन्रूप ॥
१९। भांहीमांहि वेरवेके ॥ कोबोलावे हइफिचाले ॥ सबजोनेबलानेपाइ ॥ १२०
वारुतके कुमारगजाय ॥२०॥ विणअपराधवेरआतिघणो । अलपहेयमहिमात १२०

जतीतके सवरसेल्लस्या ॥ नवारे तेन्नां गांवस्या ॥ जैनधरम थासे चालनी
॥ घरघर तेपण मागेवति ॥३६॥ देशविदेशा केइ ल्लमे ॥ केइ घरबेगजमि ॥ केइ
वगचाने केइ रोक ॥ आगम लोपि बोले फोक ॥३७॥ क्रोधलोभ घर मे परवरे
॥ पोणीनांषी साचज करे । पाखंडे ते बोक्क ला वापसे ॥ तेमां हिमगन स्क्रक
हसि ॥३८॥ असंयमी नो पूजा चालस्से । रात दीवन्ना तेमंन मे वस्से ॥ आडंब
रते थास्से बोस्सी ॥ एक हसे तेना हस्ये हसी ॥३९॥ यंत्रमंत्र दोरा नु घदी ॥ जोत
कनीमत नछोडे कदी ॥ वेद करमचुरण गोटका आवनावन रदे मोटका ॥
४० ॥ नेह करीने पेरजन्नारि माया कारण देक्क दन्ना फरि ॥ क्रोधलोभनो
नल हो पार ॥ वारुत कि निकासे छार ॥४१॥ दोहा देयादान वरत शील त
प ॥ लघुपण करस्से कोय ॥ कामक्रोध मायावनि ॥ बूडापण बक्क होय ॥

नै

न्याइहुसे ॥२८॥ दोहा ॥ निग्रंथग्रंथछेचसा ॥ जोगजगतदरवेश ॥ विके
करकरसणलगा ॥ केताकरमकहिसा ॥२९॥ करवतकातरणा चरीरू
पकरेवकचंत ॥ सूचेमूयाअतिघणा तेरावेमनधंत ॥३०॥ चोपइ ॥ वाल
नेवेचेवणीयो ॥ सातेवसणेमगनप्रोणीयो ॥ आवुमदमेन्नीनोरहि अ
मेन्नलाछैमूषेएमकहि ॥३१॥ स्नानधोतीयांउजलकरे ॥ वेकजणमेवगंधां
नेजधरे ॥ धूमरपाननेगहेसरी ॥ चकटामेवेथेतेफरी ॥३२॥ यंत्रमंत्रफोरवे
अपार ॥ पेटकैरांतेकरेअसार ॥ ज्योनीपणनवदीशेकोए ॥ अग्यानीऊंडा
होय ॥३३॥ जीवकानेसकतहोये ॥ अजाहणीसुषपावेसोय ॥ देवनीमतते
हस्याकरे ॥ देवदेतामनधनवघरहरे ॥३४॥ दोषअढाररहीतजेदेव ॥ अव
हेलेनितनेहनीसेव ॥ चोपफवेछेहसीरजेह ॥ देयाधरमनाघातकतेह ॥३५॥

चरें

ते

नं।

वाज्ञ ॥५१॥ अगम्र लेई करसे चकचूर ॥ क्रोवर लापालसे अक्रूर।
रातेपर न्नरसेसक्रू कोए ॥ न्नदस अन्न द्रु नजांणेसोए ॥५२॥ माहो
माहि षारि बले ॥ अगन विनाते अह निडसेज ले। होणइ हसे का छे
चूकसे ॥ कुयारांदल मेलां हसे ॥५३॥ वनसपती सुं वेर अयार ॥ को
नवजांणे परनीस्मारे ॥ नष करी यां णार्ह्णापस्ने ॥ वारु नो ते लोयज ह
स्ने ॥५४॥ चीन्हगलीनेसूाबुक्कंद ॥ मेक्रूणां मेण लाष एनद ॥ क्रूसक
रानेन्नारु करे। वारु तकेस त आचरे ॥५५॥ एकरत व संघलाछे नी
च ॥ हरषे न्नषे काहि हम त छ ॥ भा हावरती नवदास्ने कोय ॥ लाषको
रु अनुनर तीहोय ॥५६॥ वेरोयण दुषदेसेनेट ॥ नन्नरे मायबापनो
पेट ॥ रण तके सवले सैहरी ॥ माये नातथी जासेफरी ॥५७॥ ज्ञाला

ते

॥४२॥ विसो क्रोधज अति घणो। लोभ वनि कमर जास्त॥ माया पण तेहमे
घणी मांन हस्ते त्री पास॥४३॥ पंचम काले अति घणां॥ कूट कपट छल जो
ए॥ वैरत केवा पिघणो। सुष न पांमे कोय॥४४॥ चोपई॥ आंतदांत ने सच
मवरि। तेहने सह्कु निरादर करे॥ ब्राह्मण ने क्षत्री दूसरा॥ पृथवी फोगीपे
रजन्ते॥४५॥ ते पण वाजे आपे वर्ना। तण तिके तहवा नीमली। दया
धरम थोडो दीपसे॥ तगीया तेज तसो तेहसे॥४६॥ उतम तणी उपाइला
छ॥ मध्यम घरे तेरे हसे वास॥ नीच उचा थइ बेससे॥ कूडा बोलब
कु वापस्ये॥४७॥ बेटी नो बह्कु लेस्ये दांम॥ कूस करी घर वारस्ये कांम॥
कन्या दहीने करस्ये वेर॥ बकता फरस्ये घेरे घेर॥४८॥ पुत्र पिता पिता ने पुत्र
२२ हणस्ये कलमे एहवो सूत्र॥ केवल नो पण होसी नास॥ थान कफारी ऊचा १२२

॥६४॥ कोकेहनी नवकरस्येवार॥धरतीपण स्रोसेवार।चेहलोकाल
कलंकिनांम॥धाततणोतेफेरे नाम॥६५॥देवदांननोकरस्येसंघार॥धरम
नहिसर्वए काकार॥चरम तणा नो णां चालस्ये॥तीरथ वरत कोनवजी
एास्ये॥६६॥धरमीतकि चिह्नजणमेड्से॥नरतमांहि संघले लोपसि॥का
यातणो मांनसवघटे॥सुमति लोपकुमती प्रगटे॥६७॥दोहा॥श्रावक श्रा
वीका बेजणां॥बेजण साधवी साध नगनरूप वनमे रहि॥सुधो मारग ला
ध॥६८॥केतादिन ईमने गमे॥देंडु बालगो पाल॥नरपतनानेर देंढूदा सेको
पि फरे कढ़ाव॥६९॥साधनुपर समस्या करे॥करसेवा मंन घाय॥पेहलो
कवलत के छेड़॥नरपअगलतेजाय॥७०॥तवसाधू अनतराय लाई तजी
अनतेवार॥ आलोई आप्पानजी।देवलोक अवतार॥७१॥एम कृष्टेदा

१२३

राकुतेपण सगा। धंनपावेतोकरस्ये वगा। ससरा सासूतेघराधणी। करस्ये
मायतातने रेवणी॥५८॥ नणदीको आवेनव तीर॥ परघर जमतां थासे
मीर॥ परजा नो पीहर जेराय॥ देषीरूपूकरे अन्याय॥५९॥ वोको नहीं पण जा २
णो छार॥ देषत नवमे पाछे वार॥ गादीन नृपलेस्ये नाम॥ अलपदीह म
त रा आपे ताम॥६०॥ नेहा दाम ले इन्नतहण करे॥ कहो तेनर कि मने सरे
लोन्न वसे नरवूका बेह॥ मरषनरजांणोते ह॥६१॥ वेश्या दमन्नवेनरनृप
तेनरजांणो राछसरूप॥ कलकी एकवीसे होय। पलकलकी विसे जोए
॥६२॥ धरमलोप कलंकाकरि॥ दोएराजात एकज घरे॥ पलकलंकी
एसुहोए॥ आपणाकरमे सबकोय॥६३॥ एसी रीत कलूमे चले॥ कोए
केहनी नव करस्येवले॥ हाहाकारमेद निरसे॥ मरको रोग अती वापसे॥

उरे आतम कारज को एन रकोरे ॥ अहनिश मोह मगन नर जेह ॥ जागी स
मंत संभाले तेह ॥७८॥ जांणपा सुणपा विना जीव जह । किम मारग नर पांमे
तेह । तेहकारण मूरु करो पसाय । जे सुणे ते पांमे राय ॥७९॥ तव गुरू बोले
अमृत वांण ॥ सुणो सभा सक्क मेहली कांण ॥ ए सूणतां नर धू जेजेह प
रभव सूधीया थासे तेह ॥८०॥ दोहरा सबलो नबला नेन डे ॥ राजा गया
विछेद । पापाचारी जन सकू ॥ धरम न जांणे भेद ॥१॥ अंगन गई बुधन
वरही । अलप मेघ गरू नांहि ॥ विद्यपुरांण । कोरांण नहि । कल बीने हिक
लमांहि ॥२॥ संगो स मदी कायन हि । नहि बेदन भाणेज वेर वसायो नी तन
वो गयो विदेसी हेज ॥३॥ सेठ नहि सेस नीपाती कांनुगा परधांन । बूलप
णाच घुपणा को नहि सवे का लेवान ॥४॥ काया मांन तके घटे ॥ हाथ दीए

न नीगमे ॥ सेहस एक विचे जोय ॥ परले दिन २ मे अधीक ॥ कलजगमे ए
म होय ॥७२॥ चोपा ॥ वलतु शिष मन थई नीरास ॥ पूछे एछा श्री गुरु पास ॥
चगो काल कहो केम हसे ॥ केतावरस ते चालसे ॥७३॥ मन घतणो कांइ हो
से घार ॥ जतीवृती बांभण के न्यार ॥ विषम समो कहो केम चले ॥ एहः बो
ल मुझ कीजो वले ॥७४॥ अंन पांन वस्तर कुंण विधे ॥ गाथे भेस वेसे क
हो लधे ॥ कांइ भोजन कहो केणी वीध जमे ॥ [illegible]गे काज कहो किम नीगमे
॥७५॥ गुरु गरुया समझावीक हे ॥ पूछे कसू सवाद न लहि ॥ लोक तणा
मं न थासे भंग ॥ वरर त्राथी मन थाये वेरंग ॥७६॥ पंच वषे सुष जेमां णासे
माथे पक्से तव जांणसे ॥ तव शीष बोल्यो हइमे हसी ॥ स्वामी वात वि
मासो कसी ॥७७॥ एह सोणतां नरनारी फरे ॥ आतम कारज को एनर करे ॥

कोकहनीनवपूछे सार ॥९२॥ मा हा कष्ट उतरते हमे। हाथ एक काया तेतमे ॥ ढोलवरसनो आयुषू जांए ॥ अगनवष्टी अतीहवषांए ॥९३॥ सात दिवस लगे वरसे आग। उगरवा न वदी से माग ॥ विद हनी वि द्याधर देवते ऐ समेते आ विहव ॥९४॥ दोहा मनष बिज बिलमों हि धरे ॥ अथवा जगति पा स। जीवसवे परले हसी ॥ नवदी से को एवास ॥९५॥ धूमवृष्टी दिन सात लगे ॥ धूयारो लवरसंत। वाय वृष्टि दीन सात लगे। परवत पांन हवेत ॥९६॥ चोपइ ॥ परबतपाफत के उफसे ॥ घाडा घाई पाते बुरसे ॥ मादल ढोल दं दामी सोय ॥ पृथवी सव बराबेर होय ॥९७॥ तरस जीव सवुप रले घाय कोवरला पण थावर रह्या। षारो दधीने षाफी जेह ॥ पृथवी से फेले सवते ह ॥९८॥ उपर थी पण घनेवरसंत जलमे। थपण पृथवी हवंत जलेक री पृथवी सवगली रा अंनती त्यां सां न्हली ॥९९॥ साते दिवस लगे सी

अनुमान॥स्वपन ही कुदरसणी दिन२ अधकी हांण॥७५॥उदर दारग ल
घू हाथपग बक्ता ने बतराऊ॥वांक मोहां लेखां बूरी॥नीत नीत ही बकवाऊ
॥७६॥ स्वान नणी परे वलगे तो।दागते न सोहाये॥नगर गांम पारणा न
ही॥जथ न्ना वे तथ जाये॥७७॥चोपइ बिस वरसा उतकृष्टो।बरवरस्यांव्रे प्राये
राजाय॥जवृक ज्योत्नामा बोलसे॥घरु रांघणा नरणीन्त बसे॥७८॥ स्त्री
२ वेपारी नवदासे कोय॥ वणकेंपर जापतन वहोय॥ वैदवास जोतकस
वरलो॥स्वत्र सीधांत तकेस वगल्यां॥७९॥दोहा सहस एकेंएणी वीघे बीरा
कालगमा बिसीय॥कालकरी वृगतीगीया॥स्वगतन पा बिकोय॥८०
॥ चोपइ॥ रेहवुपण नीते अटवीवास॥ सकनर नारी नगन
नीराशा॥वेनचर जीवते णी पारेर हि॥कोबोला वे हइझे देहे॥८१॥ विवा
२५ नही न वछ वहोय॥तिथीवार न मेग लकोय॥ मछादिक नो करे अहार १२५

कारण नवपोह चेपार । स्वांमीजतीजोग दरजे ह ॥ ए छोरी मूसपावे ते
ह ॥७॥ करम वरसे नरनारी जकि । किण विध सूष जहेसइा तके । छवात
णोते छोरीपाश ॥ उरही वेत ते करि नी वाश ॥८॥ सांभल जीव तूरुने
कहू वात ॥ कोकेहनी न वकरस्ये तात ॥ कुण आलत के परस्तरी ॥ जीवत
णीते जेयणा करी ॥९॥ मारी ढोल करे थोफलो ॥ अलप करे पाप मोर लो ॥
घायतणी पर पांणीजोण ॥ वनस्पती नी न करे हांण ॥१०॥ हाथ करि नव
त्रोडे कोय ॥ बाग विलानय करि स्मोय ॥ चुंटे चोले ते पातकी ॥ दयाधरमना
ते घातकी ॥११॥ ते नर कहो केम सूषीया थाय ॥ कोढी गरत्न घ कीगली
जाये ॥ कूडो आलतणो फल ईह ॥ अंगनमो हिते बोले देह ॥१२॥ बाल
क विसेषासिसती ॥ पाछे पण जा नो कुगती ॥ शिष पूछे गुरू उतर कहि ॥

तहवत। भरतषंडते मांहि पंरुत्त॥ विषवर्षी दिन वरसे सात। मूल घयवी प्र
गरीवीख्यात॥१८००॥ त्यारपछि दिन वरसे सात धूल तणोते अतिपरता
प एम करतां दिन उगणपंचास मनष तके बिलमांहि वास॥१॥ मोरा पा
ठत के मांनजो॥ सरदाव मांन तके जाणजो॥ पाणीजल समूदरजे कह्यो वे
ष एक ऊजेरो जहो॥२॥ भरतषेत्र मांहि एहवी रात॥ ग्यांनी नर सांभलो
वदीत॥ तव जीव मनमे जाणीके हे॥ स्वामी सुणतां हइडो दहे॥३॥ मत
होजो मुझ नो अवतार॥ छठमांहि कहुं [illegible] वारोवार॥ भोजाति
मतु धूजे काहे॥ मुष बोल्यो न गरीये नाहि॥४॥ जीव सविनीजे यणाकरो अ
पसमण तपणा धरो॥ क्रोध लोभ ते अलगा धरो॥ आतम कारज कां नव करो
॥५॥ क्रोध लोभ मोटा छे रोग॥ सूष म्याता नो करिवयोग॥ दुख समुदर
१२६ मांहि बोलसी॥ भव अनंता मांहि रोलवो॥६॥ पाछे रव्यो अनंतीवार॥ ते १२६

तेनरजायेसही॥ माहापुरांणमांहितेकही॥२०॥ कालिजौंतेहोथीनीकले
गोहगरोलीमेतेन्लले॥सीहसरपगधानेस्वांन।समलीसेसांणतेजांण
॥२१॥ कागबगअनेबूकार।जीवतणोतेकरिसंघार॥कहारकीरकेस्पाइ
मारकी॥ थोरीबागरवक्रूपातकी॥२२॥ करिपापनेपाचापम्या॥कुंगतमां
हितेवक्रूरऊवम्या॥वनसपतीवेहफोटवरू।उवूरछोहकहेनेवूरो॥२३॥
करमवसेदेवामेंथाए॥ढेफदेवसांतेनरथाये॥तेकारणहंसामनेकरो पर
दुषदेषीमंनमेफूरो॥२४॥लाषमेणमफ्रांमलूी[illegible]जांण।घणांजीवनीथायेहां
ण॥ चीफगलीनेटेकणघार।नरकेजातांवुंधीमेवार॥[illegible]॥सूरोसेसो ऊमल
षार।चरमतणकीधाविपार। लोहविष वेचीहरीयोल मरिस्यहानरतेआका
ल॥२६॥ पारोबेरजीनेरोगांन॥साबीसेजीनीचनेपांन॥साबूकेकोफीनेते
लसूपवाछेतेअतांमेल॥२७॥ देयाधरमनाघातकसहीएवीतपरमस्वरक

...मन दवअगनमांहिदहे॥१३॥ आफूधतूराजलयात्रा॥ ब्रह्मदेवनोकर
सेनात्रा॥ पेरकटारीनेगले चरी॥ फुं पा पात करे तेफरी॥१४॥ क्रोधविनातेक
होकेम थाय॥ नरनारीते कुगतीजाये॥ तपअगनीसुंबालोदेह॥ परदाराम
तासमतेह॥१५॥ पोतानीनारि सुवेद॥ घटपरवीतेकरवोछेद॥ परउपतदेखी
मतवलो अंनपानराति मतगलो॥१६॥ वासीवस्तरमतसूदेजो॥ अणगल
पांणीमतझीलजो॥ राज चोर भोजन अस्त्रीकथा॥ कुंकवीग्रंथमतकेरजो
तथा॥१७॥ एहवीकांमराग... वापसे॥ अंतरदल अतिमेलिह से॥ पापकरत
नयनवहोय॥ जुनमारगमेमनसांसोय॥१८॥ अलपकरोजीत्यानोस्वाद
धरमीसुंमतकरजोवाद॥ जालपात्रा बांधे हथीयार॥ मतपकजो परजीवो
२९ लार॥१९॥ एणथीसमरणसुंधनहोय॥ स्नांनदांनतेनरफलषोय॥ कूगती १२९

येनेनयणा ॥३५॥ आपसवारथकारणे ॥ हेसाजगरकीध देयाधरम [illegible] च
कचूरकरी ॥ कुगतीवासोदाध ॥३६॥ कूगुरुकुलमेन्नोलव्या वकूरो
लव्यासंसार ॥ मूरखकोइसमझेनही एम केमपांमेसपार ॥३७॥ चोपइ
॥ जीवसकूनेजीवोगमे हेसाये चेकूगतमेन्नमे ॥ प्रथवीपांणीने
वेनसई ॥ अंगनवायएकडीकही ॥३८॥ चोपगपंषीनेनरनार ॥ जलच
रकेकूसंन्नार ॥ नीलापांनफूलमेजेह ॥ केवलग्यांनीनिसेनेह ॥३९॥ तीरथ
करचक्रीबार ॥ हलहरीतीनो नवनवसार ॥ ओर [illegible] कमोटानरजेह व
नसपतीनीआव्यातह ॥४०॥ करमघणानमगतेगीया ॥ केइनरते शीयलोथ
यातेहवोजांणी ॥ करजोदेया पांचेघावर कहिसंसारसूरमाहेवसी जेनर
नार मोटाकीया ॥४१॥ धरमकारजवलितेहनेहणे ॥ परपोंणतेमेंननवगणे ॥

ही घरटी उखल कोस कोदाला॥ चरी कोहाफ चाबक पाल॥२८॥ हलदा
तरफां ने देताल॥ वेग करे जीवां नो काल॥ एहनो मत करजो वेपार॥ पायो
रुप निश्रणी धाधार॥२९॥ रापेती मत माग्यो देह॥ रंगन्नंग ने छूटे नेह
जिनवचन नी लोपणकार॥ इह बोल जाये म निरधार॥३०॥ चोपगनूं
शाहू मत करे॥ तेहनो वणज मही पर करे॥ कूडवचन तुं बोले मत॥ परधं
कोइ ने लेरती॥३१॥ नर नारी पसु घरहाट॥ वापी सर देवन्ने पाट॥ तेहनी स
राहनो मत करो॥ लीला उपर पाउ मत धरो॥३२॥ धुणी सजरी ने बकवाद
मत सुणज्यो संसारी वात॥ जीन्मा मत गरधाई करे॥ पर सूख देखी मत
मन धरे॥३३॥ दुनीया कारस जाणे को क॥ अथीरज्जे सीपांणीनी लीक॥
सांसो स्रोक मत करजे वीर॥ हासी न्नी मत करजे धीर॥३४॥ दोहा॥ कुग
रु कुदेव कुधरमनी॥ संग मत करजे सीण॥ लीला कांइ न्नरमे षम्यो॥ नवजो

न
ल
१२८

ता करो परनारी ते माता धरो॥ षार तरुके दे सेजको। दयाधरम नन्मू लेत
को॥४९॥ न्हाख्यां धान तरुके मत धरो॥ वाफा विलाते परस्यरो॥ जो लगो
रज्ञा पाणी चीफ परजीवांनी नवजोणेयी फ॥५०॥ काकबदीवोनेरी
गोन॥राई तुने रोधां घांन॥न्नाजन उघाफा जे घरे॥आयुअधूरे ते नर
मरि॥५१॥ एठाक्यांनो आलन्ना करे॥दुषपामे ते संघ लोसरे॥ गोबर
तूस तुसंग्रो करे॥मो षण विगास्या वण मत धरे॥५२॥ गारपलाली रा
षोमती॥ असूरु तुपण देज्यो जती॥ वरज्यो दारानो उदार।दुरवसनी
पण करजो सार॥५३॥ आयो षानी अंते वार॥ हइये तूमत के पे धीर॥
घणु कष्ट।तूरु आवे जदी।रांमन्नं जन मन मेले कदी॥५४॥ बालक तू मत
च्यंके धरे॥धरम तणो आलस मत करे॥ वरधपणानो नहि वीसवास

पांचथावरकरेसंघार। पून्यकरि वलीजे नरनार॥४२॥ तेपापपोतेज्नोगवे
घणोकाल दुषमेजोगवे॥ हवेफांपांचे नबलाहोय। आगेसकत संन्नाली
सीए॥४३॥ एकजीव नरहणस्ये जेह॥ दशन्नव वेरलेयसहीतेह॥ थोडो तो
परमेसर कहि॥ नहितो काललग्नंनंतोलहि॥४४॥ एहवूजाणीकरजोदेया
नहीतरनीसेजास्योवहा॥ चोमासोपापफ पापनी सूकनेडीनेघारावली
॥४५॥ तरकारी तेपण परस्परो॥ आपकाजतेकांन नवकरो॥ पंचदीवन्नी
पंथीबोवाज्ञी॥ दक्षदिनूजास्यो तालीहाथ॥४६॥ एणादवरापरवतनेपा
ड लीयो धांनमतकरजोगाढ॥ उछनीच कुंलकेताकीया पयासमदमा
तारापीया॥४७॥ तोहेपण तृष्णा नवजाय॥ अन्नहृत केपणक्रस्येषाए॥
जेआपणी परदासेसार तेइउदरलीयाअवतार॥४८॥ एहवुंजाणीसम १२८

ना

ऋषवासुकसे॥६२॥ बिलमेथीमांणश्रा नीसरे॥अक्रूरा नाम्न हुण करे
मेगतेपण मासरीसमांन॥देहतणां पलटे वांन॥६३॥ दिनर कायाआयु
वधे॥सूषसातापण चरु तो लधे॥कोएक सहस वरस एम गमे॥थोकर
तव अरवीमेन्नमे॥६४॥ आगनदेव प्रगटस्तई॥सुमतकाला तेअधकीथई॥राजा
नीत घरचक्रूटांगांम॥आपआपणे लागा कांम॥६५॥ तीनच्यार पांच छ
हसात॥चठतीकाया मतरीवात॥श्रीएणि करोजीव जांण ज्यो॥मनसदेह
कोमतीआंणजो॥६६॥ पद्म नाम्न तीर्थंकरहसे धरमधांन त्योथीवाप
स्ये जिनमारग टेकरे॥केइलोक एणथी नीस्तरे॥६७॥ सघचतुर विधि
व्यापस्येांम॥श्रोछव मंगलगांमोगांम॥मूगतपेथते प्रगरथीयो॥धर्मको
रत्यांघो सवगयो॥६८॥ केतोकालगीयाते पची॥सुषदिनर मे अधको

प्रग

कांयतुबांधेमोटीआरा॥५५॥ घणीयालानारचकाजेम॥आयुगलेस
हीजांणांतेम॥ काचोकुंभउदकज्योंनस्यो॥कागदपणपांणीमेंधरो॥५
६॥तेपण गलतनोलागेवार॥ज्योंलाकोलोपेजिनकार॥ कांइजीवीकेतुंआ
सुषो॥मांडापापजालक्रलषो॥५७॥दोहरा॥ अरेजीवएणोमारगे॥
जोचालसोसुजांण केवरह किदेवता॥ मनमतधरजेकाण॥५८॥पचंम
छठामेसही॥ नवहोसीअवतार॥वासोवरज्योनवरहै॥तोज्ञवरन्नटका
मार॥५९॥एहसूणीशिषहरषीयो॥मनमेनयोधूशाल॥अवआतम॥
कारजकरु॥कांइहोसीकहोकाल॥६०॥विलवासीमांणशतणो॥स्तलकहोग
रूराय॥ कांइसमोआगेहस्ये॥तेकरोमूरुपसाय॥६१॥चोपइ॥अमीयमे
वरसेवरमेह॥जथवीपणारशमेलेतेह॥ तापतकेथोडोव्यापस्ये॥अकूरा

ह॥ स्वामीमूरूनेकरुजोतेह॥ कोइदुमएा कुएागतमे वारा तेमरूने करो
लीसवीलारा॥११॥ मैथुन ह्सा केतीकहा तेसुंएावामूरु कलटथइ॥ व
लतोगरू बोलेमुषमोह॥सीषकुन्नोतेदीए करजोड॥१८॥ सोन्लवछेतु
रुनेकहूबात॥कामीनरतेकरसीतात॥निरमलनरते वीरलाजोय॥कामी
नरतेवोहलाहोय॥१९॥ कलूमेहेस नदीसेकोए॥कागतके वकूरुारा
होय॥ रुषघएांनहि चंदनवाग॥बोलएाकोनवदीसेलाग॥८०॥ दोहा
रा॥ हसीकरे शिष्य वलतो कहि॥जेहकरोस्वामाट॥सुएपा विनानव
पालसी॥ अटवीकेमलहेवार॥८१॥गुरू विनग्यान नउपजे॥दया विनान
हेसीध॥समकीत विन ज्ञोन्नानहे॥तरू जलविन नहेरध॥८२॥ तेमा
रेस्वामीकहो॥वचनेहोयेउपगार॥वहावहि वेहसेसही॥कोएकपो

होस।।हरा हल धर लेसे अवतार।। करम षपीने पोहचे पार।।६९।। जोत जोत मे
जे लाल्या।। आवागमण थका तेरत्या।। चोवीसे जिनवर होसी सार।। द्वाकोरद
त्रा लेसी अवतार।।७०।। चक्री बार हल हरि नोव। एह पण प्रगट होसी पहोव
केइ एक कोडाकोडी वरीस।। सुषभोगवता वापेईस।।७१।। सुषसातानोपा
रन लेक।। जीवनएक हूके तू कक।। चोवीस मो होसी अवतार।। धनुष पांच से
दीहीपार।।७२।। त्यार पछी जुगलीयां वसी।। गाउ एक काया ते हसी।। दोएती
न गाउ ते चेके।। तेहने पण कोए न हे ववेक।।७३।। अंनपान देवदरसे।। का
लकरी देवां मे वसे।। ए समंद तो पूरो भयो।। आगे समंद विचारि कहो।।७४
।।दोहा।। सीषवलतो मंन हरषीयो।। मंन मे भयो षुसाल।। किम जागे सही तेजी
वको। एसो न होये हवाल।।७५।। सज्याय ही पावे गुरु नी तो मंन सांनवसंत
जंम तणो हेरा फेर सुधा चोव्यो भीत।।७६।। चोपई परनरी परनारीना दोषण जे

१३१

कष्ट महा एहलोके होय। कीरतयण नव बोले कोय॥९१॥ दो॰ नवे लाष बे
इंद्री मनुष्य। असंष्य परमांण। एता सुष मजीव नी हुंसा करे अजांण॥९
२॥ सूक्ष्म दत्त मई थुन सरष। संवर पून्य अंकूर। कुंशील नरसं घ सामली
नाज काया चक चूर॥९३॥ जाके इंद्री बश न हो। कुण पुरुष कुंण नार। व
स्या वहे वही जायेगा केदेन पोहचे पार॥९४॥ चोपई बलतू शिष गुरूप
रते कहे। एसुणनां मूरु दुझी कोदहे। एह पापकुं कुण समवड होय॥ स्वांमी कहो
विचारी जोय॥९५॥ बलतू गुरु दाषे दृष्टांत। रात्रि भोजन मांहि वरतंत कहुं
चोपई मांहि वीचार। चंत धरी सुण ज्यो नरनार॥९६॥ अमरसेन राजा पूछंत
क बलतु गरू दाषे दृष्टांते केइ वरस्य आषेटूं करे। सरवर फोड्या समवड धरे॥९७
॥ केई सरोवर फोडे नर कोए॥ एक हि दिवस समवड नहि होय। केई वरश

हो चेपार ॥ ३ ॥ चौपई गुरु वलतो बोल्या अमगी । ज्यांनो नर हइडे मत जगी । नृष
तर त्रा सुणता सव गई ॥ अंतर दल अति नीरमली नही ॥ ४ ॥ परनारी नरर
ता जेह ॥ राशन्न समवड जोणो तेह । तेहमे मगन रहि निरधार ॥ तेहने उ
ते दर लेइ अवतार ॥ ५ ॥ कुलं[illegible]ग नो माता समी । अन्यनार ते बेडनी गमे । माहा
हलाहल विष जे हवुं ॥ परनारी देषणी तेहवो ॥ ६ ॥ लंपट नर नवमो नेकार मं
न जांणो संघली परनार । रात दीव समन देहदे शान्नमे । वारुत के निच सूरमे ॥ ७ ॥
जो कामे नवकार तहोय । त्रूरो त्रूरो नाषे सव कोय ॥ दम संघलो तस बेठो घेर
घणा जीव बसाये वेर ॥ ८ ॥ द्वादशमो शनीशर वाश । गुरु आठमो हणे
मंन आस्त्र ॥ चउमा चोथो जे हने मंगल सुषन वदेय तेहने ॥ ९ ॥ २ बुधता
की संघली बुध हरे ॥ १० ॥ राहु केतु होई सा गाजेत ॥ पुदगल ते पण कायं
अचेतः १ शुक्र सूष न वदेय लगार धन सग लोगीको दर बार करुर दृष्टाते स्रयो करे

१३२

ई॥ गोसान्नर ते राणी थई॥४॥ आषेट करायगयो वन वेड॥ दासीयें नर आणो
तेह॥ नमष एक बेठे घरबार॥ अचाण करायआव्यो दोयार॥५॥ बे
लषांणो नर धूजे सडी॥ सांतसांत मूरु मारे कही॥ सांख्यात णो नवदासे
ठांम॥ संचारीयो देषाणो तांम॥६॥ मरण तणो न्हेय दषो ताहरो॥ संचारी
यांमांहि कीधो वास॥ रात दीवस सेथो नक गमे॥ अनपांन ले थान क जमे
॥७॥ दोहरा॥ कुंमर तणी दलनी रमली॥ संगत नो गुण जोय॥ जीवत नर
नरके पड्यो॥ कालग मा विसांए॥८॥ तव जीष मनमे वलषीयो॥ श्रीगुरु ने क
हेस लांम॥ मग नर हि परनार सु ते पोहचे कुण ठांम॥९॥ परनारी राताज
के पूरष परक्त तजे नार॥ कुण कष्ट आगल न्त वे न्नोगवसी निरसार॥९॥
चोपई॥ वलतु गुरु समझावी कहि॥ कांमी नरनां हडी फोद हे॥ मूरु उ
परमां कर जोरी दा॥ केसु न्नोगव स्यो वाह्रा वावीस॥११॥ जेह नर नारी जेह

लग दव परजाल कुवणा जने वली कूकां आल ॥९८॥ एकावन न्न वसो
लगे आल ॥ पर नारी दोषण एक ताल । एह वो पाप छे पर नार । जां णीम
त पकडे जो कोए लार ॥९९॥ हाथ अपा मारे वणा काज । रावण राणा ग
माय्यो राज । दस मस्तक ते कीधा दूर ॥ जे घर रसोई करता सूर ॥२००॥
लंका राजा न्न वीभीषण दीयो ॥ स्त्री कारण जो यो अनरथ कीयो ॥ पुनरपी
कहूं सुण नर नार । वसंतपूर नयरी सुवीचार ॥१॥ राज करे जीतशत्रु रा
य अन्यातणो ते पके गाय ॥ नगर सेठ ललीतांग कुंमार ॥ नहि मनमे
कछु कांम वीकार ॥२॥ एक दीन [illegible] पर वन्नटो जेतले । पं चोपं चमलो
ते तले । ते पण पोहता राज दुयार । जई राजा ने कीयो जोहार ॥३॥ झोषी
मे हल जाये तस नार । देषे रूप ललीतांग कुंमार ॥ ता दिन थी कांमातंत्न

१३२

१३३

॥१८॥ कहो श्री गुरु तो केम छूटेजे ॥ ल्हूला मारग देषाडिजे ॥ माया ममता
दूरे करसु ॥ काम क्रोध लोभ परहरो ॥१९॥ रहो एकला ने वन वासु ॥ मे
नू मत धरजो केहनी आस ॥ उदासी मन अति वेराग ॥ विगतणो ते कर
ज्यो त्याग ॥२०॥ अंतर दल अति नीरमल करो ॥ आपा ल्हजो ल्हवसा गमत
रो ॥ ब्रह्म ग्यांन सेती परवीण ॥ अंतर दृष्टी सो ले लीण ॥२१॥ तव पात कछू
रे तत काल ॥ अमर होवे न व रूपे काल ॥ तव शीष वात वे मासी कहि ॥
कलजग मे अेह वा को नही ॥२२॥ एह वात कोइ वरला करे ॥ घणा लोक
ते क मेनी स्तरे ॥ नारी अंग ने याले मति ॥ दृष्टी चाला मत करजो रती ॥२३॥ परनी
राजे मात ताग तो ॥ श्रुन्न परणामि सवर करे ॥ बलकारी मत करजो आहार ॥
घणो संग न कीजे नार ॥२४॥ गरा वीस मार होदा नरात कथा कलोल

वीमंत्ता॥घणुकहिनवमेहलेरती॥माथेपळ्येतवजीणासे॥नरकमांहिनरसं
नालसे॥१२॥ सातनरकछे आपातले॥करेपापसोतेमांहिनले॥नरस्त्र
थवानारीनोरूप॥लोहतणीपूतली अनुप॥१३॥ रातीलाल अगनमेकरी
देवरावेकोटे [illegible] नेफरी॥तातानवाउपरतेधरे घणुकष्टतोतेनवमरे॥१
४॥ कुंन्नीमेपचवेकेईवार॥वैतरणीनदी वणासार॥जीन्नएककूकेतोक
कू वेदपुराणघकामेलक्क॥१५॥ सीषवलतूमनथईनीराज्ञा पूछेपृछा
श्रीगुरुपास॥एपातकनवसहीयोजाय॥एहचूटा तोकहोनुपाय॥१६
॥सूकीलाकरुपीपलतणी॥रान्नाफेरतेजाकृथणी तेलाकरुलेईमध्येकुं
र जोगीवरनोसूकोगोर॥१७॥ बेचीवे चन्नर चक्र पान्ना॥अंगनजोगके
२३४ रोदेइनास॥तोपातक कछुहलवोथाय॥आप्पारुणीसाहमोलपराये॥ २३६

रे सकु कोय ॥३१॥ कुल खांपण नर नारते ॥ कुल लछण नीरधार
कुल लजामण कुल कलंक ॥ कुल नुकाफ छार ॥३२॥ एह लोके कीरतन
हे परलव दूष अपार ॥ चोरा जीलाषमे फरि ॥ कोए न पूछे सार ॥३३॥
कैरू टोके पांगलो बेहरा के बुध हीण ॥ केबोबको के देयामण ॥ आंधो के
धीने हीण ॥३४॥ चौ० केपावईयानो अवतार ॥ ॥ स्त्रीने परणी नीरधार रूप ते
हीण नरदासो सही ॥ एह वात सीधांते कही ॥३५॥ नर नारी ते पर घरदास ॥ रो
गन छोडे तेह नी आस ॥ जीन्न एक कु केतु कहु ॥ पुपातक नो पार न लहु ॥३६
वार ॥ त्रीष्पमन मे घरे ॥ परनारी संगत परहरे ॥ कुबेरदत्त ने कुबेरदत्ता दो
ए जोग वेरपा घरजुता ॥३७ वरत विकृणोमे ल्यो संजोग ॥ बेहु नो माय सरसु
जोग ॥ केता दिन वातीतनले पूत्र एक जनमो एतले ॥३८ अढार न्नेद सगाय

नयारूपावात॥ सतोषी समकीत सुलीए। नवे वाड भरजो परवाए
॥२५॥ आतुरता दुवधा स वृत जी। मेटे दोष सही आपान्तजी॥ समरए
स कते पासी करे। परनारी दोषए सव मटे॥२६॥ नरनारी मत करजो
रीस॥ कस्यु नोग वतो वीस वीस॥ मूरख नेरी शा करो मती कोय॥ जे
सो बीज तसो फल होय॥२७॥ दोहा॥ पाथर कमल न निपजे। जल
विन तरु नान जाये॥ दरद दुर दारू विना तो शील विना सूष थाये॥२८॥
चांद विना जिम जामनी॥ दंत विना गज सोय॥ आंब विना मूष जेहवो
तेम शील विना नर होय॥२९॥ लूण विना जिम रशावती॥ कंथ विना जि
म नार॥ शील विना सोभे नही॥ देह सही नर धार॥३०॥ कोन सम्यो जि
म कूतरो अथवा हरुक विष सोए॥ पलक एक रही न वसके॥ नंदक

तछे पनार ॥४५॥ अबएणको वरणन करू ॥ सुणो सह नरनार ॥ वसण
न्नावुजा मेनहि ॥ ते उतरसे पार ॥ दूत वसण पेहलो परकार ॥ तामे पंचव
४६। चोपै स्तकोनाश ॥ अन्नूता घरे मटे सुन्ने करम ॥ लोकमो हे नं द्या नो मम ॥४७॥
धनानासेन करे वीसवी[illegible]श ॥ हुंसा मृषावाद ॥ सजन परकास ॥ चोरी दो
षते प्रगट होए ॥ मैथुन परिग्रह ॥ दोषणसोए ॥४८॥ माहापाप इणथी उप
जे ॥ वसण सात निस्चे निपजे ॥ नलराजा दुषणथी सहे ॥ राजगमायास
रू को कहि ॥४९॥ पांडव हारी द्रुपती नारी ॥ सहु कोन्नाब सन्ना मझार ॥ केपु
एणे रषै नरधन काया ॥ निचगति जइ वासी लीया ॥५०॥ करणी करे तके नि
स्तारा ॥ गाफल ते नर केपरवस्या ॥ लेकांतणी कहावे जीह ॥ तेनर ने
सहीवांको दीह ॥५१॥ दोहा ॥ जयो वसण पूरो न्नयो ॥ अलप जके स्यो

एणाथी या लेखो करता पूरा न्नया ॥ ए द्रष्टांत सुणो जे नर ले माहा वैराग ॥ न्नयो
नेत ले ॥३९॥ अगरु लेई परनारी तजी ॥ एक मना थई न्नूदर भजी ॥ उतम नरना
री मंन वस्ती ॥ एहवी अनीत करजे कसी ॥४०॥ एह समंद तो पूरो होय ॥ मंन स
का मत करजो कोय ॥ बुधसारु मे कस्यो विचार ॥ आगम मांहि अरथ अ
पार ॥४१॥ न्नणो सुणे जे पालेतिह ॥ परन्नव सूषीया थासे तेह ॥ नेवरी षअ
तर मे आलस्यो ॥ एह समंद मूरु हईणे वस्यो ॥४२॥ सातवसन ॥ छ ॥
॥ पुंन रपी न्नेद कह्यो गरुराय तेसुणतां मूरु ऊलर थाय ॥ सातवसण मू
रु कहो उलारा ॥ कुण करणी कुण गतमे वास ॥४३॥ दो श्रावक मूलाचा
र मे गणधर कह्यो विचार ॥ तेह थकी मे सो न्नली ॥ करु अलप वीचातार
॥४४॥ जूवा मेष मद सुणो ॥ वेस्या ने से कार ॥ चोर वचन जूठो कस्यो ॥ सप

श्री श्री

॥५९॥ हलाहल पातक कह्यां॥ ए जांणे सहु कोय॥ जतन तेसी मत उपजे क
रम करे ते होय॥६०॥ जीन्या इंद्री कारणे॥ फर र लेये अवतार॥ चोरा
सी मे फेरवे॥ सहे दुष निरधार॥६२॥ दोइ वसण पूरा थया॥ कह्यो अल
प विस्तार॥ अब मदिरा दोषण कहु॥ ते सूणा ज्यो नरनार॥६३॥ चोपई॥ मदिरा
से सुधबुध सब जाय॥ जिम भाय तिम नीकसे वाय॥ मारग चोहटे मारग जा
से नगणे बेहन नणजने माय॥६४॥ मल मूतर थांनक न वगणे मूगत
पंथ कमाणी वणे॥ मूष मांहि थी नीकासे चार॥ केहनी पण न वमांने कार॥
६४॥ मरणतणी न व चंता कारि अठ वहु तो देह दिवा फेरे माषी मूष न व
छोडया रा॥ अंग थी कीछूटे दूर वा रा॥६५॥ परतछ दीसे राषस सूप॥ कार
त के न व मांने न्रूप॥ रावण बेटी जीवण जा रा॥ जांणे कुल नो करसे नास

१३९

वषांणा। अमीषन्नाह बिजोकह्ना। सुणो चतुर धरिकान ॥५२॥ आपणो अ
मीष कारके घांमूष चीता सीह ॥ एक सुषी दुजो दुषी यो दूषमे एलीह
॥५३॥ अहनीश आतमसु चरहे ॥ काया सुधन होय । जमारो जुणापढ
यतब । बलनव चाले कोय ॥५४॥ होम जाग एकादसी तीरथ जात्र जा
य ॥ दांन पुन्य बेन नेणो जी बहु बिधकरे अलाप ॥५५॥ वेरागी घन छो
रुदे दम तप नाम मन लाय करु करा व्युं सवे अ वरथा ॥ एम बोलेज
दुराय ॥५६॥ निरदिन रनीशाकहो मनषमांहि अजांणा ॥ एकरतव
नेकोनेहि करे धरम नीहांणा ॥५७॥ उतम बोलेए उरधेजतो निचग
तीक्यां जोये ॥ चंद सुरज लगे त्यांपछे जेनर आमीष षाय ॥५८॥ वेदको
चौदमे माहा फुरांणो जोय ॥ पनरसापारी आगले कोराणमे कहू सोए

१३९

बीज तेसो फल होय ॥७३॥ दोहरा ॥ नृती यं न्लेद म द्रातणो ॥ कचात कहो वीचार ॥ अबगणीका दोषण कह्रो पातक नी नहिपार ॥७४॥ चोपइ ॥
वेस्पा गमण करे जे नरा ॥ आपो नीति जांणो षरा ॥ हाथी नी परि माथे धूल
मन्नाली पेर उपाय मूल ॥७५॥ कोमल वचन कही मन हरे ॥ उत्तम मध्य
म सम कर धरे ॥ विषयन्तु षण बोहला साज ॥ देषत पडे गरुदा बाज ॥७६॥
॥ जांणे स्वर्ग थकी उतरी ॥ करे म्हे ज्यो व न्नामी कूतरी ॥ परत ह्न दासे विष
नी वेल एणासग तथी परुसे हेल ॥७७॥ हाव न्नाव मन अति विलान्ना देषत
दृष्ट पनि पान्ना रात दीवन्ना धन उपर लीन ॥ वुचन न त कि बोले परवीन
॥७८॥ परतह्न दासे एरा ह्रुसी कांमी नर नेह इरु वसी ॥ स्वारथ लगे अति
करे सनेह ॥ नहीतर रुटके दो न्नो छेह ॥७९॥ स्वरगथ काजे पाहे इन्ना
वन मे थी ठाले मो नी न्ना ॥ रांण षोमांण तके सव छव्या ॥ घणा पुरष तेध

वषाणा॥ज

१३८ ॥६६॥ दोहा॥ कंसासूर जाणी आन्नद दीधी कुंमरी ताज्ञा। दोए पंष नो पण
हैयकरी कीयो सुगत नो नान्न॥६७॥ परत रु वात सुणी वली ते जाणे सक्
कोय तो पण ते छोडे नहि॥ गमण ने सी मत होय॥६८॥ चोपई॥ चोपगा चो
वरु का चाम्ररु कीया॥ ते [illegible] लेई पग मे पेहरीया॥ ते पेहरी मदन वत्राच
रे ते हु जीव नी करुणा करे॥६९॥ मद्य छोड्यो लागो पेजार। ते हु जीव जाए
नरक मझार॥ मधु आचेरे तके एम कहि मोते वृले तेन वलहि॥७०॥ पाप तणु व
धाणो मूल देझा दां मन पादी धूल॥ जादव कुल ए एाथी क्षेय गीयो॥ माहा
न्नारथ मे माधव कह्यो॥७१॥ तोये आंबन बो ले कोय॥ दोन पुंन्य ते नीरफल
होय॥ करो करा वृ निरफल सोय॥ आंधी वणे बाछे रु षाय॥७२॥ कहो ते
कीमे न पुरु छे पार॥ नरके जाता वू बने वार॥ घणुं कहि न व मेले कोय॥ जिसू १३८

सेठमे बुधनरती॥ तेसोगणीकासंगतपणो॥ जेसो छार ऊपर लेपणो
॥८७॥ हाथीहणो तकेषमजे॥ ते रूपामंदिरनवपेसजे॥ ग्यांनीनरए वरज्यो
जरो॥ मूरष न्हाषे उपासरो॥८८॥ अनरथएणीपारेबोलजेह॥ कह्या
नरफलपांमेतेह॥ सत्यवचनसहूकोमांनजो॥ रातदीवस हइडैधा
रज्यो॥८९॥ दोहा॥ गणिकारस पूरो नहीं॥ जेसो निबब कांण॥ अबआ
घेटकमांझसी॥ नवनवकरसीहांमेण॥९०॥ आहेडी दोषणीघणो तेमू
षकेखोनजाय॥ अलपकहूसवछोडकेते सूण ज्यो मन लाय॥९१॥
चोपइ॥ जालापासाकेडेबहू साथ॥ चीताकुं कर लीधा हाथ॥ सं
करासेचाणामंनरली अस्तुनतणीतेरोलीमली॥९२॥ परजीवाउप
रज्योपाल॥ बहूजीवांमेकीयाहवाल॥ सांबरहरणी स्त्रीनीजात तेह
नोबालकनीकुणवात॥९३॥ तेपण संघलां कीयां नीराश॥ सहूको

वर्षागा॥=
लजमत्या॥८०॥ मायबापबंधवनीजोरु। न्यातपांतगोतर सवछोरु॥ एण
संगतथी अलगा न्तया नीचानरतेसरू कोक हुया॥८१॥ दोहा॥ संगा
तके छोडी दीया॥ ए हुवे रुपानेकाज। पण तके तेहुनी नहे॥ गरथ गमावे ला
ज॥८२॥ चोपे मदीरा मांस न्तषेमन लाय॥ एण संगतथी उमग थाये॥ धने
वताने निरधनकीया॥ उत्तम नरने लछन दीया॥८३॥ किवनो लषपतिक सेठ
हुवो एण संगतथी नरधन थीयो॥ धंन सगला नो आव्यो पार॥ को करु
होय न्तेज्या घरनार॥८४॥ जो एपु धननो आव्यो छेरु॥ तरुकसू तो न्योस
नेहु॥ चतुरनं सू एग ज्यो कांइ कीउ तरत लइ बाहेर काढीयो॥८५॥ जे ॥र
सोरंग पतंगां होय॥ विण बादल कांइ वरस्ते सोए॥ बादल छांहे सूषजे
तलो॥ गणका होय रंगते तलो॥८६॥ लूण विनो जेसी रसवती॥ नगर

परमेस्वर श्रीकृष्ण कुं मोरार॥ बांणह रोक्ते जर दकुंमार। वन्नाणह
नूत्रआ हणत एणू॥ जो योए पातक बांध्यू घणू॥२॥ पुनरपि कहि
ए राजा राम पोतानु वण सान्नु कांम॥ हइये सुधन कीधी रती
कंचन मृग नी पायो नथी॥३॥ लेई धनूष दोड्यो तेही वार॥ पाछे
हरा ते स्रीता नार॥ त्यार पछे कुंण अनरथ कह्यो। परमेस्वर पण बहु
दोष सहो॥४॥ सुण अरजण कहि जादवराय॥ पश्रू हणे पातक ब
हू थाये॥ रोम एक परत वरस्र हजार॥ कूगती दुष सहि निरधार॥५॥
ए रु वात निहस्ये मांन जो पांडू पुराण मांहि जांणजो एह द्रष्टांत
सुणजो जेतले॥ उत्तम नर धूजे ते तले॥६॥ हवे नहु सांकर सी
कादी॥ सूषे तरस्या वेतरणी नदी॥ पाछे कीयो तह लेवां घाय॥ श्रा

नेसा।रषीआनरा॥सहूजीवांने जीव्योगमे॥हुंसाटे चेकुं गतमे न्नमे॥
॥९४॥ सरवे केहने त्रीत न होय॥सूषसाता वांचि सहू कोय॥आपणा
कलूबाने सूरव करे॥षलतरणां सुं पेट जन्नरे॥९५॥ चोरि करे ने पाळि
वार तेहने हणो तके सामाट॥परने सुष तो आपण सूषी परने दूषवे
तो थ्यासो दुषी॥९६॥तेह नर तो जोणो पातको। देया धरम नो ते घात की
एकजीवने हणसे जेह दशान्नव वेर लेये सही तेह॥९७॥दोहा थ्योफोतो
दशान्नव लेये नेहुतर न लहू पार॥ते कारण तुझने कहूं करो ता परनी सा
र॥९८॥सुषदेतां सुष उपजे दुष देतां दुष होय॥कोई जीवी कोइ आयुषा
ह इयेवी चारी जोय॥९९॥अरेअजांणा हीजी वना कोइ करे अकाज॥
षासी सहू कैटबको॥माथे फलशे राज॥१००॥यमत णोहेरो फरे रात दा
१२० वशातूरु जार॥कोइ न चितो नर सोए॥लेतन लागे वार॥१॥चोपेइ॥ १५०

वात्रा॥ सुष बरष गिरि किनर वास॥१४॥ चोर तणी संगत जे करे॥ तूण
जीव नृपत तेहनी हरि॥ चोरनी संग करि ते चोर॥ उपर कोन वकरे ते जो
र॥१५॥ सगोत के न करे सुषवात॥ साहमू पण न व जोए मात॥ एहवी
चोर तणी गत होय॥ बालोत के नव पावे तोय॥१६॥ नाषे नीषावे बहू
धन षाय॥ हलवाई वेश्‍पा घर जाय॥ लोको मे गीयो तरा मोम॥ कोकर जि
म तिम नोषे दोम॥१७॥ परधन उपर बेवो जके॥ पग न लेइ मरण न जां
णी तके॥ लेतो हुइफे हरष अपार॥ पण न व मांने केहनी कार॥१८॥ हाल
कलोल करे न्लवपूर॥ [illegible] हां कूकम कमायो कूर॥ एम करतां राजा झाली
यो॥ बाफे न षा बोफे घा जीयो॥१९॥ नाक कांन कर छे द्यायाय॥ कस्वो
जू जूयो मेहली घाय॥ अथवा सूली उपर दीध॥ दूर तके सगा सहू की

कु

गेकरमकछुनबंधाये ॥७॥ दोहा ॥ आपेटपूरोन्नेयो ॥ कह्योअरथ
मनलीण ॥ अबचोरीदोषणकह्यो ॥ तेसुणज्योपरवीण ॥८॥ चोरी
करिनरसूषलहि ॥ दुषपावेततकाल ॥ एहतोवसणन्तलोनहि ॥ एम
बोलेबालगोपाल ॥९॥ चोपई ॥ चोरीकरेनेपाडेवाट ॥ परधनलै तके
योसामाट ॥ फासीदेतानकरिदेया ॥ हणीमनुषनेजायेवया ॥१०॥
छोडीगांठकरेबहुकला ॥ अनरथकरीनरेतेनला ॥ एहवांनरबहु
करेअपाल ॥ हइडेपडेअचतीझाल ॥११॥ तेदोषणनोनलहुपार
नेकनजांणपरनीनार ॥ दुर्बलनीतेनकरेदेया ॥ निरदेनरतेनीह
मेकेहा ॥१२॥ मूषमेठोदलअतिकठोर ॥ घणोमालजडेतोएन्नोर
॥ नामलेहिजतेलनीविदा नीदरनरनवसूयेकदी ॥१३॥ लोकां
१४१ मेतत्रानेथ्याहोय ॥ बूरोबूरोबोलेसहुकोय ॥ नकरेतेहुनोकोयवीत्रा १४१

मन सांसो ऊपनो ॥ ते आजो गुरू राय ॥२७॥ पेहले नरके जीवसे बिजे आ
मिष होय ॥ मदीरा त्री जिनारको ॥ चोथे गणिका सोय ॥२८॥ आषेट क
तो पांचमे ॥ चोरी छठे समाय ॥ परनारी ते सातमे ॥ एम बोले गुरू राय
॥२९॥ जेह नर नेजे हवो वसण ते पोहछे ते ह गय ॥ ए दुरगत के हाथी ए
एह घकी दुषपाय ॥३०॥ सात वसण अलान हि ॥ चमूता चरुती होय
कसु करावयो सव हरे ॥ लोलापी लोसाए ॥३१॥ वार रके तुकक ॥ छोयो
अहनी संग ॥ नहीतो बहु दुष पांमसो ॥ परुसे रंग मे अंग ॥३२॥ सातव
सन पूरा थया ॥ कह्या श्रीगुरू संक्षेप ॥ जे समजी ने पालसे ॥ ते नरसू
रनर लय ॥३३॥ चोपई ॥ नव ज्रीष मेनु मे हरषीत थयो ॥ अजब संमद ॥
श्रीगुरू ये कहो ॥ पुनरपी भेद कह्यो गुरू राय ॥ ते सूणतां मुरु ने लटथा

नर्मोजा

ध ॥२०॥ घणाहवालकीया तस मांहि ॥ घणुं दहे तसहयीमांमांहि ॥ परमे
स्वरछोमि एकवार ॥ एहवां करमनां करा लगार ॥२१॥ परवेरी वृक्षा पडीया
जेह घणो दहे ववछूटे तेह ॥ एहनो कदी पोहचे काल ॥ एहवो बोले बा
लगोपाल ॥२२॥ कोवर लोते करसे मया ॥ एह लोके फल एहवा कह्या ॥
परलोके दुषनो नहीपार ॥ नरक मांहि बहु पडसे मार ॥२३॥ दोहरा ॥ अ
लप समंद चोरी तणो ॥ कीयो ते मनह वीचार ॥ ग्यांनवंत करणा न करे ॥
तो केहतां न आवे पार ॥२४॥ कह्यो दोषण जेसा तमो ॥ गमन करे परना
र ॥ ते समंद पाछे कह्यो ॥ पण छे अति हरशाल ॥२५॥ तव शीष मनब
हु दुषकीयो ॥ एसाने माहाअनीष्ट ॥ पापतणां थानक सही ॥ उत्तम
नर तेन्ह इष्ट ॥२६॥ परत्नव कुंणा थां नकलहि ॥ केसी गतते जाये ॥ मूरु

मीतणीमन लोपेकार ॥४०॥ पाप तणे थांनक छे नार देया तणीमत
लोपेकार ॥ पूरषतणे बांचे अवतार ॥ तपसां न जुन करे नीधार ॥४१॥ २
॥जीवतणी ते रक्षा करे ॥ नं ध्याविकथा मद पर हरे ॥ आपवखाण तजे
कूकार ॥ सबरछापण मेले नीरधार ॥४२॥ आहार उघने अलपज करे
रातदीवस मनन जंन धरे ॥ तनवस्तर मेला राषजे । पाणी पण थोडोन
षजे ॥४३॥ दोहरा ॥ नारलछण नीस्पे केह्यां ॥ एकुलवंती जाण अवज
गजीतणा कीदसा ॥ कफसुण ज्यो धरी कान ॥४४॥ श्रीजिनवाणी सुणी आं
न णीमन आणंद ॥ जाणी प्रमादं नमी ॥ जिन चोवीसे वंद ॥४५॥ महि[illegible]म
लमोनी वरजे हया । अने होसे गुणवंत । ते पण वांदो हरषधरी ॥ करजोडि
एकचंत ॥४६॥ स्वामी चक्रगतक नम्यो ॥ नम्यो ते नवन वदेस ॥ मातपीता

वर्णाणा

य॥३४॥ नारीनाथांनक वरज्यां॥ वरज्यां कुंण थांनक नारने वड्डो
पवलिङ्गीलवनने सांन्नलवछ मंनआंणीनेह॥ कहूवा तम करेस त
देह॥३५॥ आगण जांन जात्रे जाये जे ह॥ ज्यांनी पुरष वरज्या तेह॥ दूर
निवांण नेएकली नार॥ वरज्या वेस्यानां घर बार॥३६॥ जो णीन हीन्न
वाडीसह॥ रजक घेरते ह जो णो न ही॥ मल अबाफा जोयामती॥
मेनघोरता नवरे हसेरती॥३७॥ राउल देउल दरवाण वदि। एकलो
मतजाजो कदी॥ जांणां वाणां बोहत नीवार॥ जोतो मूंने कूलनी
कार॥३८॥ पांनी कुर ते चाल निवार॥ दूरथकी छोणां नेगार॥ एक
लमु नारीने जेह॥ सराग थांनक वरज्यां तेह॥३९॥ घणु नरे हणमा
१४३ ताजेह॥ जान वंतने वरज्यो तेह॥ हसणो बक्क बोलणी नीवार॥ स्त्री १४३

पण

एतेणेथानक आवीयो॥ तेहां जोयो नवदीसे कोय॥ राजा एक सूतो

होय॥५४॥ तेणे अवसर ते पाचो फरो॥ मोहराय आगे जइ मल्यो॥

तव बुझण बोल्यो करजोड॥ सूंन्तर गीया सघला मूषमोड॥५५॥ तेह

सुणी राजा हरषीयो॥ साथे पछी सवे बोलावीयो॥ करो सतावी नहीं

यावार॥ वेगे आवो असवार॥५६॥ क्रोध सार तेहां आवीया॥ आठ

करम केडे लावीयो॥ असुभ मली आव्या असवार॥ रागद्वेष मली

याझुझार॥५७॥ असयम सुभट आवीया॥ अवरत पण साथे लावी

या॥ झुवतणा मलिया बहु थोका॥ विषया रहा कहि सकु फोक॥५८

॥ एहे मुरु आगल छे के तलो॥ पहने हराव्यो हूं एकलो॥ मद आठ मे

गल जूजूया॥ तेर कांठीया माहां तजहूया॥५५॥ सतावन आश्रव परवस्या

बहोलाकाया॥चलतफलताकरिवेन्रा॥४७॥दुषबहोलापण तेहांसह्यो
अनंतअनंतीआपु॥तेसुषकहिए केतलां॥तूजांणेमायबाप॥४
८॥नवद्वारेनयरीवसे॥राजाचेतनतनाराा॥मारीनोगढ चिरूदसे॥जो
तांमेंननेलास॥४९॥वसेवात्र सवेनेवारीया॥समकीतरयणआ
पूर॥करियाक्रयांणोकरे॥नयरजसोनरपूर॥५०॥ पणपासेमो
टावसे॥पलीपतमेवास॥सहीतणोकारणकह्यो॥होसेवस्तवीणास
॥५१॥चोपइ॥ एकदावरापह्लीसकुमल्यो॥मोहरायमेहलमेनल्यो
स्वांमीअम्यो सवादीघण॥काफनपाहळे॥कांइमनतण॥५२॥तेसुंण
राजाबोलीयो॥दुरमतीजोसीतेघावीयो॥जोसीकरोअमारोकांम॥ज
१६६ ईजोयोचेतननोगांम॥५३॥ तेणेवचनेदुरमतचालीयो॥ततद्ध १६६

बोसी षबाश वातचालवे हरमपोतू लेई आगल धरे ॥६७॥ रलियाती विजया
को घली ॥ मनसा वेची आपे वलि ॥ अनूपत लीयो मांदे दावरो ॥ तृष्णा नदी
मांहि थी तरी ॥६८॥ कलप नाती हां मेहल्या टूकीया ॥ संका कुमर पीवा
णो दीयो ॥ अवीवेकी मारग सज करे ॥ आसा आगि सक्र संचरे ॥६९॥
अजयाण नयारात अधार ॥ चम्यो करक न लागी वार ॥ पालातणो नेला
नुंपार ॥ पोहता पारणे नयर दोयार ॥७०॥ दोहा राजा सूतो नेदल्लर ॥ नयरी
हालकलोल ॥ जे मन मांने ते करे नवे व्यारबोल ॥७१॥ सुगुरु तणो उपदेश
सो ॥ सुणे रायस्रुजाण ॥ तव मन कंपार वधीयो ॥ नितकी हाण वीहाण ॥७२
॥ सुमती सेठ मली आवीया जणमी मन उलास ॥ वस्तू विणासे ताहरी ॥
पलीपतमे वास ॥७३॥ चोपइ ॥ तेह सुणी राजा हरषीयो ॥ पचमाहा वरत लेई

॥ तेपण नेमी आगल कस्या ॥ अनरथदंड ऊलाव लकरे ॥ आश्रव द्वारम
लि चीकूंदशा फेरे ॥ ६१ ॥ आठारपापस्थानक आवीया ॥ परीग्रह चोवी
सेलावीया ॥ सातवसण चपालीई करि ॥ हस्यादिक आगे धरे ॥ ६२ ॥ मलि
आव्या पनरपरमाद ॥ दरबारजई दे साद ॥ सातनय बोले एम हसी
हुजीवार कहो छे कसी ॥ ६३ ॥ अहंकार तोरी पाषस्या ॥ दंडमांसणीपण
परवस्या ॥ पंचव सोकमस्या एकवार ॥ मोहराय रूया असुवार ॥ ६
४ ॥ नयणानो भूधर घम घमे ॥ रत अरत दोए चमर ढले ॥ हूं हूंकार छेत्र
तामीयो ॥ बाहीचो वक कर ऊलीयो ॥ ६५ ॥ नक्षात्रणां गम्यां ने सांण ॥ म
लापलीपत सांणो रांण ॥ संज्ञाना च्यारवा जे ते हांन्नेर ॥ लेश्या त्रण फेरे
चक्र फेर ॥ ६६ ॥ कीरतवात्रा करे जे टाकार ॥ मिथ्यामतमांहि चलणदार

तेहो

नराय न्नया असवार॥ चित चाव कलीयो सार॥ अजा चा क मोहि
चलण दार॥८१॥ आतम ध्यान द दोमो दीयो॥ शुन्न ध्यान नेजो करली
यो॥ यथाख्यात मेगलमल पंत॥ समायक मा ह्वोत सान्नत॥८२॥ नवक
लपीचो तरे सोन्नंत॥ उपकरण कोरुरु लंत॥ एकांत न्नूमि मादल
रणा कंत॥ करपात्र आगना चेत॥८३॥ पद्मासण धरी रह्या परवीण
॥ अतर दृष्टी धरि लिली ए॥ सोहंस बूसुणो जबसहा। पलीपृत मंनसे
कान्नझी॥८४॥ उचागोष अवाचक होय॥ शिवकन्याम लिरोले जोए
जोय हम जीते न्नोपाल॥ तोए हने गले घालु वरमाल॥८५॥ निज
रातणी धारा अतिवहि धीरज को कांबाण करलहि॥ तपसं आंमत्र
कलान्तहे॥ वेराग बकछी कंघ्य रु हरु॥८६॥ लेनूपा मुकाल करे हस्तना

सजकीयो॥पंचाचार वस्त्र आवतां॥सील सन्नाह करी सोहंता॥७४॥
पंचसुमती लीधा हथीयार॥मछतक टोप गुपति एकसार॥समकितनो
दीपलो एणसार॥समता उपर पाखर धार॥७५॥आठ अंग संकेत वलीया
नव द्वार वेश पूरीया [illegible]॥सतपणो नव वाडे जाइ॥सयम सूनाट ते
आगे थाय॥७६॥मलीया बार वरत बागीया॥गुणतेरे के हेलावीया॥बारभा
व आव्या घसमसी॥सुभलेश्या मन थाय खुसी॥७७॥पांच कांने कुंडल झ
लकंत॥अपार अंग हार लटकंत॥नव वाड सोहे मुदडी॥सबूरी बांधी कं
ठे सरी॥७८॥जेयणा पाय मोजडी चमकंत॥पूरव हाथ संकला शोभंत
सूरत चिह्न दिवा चमर ढलंत॥धर्मछत्र उपर तांणंत॥७९॥मंन प्रधान
१०६ विगे आवीया॥सहस अढार सुंनाट लावीया॥नेजा थई आव्या पवाडा १०६
सतोष जलनी छोगल पाडा॥८०॥अप्रमत कर्म लांन हिपार चित्त

॥८३॥ सुन्नट सहू घर आविया॥ नयरी हुयो जयकार॥ शिवकन्यात
तपरणइ॥ कंठ ठवी वरमाल॥८४॥ नवनवना केरा रल्या॥ मलीयो सी
वपूरसाथ॥ एकमना थइ समरस्ये॥ ते पालेसी वबाथ॥८५॥ चो
पई॥ एह विध जे जीते नरनार॥ ते शीवपूर साथे सणगार॥ दुरगत पड
तो राषासोए॥ ते सिर नरक न वेदन होय॥८६॥ रागद्वेष सेका परहरो
पक्षपात पण न वमन धरो॥ गुण मन गुण विचारो नेह॥ एअ ढ्हरसंघ
ला छेवेद॥८७॥ नेधा विकथा मद परहरी॥ करो ध्यान मे न आतम धरी
एह अरथ जे मन मे धरे॥ ते घरनावट संघ जीरले॥८८॥ नरनारी नणजो
मनरजो अंगतणो आलस्रा परहरी॥ मुगतपंथ सोहीलो मले॥ नवनवना
उ चालाटले॥८९॥ दोहा॥ जेम जाणपूने कहू॥ सुणजो रुदे मझार॥ अलपबु

लस्रुन्न परिणांम मांहि दारू मार॥ अनह दनाद पालीतो दीयो॥ तव
ग्यांन गोलो चालीयो॥८७॥ हणी मोह नयो जयकार॥ दशलषण छत्र
फेरे सार॥ आव ध्यांन दोम्या धसमसी॥ छेमाय ठगलेईने मसी॥८८॥
वविक कुमार ते आगे धाये॥ कहोय लीपत कुण दिश जाये॥ निरम
ल दृष्टी दिनकर ऊगीयो॥ अजेणा मन नवकु दुषदायो॥८९॥ नागी धाम
ति दिक्कु देशा जाय॥ आणे जई सकु ने जाथ्याय॥ एक कहि राजा विणए
सू हाहारि हविकरया कसू॥९०॥ एक कहि चक्कु गत मे घणा॥ एक
कहि सकु ए आपणा॥ एक कहे पाटण छे घणां॥ ल क्त चोरासी जीवा
तणा॥९१॥ एसु विमासी पाछा फस्या॥ दुषधर तास कु थां न कमल्या
१६१ एहवी धसेन्या जीतसे॥ ते मुषे वेरी वापूर पो हचशे॥९२॥ दोहा॥ एरुप १६१
छीबते परहरे॥ तेह परवीण मदेव॥ तेहनेजे आदरकरी ते जगवासी जीव

एतो पेषे २ मोहन्नपटेक ॥ मूरुमनमे वासी वसने हे हो ॥ तूम चेतो २ च
तुरसूजांण ॥ मूरुमन० ॥७॥ अकण सात वसण नासेठीया हो ॥ विकथा ला
रे लाग ॥ विषयारस दे षण चले हो ॥ आवो २ आप षेलां फाग ॥ मूरुमन०
८। चांग चतूर कर त्रोन्नती हो तालि हाथ अपार ॥ दुविधा बक्रूरंग
वांसलीसो ॥ हंसाजांणो रुदरहार मूरुमन ॥९॥ क्रोध नफेरी फरह
रे हो माया चुंग लसार ॥ मादल लोभ तसो हां मणो हो ॥ न बलत बलनो
नहीं पार ॥ मूरुमन० ॥१०॥ ताल दरुं टच का पफे हो ॥ मयूर मांन अपार ॥ न्ने
स्नु ई दोर वेदनी हो ॥ झांझर रो रुमकार ॥ मूरुमन० ॥११॥ कर्मकोट असोह
मणो हो ॥ पुदगल पफंदो बंध ॥ रागद्वेष दी वीधरा हो ॥ नाचे मोहनरेंद ॥
मूरुमन ॥१२॥ सका घुघरघम घमे हो ॥ नेद्या मूषत बोल ॥ असयम पेढीरक

मो हाथ ... सु मनत लाः ७३

आ घछे माहरी पकीत करो वीचार ॥२२०॥ एजगजीतरण चोपइ कही मंन
उलास ॥ करजोडीकवीयण कहि होज्यो सीवपुरवास ॥१॥ कर श्री आद दे
व अनाद जांणो गुण वषांणो तेह तणा ॥ सेयार अंसार जांणी ॥ सार ...
वांणी जेन तणी ॥ वन्दु श्रीजनराज देयाल दाग ॥ नीरन्नां जो हमतणी
॥३॥ एक सागर एक वेदा ॥ सरद मास सुकल वली विजगरु वेसाष
रनगरे ॥ रची स्तूती मंनरली ॥४॥ मंनसुध आणी पापजांणी एह प
ढीजे परहरे ॥ गुरु षेम सागर कहि साचुं ॥ तेन्न व मांहि नववसे ॥५॥ इ
ती श्री जगजीतरण चोपइ ॥ संपूर्ण अथ धमाल लिषते ॥ ६ ॥ चेतन चा
लो चाले वो हो ॥ नारकरो उजमाल ॥ मिथ्या मारग सजकरि हो ॥ फरि रती
नसे ताल ॥ छ ॥ मूरुमन मतवालो मदचयो हो ॥ एतो येषे २ तीनसे नेताल

१४८ ... १४८

राखो करे जतन घणा ॥१९॥ चउप करो जतन घणा पीउ मन न सुधे ॥ कोई
लागत पछे न व कारि ॥ परतरीया लोजन देयो लावता ॥ अंत एम मूझ ने परस
रो ॥२०॥ माय बाप बंधव पूत पतनी ॥ धोया करंब सकू एहु तणा ॥ सूव
नेह जोमो प्रेम जोमो । राखो करी जतन घणा ॥२१॥ चाल ॥ सूण सुंदर रे ॥
कंथ वच न कहि मन तणा मूझ पा घेरे ॥ आदर कुंण देसे घणा ॥ आन
घणा रे उतारे सहू अंग तणा ॥ [illegible] ॥ मूष दीसे रे । अंग सवे असोहाम
णा ॥२२॥ चउपै असोहामणा सब अंग दीसे । रूपलाव एय सब हरे ॥ स
गात के । सकू चोत मांने । कोय मन मे न वधरे ॥२३॥ बल तेज प्राक्रम सब जाय
कां मंन थाए परतणां । दोयार संगला नर त्रीया दीसे ॥ अंग सवे असोहा
मणा ॥२४॥ चाल सूंण स्वामी रे मूझ विना सूख न विलोगवो ॥ थे तो नरके

रे हो॥ उके लाल गुलाल॥ मूरु म न० ॥१३॥ थावर जगम नर स्त्रीया हो॥ वेरा अ
मूलष झोल॥ कारत दि कू दिश विस्तरी हो॥ आरत की रंग रोल॥ मूरुमन० १४॥
एह अनादि पिषलो हो॥ दषो देषो चतुर सुजाण॥ जीव सकू को सारीषा हो॥ म
न को करजो कोइ हांण॥ मूरुमन० १५॥ कर जोडी स्तरो नमण हो॥ प्रभु नाट
के एहनी वार कू बल हारी आप कुं हो॥ गही गही पावो पार॥ मूरु म० १६॥
वसन रत सोहामणी हो॥ सोहे मा घी मास॥ नागोरा उपा सरे हो॥ गा
यो र मनरे उलास॥ मूरुमन० ॥१७॥ इति धमाल॥ दोहरा॥ ॥ चौद लोक
एमन चावीयो षेलोर नवषेल॥ अबजरु चितन की कथा॥ केहसो तेस
नगे ल॥१८॥ अथ चू जिन वां दोर नीग्रथ गुरु मे गुंण घणा॥ पीयू सुण ज्यो रे
१२५ सुंदर वचन सोहामणा॥ मूरु पाषेर॥ कोइन पुहछे मेन तणा पीयु नितसे २५५

॥३०॥ चाल॥ सुंणस्वांमीरे चक्रगत मोहि रूषरी॥ मूरु पाषेरे तूं किम जाये सन
वतरि॥ ठकरां णीरे मूरु सेती पांचे सूरी॥ वियोगेरे मूरु कारण थायु दूषी॥३
१॥ चाल॥ दुषीथायुते बारह केरे॥ सूकीने पंजर थइ॥ शिव सूरश माधि सूष इषु
हचे॥ मूरु स्वारे जिनवर कहि॥३२॥ शीत ताव क्रूचम तरस्ये। क्रछ म[illegible] विचामषी
॥ अेह वाशा तजी वंन वास जायु॥ तूरु कारण थायु दुषी॥३३॥ चाल॥
पीयु तरूषोरे॥ वचन पनोतीने कहि॥ तूरु घरेर बेसते सुष के मल हे॥ स्त्रीयनष
शिषरे पूरण अवगुण सुंनरी॥ तो तो अरु निसारे॥ कूड कपट नी कोथली॥३४
॥ चनाके॥ कोथली कूरु कपट केरी॥ तूरु संगे कोय सुष लह्यो॥ नर अमर दरशणी
राय राणा॥ ते सव किंकर होइ रह्या॥३५॥ जा ने फट निगुणी लाज वक्रणी॥ स्वरे
तूरु पाषे सही॥ वेकुंठ पर घर वास करसू॥ तूंषी षथई जायेवही॥३६॥ चाल॥

रे जइीने दुष केम जोगवो ॥ चक्र गत मेरे दुरव अंने तां त्यां सह्यां ॥ ते
छेदन रे भेदन कि म जाए कह्यां ॥ २५ ॥ चऊवो किम जाए दुष मूष के हतां ।
स्वांमी घेजो एणे घणु ॥ नितई तर निगोद भमतां दुरव जां एणे मनतणां
॥ २६ ॥ एपी चथा । वर भम्यो रे भोला ॥ विगलेंद्री दुरव बहु सह्यां ॥ तीरी
यंच मांहि परत णे घाये ॥ ते दुष केम जाये कह्यां ॥ २७ ॥ चाल सूए भोली
रे गरभ न कीजे पीयू कहे ॥ मूऊ पाषे रे तू पण कोणी नव लहि ॥ सक्र देषतें रे
कर झालीबा हर धरे ॥ एक हांमीरे भाजी एक आगल धरे ॥ २८ ॥ चऊवो ॥
तूऊ करे आगल भाजन भागे ॥ धंन सजन सक्र ते हांर हि ॥ सकट एक च
रलाव कागी ॥ तरत पावक मेदहे ॥ २९ ॥ पंचदीवन्नाम लि सो कपाळे ॥ प
छि कोनव चेतधरे ॥ एसां विनांक वीते तूऊने ॥ हांमी एक आगलधरे

समभावे जतन करु ॥४२॥ दोहा॥ भगवान हव भाज्यो परो ॥ मंन मलियो
नरनार ॥ समभाव चित राखीसी ॥ ते पुरुष चे भव पार ॥४३॥ जब लग आस्या
देह की ॥ तब निरभय न व होय ॥ स्त्रीय विना शिवपूर नहि ॥ हइये विचा
री जोय ॥४४॥ स्त्रीय विचारी क्या करि ॥ पीउ अतली बल होय ॥ दोनु
मली रंगेरमे तो ये प्रीत वस होय ॥४५॥ चेतन ने से भणी तणु ॥ वीदरवू
मंन लाय ॥ खेम कहे तत सूर कहे ॥ तो सेहजे शिवपुर जाय ॥४६॥ जउ चेत
समवाद मे है ॥ कहो सुगुरु समझाय ॥ सुरपचीसी अब कहु ॥ सोणो ॥
चतुर मंन लाय ॥४७॥ नमो सीधनय ॥ श्री जेनवर [illegible] चिद्रूप नमीजे
आगम मे दुत आध्यातम कीजे ॥ अष्ट करम सुझ भव भजीयो ॥ धरम नजा
णो बह कर चमीयो ॥४८॥ काम क्रोध मोटा मेवासी ॥ तेणे ही बाध्या
स्त्री ना पाशा ॥ रागद्वेष दोय सुभट रुझार ॥ आलस मोह मा हामतवा

पियुवछनेरे गरत्तगत्यो आरतन्नइ॥ भरषोज्युरे पीयुपावे नर संरे सही॥ स्त्री
बोलेरे स्वामी मेह सेत्ताकरू॥ तुमे दरशणरे देषत मूरु मन ओलखु॥ ३७॥ च
गवे॥ ओलखुं मन देव देषत॥ अमीय मे लोचन॥ तुस्यां तुम अजर अमर अरूप
अवगत देषतां कारज सरयां॥ ३८॥ पण चेत षोलि स्वामी नरषो॥ एक पग नरके
म चले॥ विण शून्य तेरो वचनेरे गामी रमीको नहो करुं सकवेसीरे फोक
प्रवाह पण चले कहो केम॥ ए बोल मूरु करज्यो वली॥ ३९॥ चल तेण वचनेरे जाग
एपीयुन्नरोघरु॥ सकलेणीरे फोकट हवे नवकरु॥ घर मोररे जाना तू रुआ
फे घरो॥ हवे सुदररे तेरां जतन घणां करु॥ ४०॥ चमावो॥ करु जतन घणरे स्वप
कारण नही जांणन्नाफुदेयो॥ तूरुनेरे जमावू नहे॥ नंदु समन्नावे जतन केरू॥ ४१॥
गर्व
२५१ क्रोध लोभ॥ अहंकार टालू मान गालू मन तणां॥ रागद्वेष मन मलपषालो॥ २५१

हीआगम आगे चरनमया॥ ब्रह्म ध्यान अंतरपरजाले॥ कर्मकाष्ट होएमां
हिबाले॥५६॥ ऊपर पवन आकास चगाया॥ चंद सूर दोयेसुन्नदजगाया
॥ कमल एक सोलहदल लेकंता॥ हीरा मोती तिहां झलकंता॥५७॥ ता ऊप
र सेंघासण जोएए॥ मणीमयगादी तेहां वर्षाएए॥ गरूपर सादे से
वापांमी॥ तिहां विराजे अंतरजांमी॥५८॥ समर सजल संपाफा कीना॥
स उर्पूभरना चंदन घसलीना॥ भाव फूलकी माल चढाई॥ ग्यांन दीपकी
सिषाजगाई॥५९॥ विषेछेद निवेद वर्षाएए॥ क्रोधछेद फल आगि आं
एए॥ ध्यान धूप की प्रेमलदीजे॥ मनपजनम कालाहालीजे॥६०॥ आएं
दमे आरती वर्षाएए॥ नमनेटावी अद्भुतआंएणी॥ तीनतत्व को मूरत वि
राजे॥ सोहं सबदकी मोरली वाजे॥६१॥ नमर गफाम नमा अजूपाला

ला ॥४९॥ रुक्षालोच करे चढ फेरा ॥ तस कारण घरवास वसेरा ॥ प्रस्स
त्रेम कीयो व हू तेरो तेण ही काम बगाम्यो मेरो ॥५०॥ धन कोमा कर तो क्रुनमी
यो ते कारण मे आन व गमीयो लख चोराशी मे रुव फीयो ॥ जिम जोगी
करमां कारु चफीयो ॥५१॥ पुन्यपाप के मारग लागो ॥ एम उछाला करि रचागो
एम करतां सदगुरु मे पायो ॥ ताको वछन मोरे मेनचायो ॥५२॥ दूर करी ज
व संभवी माया ॥ तबही घरमे परचा पाया ॥ आहार नेद्रा अलप करि जाइ
आसण दिढ मन साथिर कीजे ॥५३॥ गगन मंडल मे पवन चरीजे ॥ त्रगटी
बंधनलीपर दीजे ॥ तिन द्वार रूधो परवीना ॥ दो द्वारे मूल ताजा दीना ॥५४॥
पेट पूव मलायो नाई ॥ गगन लंब कार हो बलाई ॥ अनहद नाद नलोपेर ॥
१५२ वाजे ॥ तबही मन का धोबा नाजे ॥५५॥ रेचक कुंबक पूरक कैना माया ॥ तब १५२

सकलपसारा ॥६८॥ अनुभव रस अपूरव चाषी ॥ तब आकुलता मन कीनांषी ॥ पुणी विधतम करजो पूजा ॥ आतम देव नदीसे दूजा ॥६९॥ पून्य पापकी दोरी तोरी ॥ सूषदुषकी तिहां मांन मरोरी ॥ पूजक नंद कदोये व षोणी ॥ हीरा पथर सम कर जांणू ॥७०॥ जे कारण तीरथ फरि आया ते स्वांमी घट भीतर पाया ॥ जेहां देषूं ते हों अवरन कांई ॥ घर घर मे अवना सी होय ॥७१॥ दोहा प्रथवी पांणी अगन मे ॥ वाय वनसपती रूप ॥ ब्रह्म फूल घर घट रह्यो ॥ ताको अलष अरूप ॥७२॥ सूर पचीसी नीत गणो सो नलता सूष होय ॥ याको याही छोडवे ॥ ओर न दुजा कोय ॥७३॥ देव अलषमे वरणव्यो ॥ रह्यो घरमे लपटाय ॥ नव नव भाते षेलतां ॥ कोयन दीसे सहाय ॥७४॥ घटघट मे मनरहि सदा जांणे वरला कोए ॥ एसकी करम वीरंबना ॥ ते समजाव्यो मोह ॥७५॥ अंनतका लना आवच्या ॥ की

।तहां नाचे अवनासी बाला॥ता सु जीन रहो चित लाय॥ लिग वासनास
वेजलाई॥ ६२॥ रांम चरण मिरा चित लागा॥ जामण मरण तणा न्नयन्ना
गा॥ सेवक ने राषो तम पासे दे दरशण अब का हा वि मासै॥ ६३॥ दोह
रा॥ अजरा अमरा छे सदा॥ अवनासी महाधंस॥ अलष अरूपी सर्व
गत तेही आतम रांम॥ ६४॥ स्वेयमे बसि द्ध नियनो॥ टां क्योन हे लगार॥
सर्वंग व्यापीर हो॥ कोटा न पावे पार॥ ६५॥ तासू ताली लागतां न्नमस
वी भरी जाय॥ वाको दरशण देष कर॥ जोते जोत मे लाय॥ ६६॥ चाल॥
॥तब साहिब सूं लागी ताली तेहां गोरष बेठा आसण वाली॥ नयस्बद
का परचाया पाया॥ तब मूरु ने न्नूवार घूराया॥ ६७॥ मांमे देव त्रीन्न गीसो
हे॥ देषत न्नवीयण का मंन मोहि॥ रांमरन्ना मइ पीना सारा॥ तब ही जोण

रह्योरे॥मलीयो सकुपरीवारोरे॥ सयम०॥८२॥घरणी घरमे घूसी रहीरे॥धे
न नविचाल्योरे लार॥लागेलाजन वलिअगून लेईरे॥कायाकीधिवलि
छारोरे॥सयम०८३॥अलप दिवसानापाकूणारे॥सकुकोए एसेसार॥तू
यमकीमाठेग्रेहोरे॥चेतनहिगमारोरे॥सयम०॥८४॥ज्योरामतबाजिग
रेरे॥चकूटेमांगोसार॥त्यो तुमए ए नवआवीयोरे॥विचरतांनलागेवा
रोरे॥सयम०॥८५॥ एमजांणीसमतागहोरे॥लोचमकरोरेलगार॥हुसामा
रगवलीपरहरोरे॥ निहस्येपामिसतूपारोरे॥सयम०८६॥लोक सहूसाधूक
हिरे॥मन मे करोरे विचार॥आगम आध्यातम मूषकहेरे॥हसायेसहीहारो
रे॥सयम०॥८७॥ कहेसुणबहुरु कररे॥परकासे एमाग॥ताते अचरज हो
य रह्योरे॥बोलणकोनही लागोरे॥सयम०८८॥मानव नवअतीदोहीलो

याते कुकम कीध ॥ आपे आप हि विनवे ॥ अब तुं पा ज्ञा तीध ॥ ७६ ॥ इ
नी सर पचीवी ॥ धन कारण दक्ष दिशि जमेरे ॥ नगणो सोळ स बार ॥ धरमथ
की अलगो रहेरे किम उतर सो वलि पारोरे ॥ सयम सूरमो तजोरे ममता
वली लोजोरे ॥ आले जव कांइ गमो ॥ ७७ ॥ आंकणी ॥ कपट करी धन मेलीयो
रे वांरी सकु परीवार ॥ जारे भम बकु विध नयोरे ॥ छांडे चाले वलि नारी
रे ॥ सयम० ॥ ७८ ॥ मेहल अटार घणा वीया ॥ पेहरावीय रिवार ॥ नर कतणा दुष
एकलोरे ॥ जोग वसी नीरधारारे ॥ सयम० ७९ जोवंन जर जब आवीयो ए
रमणी रंग [illegible] अपार ॥ कांमा रत वाह्यो फेरे रे ॥ जोवन वहे असरा
लोरे ॥ सयम० ८० ॥ अतिरजा लबधो स्वांन ज्योरे ॥ वमन करे रे आहार ॥ त्यो
तुम मन सुं गधिरस्योरे ॥ काण कीने मीने कालीकारोरे ॥ सयम० ८१ ॥
अंत समो जब आवीयोरे ॥ पोहनो हाथ पसार ॥ कोलाहल जब होइ

२५४

नहि क्रोध ।।श्र०५५।। झालमूलपात नहीं हे ।। फूलफला फल ना हो सीत उष्ण
ण देसे नांहि हो ।। नरिरह्यो त्रिलोक मांहि ।।श्र०५६।। गांम सिम अटवी नां
हि हो ।। नगर कोट नहि ठांम ।। पलपल मे रंग के करे हो ।। एसो मेरो आतमरा
म ।।श्र०५७।। पेर पूठ पग कर न हे हो ।। नेन नाक नहि कांन ।। तन्न गम न मु
ष इद्री नांहि हो ।। नहि कछु लेषन वांन ।।श्र०५८।। कीडी कुंजर पंषी नांहि हो
वद्याधर नहि देव ।। स्त्रीय पुरुष नपुसक नांहि हो ।। केणोपिर करुवा कीसे
व ।।श्र०५९।। अजर अमर अवीनासी अवगत ।। अलष अरूपी कलपान
मजाये ।। तीन लोक एक वाल अगरथी ।। तामे करी समाय ।।श्र०।।२०।। लष
तरूवा नांहि रोग सोक भय दुष नांहि आठो जाम ।। एसा देव नर जण देष्या
नमो नमो केवलराम ।।श्र०।।६१।। पारुपाणी जल जमी अकास ।। देसवि

रे॥ चोभो इ ड्रीरे रंग॥ परमजोत परमातमानू। ध्यांन करो मेंनसंगोरे॥ सयम
॥८३॥ कहेसूरो पंभितसुंणोरे॥ आगम करो प्रवेश॥ केवलवचन सोहांम
णोरे॥ हंसानो नही लेसेर॥ सयम० ॥८४॥ दोहा करमजीवने कथा क
हीतेतो छे मूरुमांहि धरम तणी गत ओर छै तेपण मूरु मां नही ॥८५॥ अगम
पंथ छे धरमनो॥ विरलाजांणे कोय॥ अबकह्म धरम अमालसुं॥ गत अ
वगत कह्मतोय॥८६॥ अथ धर्म धमू अध्यातम विनु क्यो पाईयहो॥
आतमरूप अनूप परम पुरष परदेरहे हो॥ क्यो करे लखु निजरूप॥
॥८७॥ आ कणी हे नितर बाहेर नाहि रहो॥ हेहे नांहे नांहे॥ एसो अवग
त आतमा हो॥ पूर रहो घर मांहि॥८८॥ अ० रगतपीत नि लोन हे हो
स्वेत स्याम नहि कोय॥ अध और अध मध्य को नहे हो॥ चलण वलण

मंनके हाथ सबे करतूती मनही थी होए नीरवांण ॥ अ० ८ ॥ मनही कौ माने
नहि हो ॥ तेनर जांणो चार ॥ तो को मनष [illegible] जनम सब नरफल ॥ परे न्न जन
मे वार ॥ अ० ९ ॥ संयम शील दान तप पूजा ॥ मन पाषे सब फीका ॥ मन व
स आंणी मार पोहचो ॥ मन सूं ही करो संतोष ॥ अ० ॥ १० ॥ अजराम पद
यो पाइयेहो ॥ आंकणी ॥ करता त्नरता त्नोगता हो ॥ घरवासी घरमा
हि ॥ गुरु प्रसाद तेमे पायो हो ॥ बाहिर देषत नाहि ॥ अजरा ॥ ११ ॥
धरमधमाल सू गायातां ॥ तरत मले भोरार ॥ मंन मांकेरु जे वस करे हो ॥ तो
मे दे हा सो प्यार ॥ अ० ॥ १२ ॥ सूर कहि मन कौ समझावो छोडी सब जंजाल
गमण आवागमण न्नेय त्नागे ॥ सुणो सद्गुरु बाल गोपाल ॥ अ० १३ ॥ अजरांम
रूप दयो पाई येहो ॥ इती धरमधमाल ॥ दोहरा ॥ साधवंदणा ॥ त्नागमत्र

दंसनांहि। नांमगोतनाहि। जातपांतकोय दिक्लदेशहूं नतकांये॥ अं०॥२॥
॥ याघरमे बूहैलैरूप अपारो॥ तातेलषे नहि वार॥ ते णे पणमाधवमेहल
त्रेम नआया॥ तीरथ फरयो बहुवार॥ ३॥ अं० अजरअमर पदकोपाइया
हो॥ आकणी॥ ॥मनसायर मनसीलेरहे॥ मनदांनो मनमेर॥ उछ
नीच धरमीअधरमी॥ तेसब मनके फेर॥ अं०॥४॥ मेन लोभी मन लालची
हो मनकायर मनसूर॥ कामक्रोधमनहीतेचलेहो॥ मन सुषदुषल
न्नर हैपूर॥ अं०॥५॥ मनदासी मन राधीका होय॥ मनमाधो मातेक॥ मनजोगी
मेन जोगीमेरा॥ करे जजनमांहि जंग॥ अं०॥६॥ नांहूलकीपला कालसू
राहो॥ परचंद चंदरुषीराय मनफेरत निरन्तेनयेहो॥ मन हाथी चक्क
गतजाये॥ अं०॥७॥ जीवमहाते अतलीबलजांणो ताके मनपरधांन॥

ण्यां हरषसो॥ कोएन आविजारोजी॥ चरण २१॥ पंचमाहाव्रत सुधांजे
धरि छो निघोइ ड्रीसगोजी॥ पंचसुमती मुंनीवर पगवे॥ त्रिरलूछे मन
रंगोजी॥ चरण २१॥ दातण स्नान तजिआवसककरिजी॥ सिहासेणव
णरागोजी॥ वस्त्र तजी॥ कहिये वांदु मुंनीवर एहवा:७॥ ॥ धीतभोजनमु
नीकेर॥ पाछेजलनोत्यागोजी॥ चरण॥२२॥ मूलअबाविसगुण मुंनीसो
भता॥ दशलक्षणीदीपतोजी॥ पंचाचार पाले मुंनीवर परवस्या क्रो
धादिक तजंतोजी॥ चरण २३॥ बार अनुप्रक्षा मुंनीवर मंनधरि॥ त्रणगु
पती वस्पआणोजी॥ [illegible]॥ सेहस अढार शीयल
सिरोमणी॥ चरण करणना जाणोजी॥ चरण॥२४॥ लष चोराशी जीवदया
तणा जाणेभेद वीचारोजी॥ सेहसपूरव लगे मूनिवर तेहां रहे॥ कारण
करे विहारोजी॥ चरण॥२५॥ पूजक नंदक सरष दुषसारीषा॥ काचरयणस

ध्यातमगाईयो। ज्यांनी कीयो वषांण।।मूढमति समझे नही।।ज्यो पांणी
पाषांण।।१४।।बगता सूता ता जवनया।। समज्यो न हैलव लेस।।ताक
रण च क्रुगत जम्यो।। करिते नव नव वेस।।१५।।वा परकेणी परनीस्तस्या
केसे कह्या जिणंद।। वनवासी मुनीवर कह्ना।।सूणसांमन आणंद।।१६।।
कहो केणी विध करणी करि।।किम करी पोहता पार।। कहो केणी विधकर
णी करी किम छोडी परनी सार।।१७।।अथ ढाल पंच वषि सुष विषसम जांण
यो जांणो।।अथीर संसारो जी।।जमड़ो नीत को।।शिर स्याधीफारे।। लेत नां
लागे वारो जी।।चरणे नमस्स स्याध।।सोहामणा।।१८।।नांम थकी नीस्तारो
जी दरसण दीठे पातक सवटले।। उतारे भव पारो जी।। चरण।।१९।।
गजरथ तुरंगम सझ परहस्या।।रमणी राज भंडारो जी।।अंग आभूषण छो

विगम लेतो। जांणे विषम ल्यूं॥ स्त्रीयां परिसा पेए। जस फाको जी॥ गया वरसी
हू म लेतो न व फरि॥ जीवत अथीर अैली को जी॥ चरणो॥ ३२॥ मास ग्री
याले झीणो वाय रो॥ शीतल घपरा रेतो जी॥ दुरबल देसे छु चे कां करा॥
सयम ऊपर हेतो जी॥ चरणो॥ ३३॥ नदी सर को ठे॥ मुंनी वर ध्यान करे॥ टा
ढे अस्त ग लेतो जी॥ सरोवर थी जे पातक सव टले॥ ध्यां न थकी न चे
लं तो जी॥ चरणो॥ ३४॥ हाड चरम नसां मांस रुधीर विना॥ मे लत एण ब
कृशा थयो जी॥ मृतक दा से जांणे अद बल्यु॥ न न ष सी ह न सा पो जी॥
चरणो॥ ३५॥ मा त्रा न ना ले कारण आकरी॥ अंग न पडे लू ड़ो लो जी॥ पर
बत मस्तक मूनि वर ध्यान करे॥ बेग आसण वालो जी॥ चरणो॥ ३६॥
ताती वेळू पाषाण बहू तपे॥ दाझे डुंगर देहो जी॥ सूरज सनमूख नैना सण करे

मधारोजी॥ अहनिद्राध्याये मुंनी वर आतमा॥ गुंण अनेक नेंकारो जी॥
॥ चरणो॥२६॥ स्रावणमास जोवरस्ये सरवडे॥ पाछे तरुयर टबके तो
जी॥ दरू दद्रा वेलावन्रा मावायरा॥ ध्यांनमगन धीर चंतो जी॥ च
रणो॥२७॥ आन्नगड केचमके विजली॥ मेहन बंधे धारोजी॥ रुछम
चाई कीरक दुखबरू॥ सहे परिसह न्नारोजी॥ चरणो २८॥ न्नेरवबोलेज
बूक फेकेरे॥ घूछ झुलाले सिहोजी॥ आसण वालि मुनीवर एकला॥
बेठा अचल अबीहोजी॥ चरणो २९॥ मोर केगाये मेहारूकेरे॥ छोमया
सबवे वहारोजी॥ मास सरूतु अणासण आचरी॥ नर वहे संयमन्नारोजी॥ चरणो ३०॥ दोषचेतालीसटाली पारणु॥ उन्नावरत अन्नाचोजी
नीरन्ना आहार तेपणाथे फेरो॥ महिमलमहि मासोजी॥ चरणो॥३१॥

ओ रुनेहतटक॥४४॥नगणोबेहुनन्नोणोज॥नगणेजातकूजात्निची
गतनामीणसो॥तास्रूकहिमायबाप॥४५॥गुरुवलतोमननगह गही बो
लेअमृतवांण॥जोपूछेतोसूणकहु॥मनमतधरजेकांण॥४६॥चौ
पई॥ आद् अनादीकाल एन्नुम्यो॥लहुचोरासीजोनेरम्यो॥अवरत
नेमीथ्यातेकरी॥तेहनोवासोमजोयेफरी॥४७॥स्वांमी अव्रतनेमी॥
थ्याते [illegible]नो सूकहिए स्वांमीकहोवात॥मीथ्यातकेहतां जूठीवात
रातदीनरातेकरितात॥४८॥पूदगलपूत्र कलत्रपरिवार॥षोटीवस्तउपर
मंनधार॥देवधरमगुरुषोटा गहि॥रातदीवन्नममतापरहरेहे॥४९॥
अव्रत केहतां आगरु न कोए॥पणपाष हरम लेनसोए॥पणपाषे को
एपरनवीलहि तपपाषे केम काया देहे॥५०॥नीयलविनानवसीझे
कोए॥ दयाविनामूगतनवहोय॥ पणबीनानूलोचरूगतफरयो॥

छोडा सगलोने होजी ॥ चरणो ॥ ३७ ॥ कंग सू काये होग बमी पमे । हइणो न
यण बंसेतोजी ॥ पुदगलजाणे मुनीवर पार कों ॥ आतम ध्यांन धरं तोजी
॥ चरणो ३८ ॥ एहवा मुनीवर नयणे नरषतां । वाधि पुन्य नीकारोजी ॥ आगम
पेष मुनीवर पाठवे ॥ आपे आप संधारोजी ॥ चरणो ३९ ॥ एहवे मारगजे
नर चालसे । तेहना सरसेका जोजी ॥ सूरपद वीतो निस्चे पामसे । पछे मूग
ती पूरी नराजोजी ॥ चरणो ॥ ४० ॥ दुहा ॥ एवं नवासी साधना लक्षण कस्या । विचा
र चोथेकालेजे हसे । सहीजोणो नीरधार ॥ ४१ ॥ सस्थांन से घण प्रथम क्षा
यक समकीत होय ॥ जथाख्यात जब आवसी । शिवपद लेसे सोय ॥ ४२ ॥
वलतू श्री गुरु सू कहि ॥ जगमे मायाजोर । काज आकाज हीन वूगणो । करू त
१५९ सोरासोर ॥ ४३ ॥ कोधीपणा धषतो रहे । न करे नेह हटक ॥ कोमीकेरे कारणे ॥ १५९

॥ वारवारशिषकेनूकह्यु॥ एहसंगतनोपारनलह्यु परधनमूसेमनु
उल्लास॥ पापीमोहनछोडेपासु॥ ५८॥ दोहा॥ मायाछायाएकहे॥ घटेवधे
छिनमांहि॥ एनकीसंगतजेलगे॥ तिनकोकहांसुषनांहे॥ ५९॥ एसमाय
केकारणे॥ चलीयारांमथूमांण॥ घटदरजाण॥ नातेपणचूक्या॥ जांण
तन्नयात्रजांण॥ ६०॥ मायापासीदारहे॥ रामनजनकोजांण॥ चो न
रासीमेफिरवे॥ नीहस्येकरस्येहांण॥ ६१॥ मायात्रतिनठोरहे॥ जिसो
गणीकाराग॥ तरतएककोछोडदे॥ उरोसूरहेलाग॥ ६२॥ जेमायासु
गरुरस्या॥ ताकोसोन्नेरेराम॥ ज्योमाषीम्लेछमगमी॥ त्योवहूजण
वंदोकीम॥ ६३॥ अगाहोजांमनकस्योरहे॥ मायासूनरनार॥ जोगीना
वत्रथागजल॥ तिकेमपांमेपार॥ [illegible] मायावेलविषतणी॥ जेसीनमरा
वेल॥ मूलथकानवकातरे॥ तामपंकसेहेल॥ ६४॥ अहनीशमायामेमग

तेहनो वायो बक्रूपरवस्यो ॥५१॥ नगमेधम्म ध्यांन नीरीत । तेहनो वा
ह्यो । करे अनीत ॥ रात दीवस ते धर्मतोरहि ॥ पूरव ले अन्नाण से फरे
॥५२॥ पांचे थावर जंगम जके ॥ हिंसा करतां न धूजे तके ॥ पूंन्यवंत प्राणी
जग जेह ॥ एणी हिंसाथी नीवर्तेह ॥५३॥ पंचइंद्री वस नहीं जेहने ॥ छकूं मे
नवी कलतेह ने ॥ एह घर जेहने वैरंभ न होय ॥ बारे अविरत जाणो सो
ए ॥५४॥ तेहकारण एण उपर प्रीत ॥ रात दीवस करे अनीत ॥ एकेंसो
डगबाजीके जीव ॥ मोहमध एणे पीयो अतीव ॥५५॥ अनंत सकत आ
देखे सही ॥ कांमक्रोधमे जाये वही ॥ धनरो मा करतो दीनरात ॥ देयात
णी न वजांणे वात ॥५६॥ अवरत मी थ्याचार मे वास ॥ इसो पूरव नो अ
१६० भ्यास ॥ तेहनो वाह्यो दक्रूदसा फीरे ॥ आणाचार करतो न वमेरे ॥५७॥ १६०

सकी जगत दास हे ताश्च ॥७५॥ पुसमाया के कारणे जले करा बेसीश्च ॥ तेम्ह
रूष केम करि सके ॥ हरनजन कौ रीश्च ॥७६॥ जे माया सूरा च के ॥ मन मेरा
षे बीज के तो ताथे बरन्तजा ॥ के जंगल मे रोऊ ॥७७॥ जेहां आपा तेहां आपदा
जेहां सासो तेहां सोग ॥ सदगुरु विनु न्ना जे नही ॥ दो नजा लमे रोग ॥७८॥
जे माया मे मगन नर ॥ जग मे करे अपाल ॥ आतमरस जाणे नही ॥ ते कुल
मांहि कलाल ॥७९॥ मास पाष उपवाश्च करे ॥ समता वण नर कोये ॥ आतम
हेत जाणे नहे ॥ नीरस्प गलासोय ॥८०॥ देवधरम गुरु ग्रंथ मत रते
न जगत मे च्यार ॥ साचे लिजे परषकर ॥ झूठे दीजे मार ॥८१॥ कुगूरु सुगुरु
किम पाश्चषो ॥ शीष्य पूछे गुरु राय ॥ कुगुरु हे सामे मगन ॥ जीन्ह्या मांहि वही
जाये ॥८२॥ दोमहुनीयां कुं दूष देह ॥ नेरा षेमन नमोहि ॥ नेह कारण देषू

नताकोवणसेकाज॥दीवाजोतपतंगज्यो॥पडेगमुदाबाज॥६६॥मया
सेतीमनगमै॥रामजनजनलेईकाट॥मायाऐसीपापणीजवमेपाले बाट
॥६७॥मायामूलसंसारनोफेलरहीचिहुंपास॥नरकनीगोदलेइच
लेनीचीगतमैवास॥६८॥मायाकेरैपूरमैचक्रसहूचल्योसंसार॥
कलजगनुकारणएसु॥कोयनपोहछेपार॥६९॥मायाधोवणजग
तकी॥धरमरंगसबधायो॥पापपोतपरगटकरी॥गईकमाइखोए॥
७०॥मायातरुवरमोरको॥सबजोगवेठाछांय॥धरमधकावीठ
हकावायो॥रुणझावोमूरमांहि॥७१॥मायावावीजगतकी॥नवनव
करेउपाव॥मूरखविचारोक्याकरे॥जथजावेततजाय॥७२॥लोभ
मूलछेपापनु॥दूषनमूलसनेह॥मूलअजीरणव्याधको॥मरणमूल १६१
१६१ छेदेह॥७३॥जेआसाकेदासनर तेनरजगतकेदास॥आसादासीजा

नीच नही कोय ॥९०॥ रहि उदासी रातदीन ॥ दूनीयाकार ज्ञापीका ॥ रांमन्न
जन कौ उधर्म ॥ ते तारण ते हतीका ॥९१॥ सकन मक्रूरत नव गण जोतक
नीमत न लगार ॥ चूरण गोली को नहि ॥ ते साचा अणगार ॥९२॥ चलेन दे
जणावे नहे ॥ साथ न मान न गो मांन ॥ न दिवो चे अणस्रूत ॥ ते गुरु जहा
जस मांन ॥९३॥ क्रूकेहनो कोमूरु न हे ॥ जीष्य समवान हुा कोए ॥ जेथ
नावे तथ हीर हे ॥ साचा सदगुरू सोए ॥९४॥ बीजे पोहर न गत करे ॥ नव
ठारे कछू वार ॥ जो मती म्हे रे निद्रा ॥ न वलोपे जिन कार ॥९५॥ न वकलपी ॥
छूके नही ॥ न करे पुदगल सार ॥ ध्यांन मगन मे रहि सदा ॥ ते छूटे निरधार ॥
९६॥ जो नाजणावे वेणामे ॥ चले न देस वे साघु ॥ न करे आसा के हनी ॥ ते घाले
सेवबाघ ॥९७॥ निकथा पण बाचे नहि ॥ करे न सुण लगार ॥ करम जीवनी

दिक्षाफेरे ते नर सूगुरू नो हि ॥८३॥ चेलाचेली कारणे ॥ करेवी कलप
मन मांहि ॥ दिन वचन जे नितलवे ॥ ते नर सूगुरू नो हि ॥८४॥ पोस्तक पा
नर वस्त ने पर ॥ आहिनीस्पर हेषुसाल ॥ मोरु मोरु मेष करि ॥ तेणे परत
घर मांनी पाल ॥८५॥ ताकारणे रुगमो करे लरे फेरे परदेश ॥ नरेनको
ईतारिस के ॥ नेणे फोकट लीधो वेश ॥८६॥ जीन्या इन्द्री वश पुन हे ॥
नर मा व्या नर नार ॥ आप अवस्था भोगवे ॥ किम पर सेस्मार ॥८७॥ कार
दिक्रू देशि नर कतनव गया ॥ नगणे सांज सवार ॥ सूधो मारग सम
जे न हे ॥ ते नर स हि गमार ॥८८॥ गइ वस्त सो चेन हो ॥ आगम चिंतन
होय ॥ वरावी सम्पोर हि सदा ॥ ते जग मांहि सुगुरू सोए ॥८९॥ रायरं
१६२ के निरधन धनि ॥ समदूप सम कर होय ॥ पूजे कनेद कमा चमणी ॥ उच १६२

सेवे नही ॥ नकरे कोयेआ पाल ॥ इडी जीते तेजती ॥ एम बोलिबा लगो
पाल ॥ ६ ॥ संतोषी केवले सदा ॥ समता सहीत सूजांण ॥ वस्या वीस स्यार
हिसदा ते पोहचे नीरवांण ॥ ७ ॥ आगम वांणी उचरे ॥ ओर न बोलि बोल
स्यापरूपे ॥ रात दिन हिसाये रहि अबोल ॥ ८ ॥ एक नगत चूके नहि ॥ पा
छे जलनो त्याग ॥ आतम हेत जांणे पदी ॥ ते समरु जिनमाग ॥ ९ ॥ परनें द्वे
दूषन वगमे ॥ हास्यादि न करंत ॥ संका कोड्ढा कोन हे ॥ जी त्यो ते सीव मत
॥ १० ॥ एहवे मारग जे चले ते नर जांणो साध ॥ एहथी बिजा जे नरा ते सव जांणो
बाध ॥ ११ ॥ ॥ २५११ इती श्री कर्मविपाक सूत्र संपूर्णं संवत १८२३ ॥
वर्षे आसो वदि ७ सौमवारे ॥ लषतं ॥ सागवाड़ा नगरे ॥ तलाटी कुबरा लजी
पठाणार्थी ॥ शुभं भवतु ॥ श्लोक ३२५० छे ॥ ॥

कथाकहि तेहपोहचे न्नव पार॥८५॥ करेस्वाद नचरमको। बचक
नकरकोकोए॥ न्नेला दरवन दोयंकेरा॥ जगजोगी चूर सोय॥८६॥
ऊबक धबक सोन विचले॥ मेलन मेह लेदूर॥ अंतर जेल परकजो ते ३
साध जगसूर॥२७०५ सीतऊह वूरषातणा॥ सहइ परिस्याजेह॥ वेरा
गी दिठ आसणी॥ साचा तपसी तेह॥२७०१ न्नेयजी त्यामदको नहे ग्यां
नमगन निसदी न्ना॥ आपसमणा सकूगणो॥ तरसो विसवा वीस॥
२॥ एक केवल न्ना विदेयेतेहनां सरस्ये काज आपन्नजन थी निस्तरे
ग्यांनक्रीयामे बाज्ञा॥३॥ चले नरषी साधूते॥ ज्ञील सरोमणी सार॥
रागे नर मणी नरषजे लेयन सरन्ना आहार॥४॥ क्रोध लोन्न मूल न हे
॥ न करे नेक विवाद॥ राग द्वेष जो धास बल जे जीते साध॥५॥ करतअरत

१६३ १६३

त

१३६

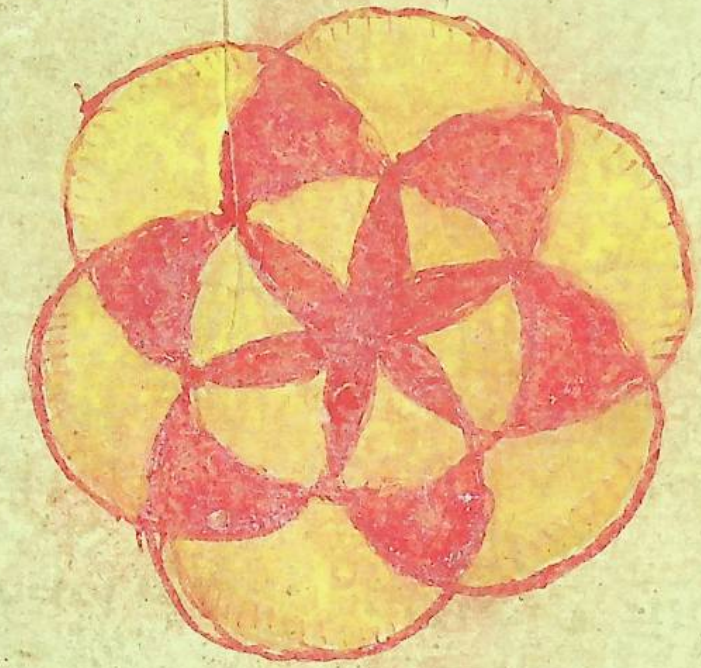

१३६